सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 190, नई दिल्ली, बुधवार 17 सितंबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सबसे कठिन काम है कार्य करने का निर्णय लेना, बाकी सब केवल दृढ़ता है...

03 युवाओं के लिए प्रेरक संदेश: राष्ट्र निर्माण में आपकी भूमिका

06 रैंक से परे देखो

08 झारखंड अधिवक्ताओं को पेंशन देने वाला देश का प्रथम राज्य: हेमंत सोरेन

क्या भारत देश में विधि विधान से बनाए गए किसी पद पर भर्ती के लिए भर्ती नियम को मानने के लिए आयुक्त परिवहन विभाग दिल्ली बाध्य नहीं

माननीय सुप्रीम कोर्ट, उपराज्यपाल दिल्ली, उच्च न्यायालय दिल्ली, दिल्ली सरकार आखिर क्यों है चुप

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन आयुक्त द्वारा अपने पद की शक्ति का मनमाना प्रयोग करते हुए "**माननीय सुप्रीम कोर्ट, सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार, माननीय उच्च न्यायालय दिल्ली, माननीय कैट, कानून न्याय एवं निधि विभाग दिल्ली सरकार के द्वारा जारी दिशा निर्देशों, राजपत्र अधिसूचना के साथ मोटर वाहन निरीक्षक (एमवीआई) के पद के लिए भर्ती नियम (आर.आर)**" को पूर्ण रूप से दरकिनार कर सभी तकनीकी पदों पर अपनी इच्छानुसार गैर तकनीकी अधिकारियों को नियुक्त कर दिया।

आपकी जानकारी हेतु बता दें एमवीआई पद के स्थान और भर्ती के लिए ऑटोमोबाइल या मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा या डिग्री, ड्राइविंग लाइसेंस, और कुछ अनुभव शामिल होते हैं।

योग्यताएं (उदाहरण)

शैक्षिक योग्यता: किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से ऑटोमोबाइल या मैकेनिकल इंजीनियरिंग में तीन साल का डिप्लोमा या समकक्ष डिग्री।

ड्राइविंग लाइसेंस: गियर वाली मोटरसाइकिल और हल्के मोटर वाहन चलाने के लिए अधिकृत ड्राइविंग लाइसेंस आवश्यक है।

कंप्यूटर ज्ञान: कंप्यूटर का ज्ञान होना चाहिए।

अनुभव: कुछ राज्यों में, मोटर वाहन निरीक्षक या सहायक मोटर वाहन निरीक्षक के पद पर कम से कम एक वर्ष का कार्य अनुभव आवश्यक हो सकता है।

दिल्ली भारत की राजधानी में परिवहन आयुक्त द्वारा भर्ती नियमों एवं अन्य सभी दिशा निर्देशों को दरकिनार करते हुए दिल्ली परिवहन विभाग में डीटीओ के पदों पर गैर तकनीकी अधिकारियों को नियुक्त कर दिया गया है। आयुक्त की नजर में डीटीओ के पदों पर आसीन होने के लिए किसी भी तकनीकी ज्ञान या अनुभव की आवश्यकता नहीं है कोई भी व्यक्ति डीटीओ के पदों पर आसीन किया जा सकता है और उन्होंने ऐसा कर भी दिखाया। दिल्ली परिवहन विभाग के 70% से अधिक तकनीकी पदों पर गैर तकनीकी अधिकारी कार्य कर रहे हैं।

दिल्ली में पंजीकृत होने वाले वाहनों एवं उनमें होने वाले किसी भी प्रकार के तकनीकी बदलाव की जांच तकनीकी अधिकारी से नहीं अपितु गैर तकनीकी अधिकारी द्वारा करवाई जा रही हैं

1. वाहनों में लगने वाली सीएनजी किट की जांच,
2. ई रिक्शा की फिटनेस,
3. वाहनों को चलने के लिए अनिवार्य परमिट जारी करना,
4. पुराने वाहन की जांच कर उसके नंबर को नए वाहन पर लगाने के आदेश जारी करना,
5. वाहनों के स्वामित्व को बदलने का कार्य,
6. पुराने व्यवसायिक वाहनों को निजी वाहनों में परिवर्तित करने के आदेश,
7. वाहनों का पंजीकरण,

इत्यादि सभी कार्य जो भर्ती नियमों (आर.आर.)के अंतर्गत एक तकनीकी अधिकारी द्वारा किए जाने निश्चित है को गैर तकनीकी अधिकारियों से करवाया जा रहा है।

परिवहन आयुक्त को दिल्ली में जनता की सुरक्षा से अधिक अपनी निजी हठ का महत्व है इसलिए उनके द्वारा तकनीकी पदों पर सर्विस रुल, माननीय सुप्रीम कोर्ट, माननीय उच्च न्यायालय दिल्ली, माननीय कैट एवम्-स्कानून, न्याय और विधायी मामलों का विभाग, दिल्ली सरकार द्वारा दिए गए दिशा निर्देश को दरकिनार कर तकनीकी पदों पर गैर तकनीकी अधिकारियों को नियुक्त कर दिया है।

परिवहन आयुक्त, दिल्ली सरकार और उपराज्यपाल दिल्ली का क्या यह मानना है की दिल्ली में पंजीकृत होने वाले वाहनों की जांच किसी तकनीकी अधिकारी से करवाने कि आवश्यकता ही नहीं है

क्या दिल्ली परिवहन विभाग अब भारत देश के अन्य राज्यों की तरह तकनीकी विभाग नहीं अपितु गैर तकनीकी विभाग घोषित किया जा चुका है जहां वाहनों की तकनीकी जांच की आवश्यकता नहीं ?

दिल्ली परिवहन निगम के अस्थाई कर्मचारियों का शौषण और जनता की सुरक्षा से खुला खिड़वाड़ कर रही कंपनियां

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली की लाइफ लाइन कहे जाने वाली गोल्ड मैडलिस्ट सरकारी संस्था दिल्ली परिवहन निगम के अस्थाई (कॉन्ट्रेक्ट) कर्मचारियों का भूतपूर्व सरकारों व दिल्ली परिवहन निगम की मैनेजमेंट के द्वारा खुलेआम शौषण किया गया जिस कारण से दिल्ली परिवहन निगम के बहुत से अस्थाई कॉन्ट्रेक्ट कर्मचारियों के परिवार अंधकार में जा चुके हैं अब भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली में सत्ताधारी पार्टी की वर्तमान ट्रिपल इंजन सरकार जो भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली की 1.5 करोड़ जनता का प्रतिनिधित्व कर रही है उन माननीय प्रतिनिधियों से D.T.C के अस्थाई (कॉन्ट्रेक्ट) कर्मचारी प्रार्थना करते हैं कि इस महंगाई के दौर में दिल्ली परिवहन निगम की मैनेजमेंट ने अपने लाइसेंस धारी चालको वह संवाहको को लेबर एक्ट में डालकर मिनिमम वेज के तहत (नो वर्क्स नो पेय) के हिसाब से

दिहाड़ी मजदूरी की तर्ज पर पैसा दिया जाता है जिस के कारण अस्थाई कॉन्ट्रेक्ट कर्मचारी अपना और अपने परिवार का पालन पोषण करने में अयस्मर्थ होने के कारण अस्थाई (कॉन्ट्रेक्ट) कर्मचारी वह उन सभी के परिवार बदहाली का जीवन व्यतीत करने पर मजबुर है और अपना आत्मसम्मान बचाने के लिए आत्महत्या करने पर मजबुर है और यह केवल अस्थाई कॉन्ट्रेक्ट कर्मचारियों के द्वारा की आत्महत्या नहीं है यह भारतवर्ष की जुडिशरी भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली की सरकार वह दिल्ली परिवहन निगम की मैनेजमेंट की हत्या है क्यों कि जो काम स्थाई (परमानेंट)कर्मचारी कर रहे हैं वही काम अस्थाई (कॉन्ट्रेक्ट)कर्मचारी भी कर रहे हैं लेकिन समान काम का समान वेतन नहीं दिया जा रहा है यह भारतवर्ष के संविधान की खुलेआम अवमानना है और ना ही कोई स्थाई (परमानेंट) करने की प्रक्रिया लागू की गई है और सालो साल चलने वाली सरकारी संस्था में कॉन्ट्रेक्ट प्रथा लागू कर भारतवर्ष के संविधान की खुलेआम अवमानना की जा रही है क्या हमारे भारतवर्ष का चौथा स्तम्भ कहे जाने वाला ऑनलाइन मीडिया प्रिंट मिडिया डिजिटल मीडिया टीवी मिडिया इस सच्चाई की आवाज को उठाने में असमर्थ हैं।

सभी कांटेक्ट कर्मचारी 17 सितंबर 2025 को सुबह 10:00 बजे अतुल ग्रोवर रोड जंतर मंतर पर आकर कृपया भारतवर्ष की जनता को स्पष्टीकरण देने का कष्ट करें ताकि भारतवर्ष की जनता को मिडिया की सच्चाई का पता चल सके

जय जय श्री राम जय जय श्री राम
जनसेवक
आप का अपना
पंकज शर्मा

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत के सदस्य बनने के लिए नीचे दिए गए गूगल फार्म पर क्लिक करें और भरकर जमा करे, पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट (पंजीकृत अंडर सेक्शन 60), नीति आयोग भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त, एमएसएमई में पंजीकृत
https://forms.gle/VEThcFgMcknGFc1u9

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND SOCIAL WELFARE ALLIED TRUST REGT.

MEMBERSHIP FORM FOR TOLWA TRUST

transportvisheshcontent@gmail.com Switch account

The name, email, and photo associated with your Google account will be recorded when you upload files and submit this form

* Indicates required question

How you got aware about TOLWA trust *

- Social Media
- News Paper
- Personal connection
- Youtube
- Social Function/ RTO/friends/family

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय:- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा-डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

विशेष सूचना
नवरात्रि में माताराणी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
● दशहरे के दूसरे दिन
● दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
● स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड
स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
संपर्क सूत्र : इंदु राजपूत, मोबाइल : 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से

गरबा महोत्सव में विशेष अपील

हमारी रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है—
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

आप अपने घर से लाएँ और दान करें:
● पुराने कपड़े
● पुराने कंबल
● पुराने जूते-चप्पल
● बच्चों के लिए बैग
● किताबें

आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है

स्थान : रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

इंदु राजपूत – 9210210071,
अभिषेक राजपूत 83928 02013,
पिंकी कुंडू 7053533169

इंदिरा एकादशी व्रत कथा

भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति से भाव विह्वल होकर अर्जुन ने कहा– ₹हे प्रभु ! अब आप कृपा कर आश्विन माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी की कथा को कहिए। इस एकादशी का क्या नाम है तथा इसका व्रत करने से कौन–सा फल मिलता है। कृपा कर विधानपूर्वक कहिए।₹

भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा - ₹हे धनुर्धर ! आश्विन माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम इन्दिरा है। इस एकादशी का व्रत करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। नरक में गए हुए पितरों का उद्धार हो जाता है। हे अर्जुन ! इस एकादशी की कथा के श्रवण मात्र से ही मनुष्य को अनंत फल की प्राप्ति होती है। मैं यह कथा सुनाता हूँ, तुम ध्यानपूर्वक श्रवण करो-

सतयुग में महिष्मती नाम की नगरी में इन्द्रसेन नाम का एक प्रतापी राजा राज्य करता था। वह पुत्र, पौत्र, धन-धान्य आदि से पूर्ण था। उसके शत्रु सदैव उससे भयभीत रहते थे। एक दिन राजा अपनी राज्य सभा में सुखपूर्वक बैठा था कि महर्षि नारद वहां आए। नारदजी को देखकर राजा आसन से उठा, प्रणाम करके उन्हें आदर सहित आसन दिया। तब महर्षि नारद ने कहा- 'हे राजन ! आपके राज्य में सब कुशल से तो हैं ? मैं आपकी धर्मपरायणता देखकर अत्यंत प्रसन्न हूँ।'

राजा ने कहा - 'हे देवऋषि ! आपकी कृपा से मेरे राज्य में सब -कुशलपूर्वक हैं तथा आपकी कृपा से मेरे सभी यज्ञ कर्म आदि सफल हो गए हैं। हे महर्षि अब आप कृपा कर यह बताएं कि आपका यहां आगमन किस प्रयोजन से हुआ है ? मैं आपकी क्या सेवा करूं ?'

महर्षि नारद ने कहा - 'हे नृपोत्तम ! मुझे एक महान विस्मय हो रहा है कि एक बार जब मैं ब्रह्मलोक से यमलोक गया था, तब मैंने यमराज की सभा में तुम्हारे पिता को बैठे देखा। तुम्हारे पिता महान ज्ञानी, दानी तथा धर्मात्मा थे, मगर एकादशी के व्रत के बिगड़ जाने के कारण यह यमलोक को गए हैं। तुम्हारे पिता ने तुम्हारे लिए एक संदेश भेजा है।'

राजा ने उत्सुकता से पूछा - 'क्या संदेश है महर्षि ? कृपा कर यथाशीघ्र कहें।'

राजन तुम्हारे पिता ने कहा है - 'महर्षि ! आप मेरे पुत्र इन्द्रसेन, जो कि महिष्मती नगरी का राजा है, के पास जाकर एक संदेश देने की कृपा करें कि मेरे किसी पूर्व जन्म के बुरे कर्म के कारण ही मुझे यह लोक मिला है। यदि मेरा पुत्र आश्विन माह के कृष्ण पक्ष की इन्दिरा एकादशी का व्रत करे और उस व्रत के फल को मुझे दे दे तो मेरी मुक्ति हो जाए। मैं भी इस लोक से छूटकर स्वर्गलोक में वास करूं।'

इन्द्रसेन को अपने पिता के यमलोक में पड़े होने की बात सुनकर महान दुख हुआ और उसने नारद से कहा - 'हे नारदजी ! यह तो बड़े दुख का समाचार है कि मेरे पिता यमलोक में पड़े हैं। मैं उनकी मुक्ति का उपाय अवश्य करूंगा। आप मुझे इन्दिरा एकादशी व्रत का विधान बताने की कृपा करें।'

नारदजी ने कहा - 'हे राजन ! आश्विन माह के कृष्ण पक्ष की दशमी के दिन प्रातःकाल श्रद्धापूर्वक स्नान करना चाहिए। इसके उपरांत दोपहर को भी स्नान करना चाहिए। उस समय जल से निकलकर श्रद्धापूर्वक पितरों का श्राद्ध करें और उस दिन एक समय भोजन करें और रात्रि को पृथ्वी पर शयन करें। इसके दूसरे दिन अर्थात एकादशी के दिन नित्यकर्मों से निवृत्त होकर स्नानादि के उपरांत भक्तिपूर्वक व्रत को धारण करें और इस प्रकार संकल्प करें - 'मैं आज निराहार रहूँगा और सभी भोगों का त्याग कर दूंगा। इसके उपरांत अगले दिन भोजन करूंगा। हे ईश्वर ! आप मेरी रक्षा करने वाले हैं। आप मेरे उपवास को सम्पूर्ण कराइए।'

इस प्रकार आचरण करके दोपहर को सालिगरामजी की प्रतिमा को स्थापित करें और ब्राह्मण को बुलाकर भोजन कराएं तथा दक्षिणा दें।

भोजन का कुछ हिस्सा गाय को अवश्य दें और भगवान विष्णु का धूप, नैवेद्य आदि से पूजन करें तथा रात्रि को जागरण करें। तदुपरांत द्वादशी के दिन मौन रहकर बंधु-बांधवों सहित भोजन करें। हे राजन ! यह इन्दिरा एकादशी के व्रत की विधि है। यदि तुम आलस्य त्यागकर इस एकादशी के व्रत को करोगे तो तुम्हारे पिता अवश्य ही स्वर्ग के अधिकारी बन जाएंगे।'

नारदजी राजा को सब विधान समझाकर आलोप हो गए। राजा ने इन्दिरा एकादशी के आने पर उसका विधानपूर्वक व्रत किया। बंधु-बांधवो सहित इस व्रत के करने से आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई और राजा के पिता यमलोक से रथ पर चढ़कर स्वर्ग को चले गए।

इस एकादशी के प्रभाव से राजा इन्द्रसेन भी इहलोक में सुख भोगकर अंत में स्वर्गलोक को गया।

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा- हे सखा ! यह मैंने तुम्हारे सामने इन्दिरा एकादशी के माहात्म्य का वर्णन किया है। इस कथा के पढ़ने व सुनने मात्र से ही सभी पापों का शमन हो जाता है और अंत में मनुष्य स्वर्गलोक का अधिकारी बनता है।₹

कथा-सार

मनुष्य जो भी प्रण करे, उसे चाहिए कि वह उसको तन-मन-धन से पूरा करें। किसी भी कार्य का प्रण करके उसे तोड़ना नहीं चाहिए।

स्वर्ण प्राशन

यह एक आयुर्वेदिक औषधि है जो स्वर्ण भस्म, वचा, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, गाय का घी, शहद आदि * औषधियों के मिश्रण से बनाई जाती है।

आयुर्वेद में इसका सेवन जन्म के पहले दिन से लेकर 16 वर्ष तक के बच्चों को प्रतिदिन सेवन कराने के लिए बताया है।

बच्चों के लिए आयुर्वेद की यह औषधि प्रतिदिन प्राकृतिक टीकाकरण का कार्य करती है। किसी कारण से यदि प्रतिदिन इसका सेवन नहीं करा सकते तो कम से कम पुष्य नक्षत्र को तो जरूर अपने बच्चों को इसका सेवन कराना चाहिए।

आयुर्वेद में लिखा है कि

सुवर्णप्राशन हि एतत मेधाग्निबलवर्धनम्।
आयुष्यं मंगलमं पुण्यं वृष्यं ग्रहापहम्।।
मासात् परममेधावी व्याधिभिर्न च धृष्यते।
षडभिर्मासैः श्रुतधरः सुवर्णप्राशनाद् भवेत ॥

काश्यपसंहिता - सूत्रस्थानम्।

अर्थात सुवर्णप्राशन मेधा (बुद्धि), अग्नि (पाचन अग्नि) और बल बढ़ाने वाला है। यह आयुष्यप्रद, कल्याणकारक, पुण्यकारक, वृष्य, वर्ण्य (शरीर के वर्णको तेजस्वी बनाने वाला) और ग्रहपीडा को दूर करनेवाला है।सुवर्णप्राशन के नित्य सेवन से बालक एक मास में मेधायुक्त बनता है और बालक की भिन्न भिन्न रोगो से रक्षा होती है। वह छह मास में श्रुतधर (सुना हुआ सब याद रखनेवाला) बनता है, अर्थात उसकी स्मरणशक्ति अतिशय बढती है।

स्वर्ण प्राशन के लाभ

1. स्वर्ण भस्म के एंटी आक्सिडेंट ,एंटी एजिंग, एंटी कैंसर , इम्युनिटि बूस्टर आदि * ढेर सारे लाभ होते हैं तथा यह बच्चों में पूर्णतः दुष्प्रभाव रहित है।
2. पाचन तन्त्र को मजबूत करता है।
3. मेधा बुद्धि, स्मृति, एकाग्रचित्तता का विकास करता है, IQ लेवल बढ़ता है।
4. बच्चो में होने वाले Developmental Delay(देर से विकास) में विशेष उपयोगी तथा बच्चों को बार बार सर्दी-जुकाम होना, बुखार,दस्त आदि वायरल रोगों से बचाता है।
5. सुनने, देखने एवं बोलने सम्बन्धित क्रियाओं का विकास करता है।
6. सुदृढ़ अस्थि (हड्डियों) व मांसपेशियों के विकास में सहायक है।
7. एंटीबायोटिक से होने वाले दुष्परिणामो से भी बचाता है।
8. सामान्य व असामान्य शिशुओं में शारीरिक एवं मानसिक वृद्धि करता है।
9. आचार्य वाग्भट्ट (अष्टांग हृदय) के अनुसार नियमित स्वर्ण प्राशन करने वाले शिशु पर *विष (जहर) का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
10. ऑटिसम, सेरेब्रल पल्सी, हाइपर एक्टिव बच्चों (ADHD) में विशेष लाभ मिलता है।

दक्षिणेश्वर हनुमान जी – पुरी श्रीमंदिर के दिव्य रक्षक

जय श्रीराम ! जय श्रीजगन्नाथ !

पुरी के पावन श्रीजगन्नाथ मंदिर परिसर में स्थित यह मंदिर दक्षिण दिशा में है, इसलिए बजरंगबली को ₹दक्षिणेश्वर₹ कहा जाता है – दक्षिण दिशा के रक्षक !

विशेष मान्यता: प्राचीन काल में समुद्र की गरज इतनी तीव्र थी कि मंदिर के भीतर आरती और मंत्रोच्चार की ध्वनि दब जाती थी। भगवान श्रीजगन्नाथ ने तब हनुमान जी को आज्ञा दी, और वे दक्षिण दिशा में विराजमान होकर समुद्र की गर्जना को रोकने लगे।

आज भी समुद्र पास होते हुए भी मंदिर में दिव्य शांति बनी रहती है – यह बजरंगबली की कृपा है।

वे रात्रिकालीन प्रहरी हैं, रथयात्रा के समय अदृश्य रूप से सुरक्षा में तत्पर और हर भक्त को श्रीहरि तक पहुंचाने वाले दूत और सेतु हैं।

जहाँ श्रीराम, वहाँ हनुमान। जहाँ श्रीजगन्नाथ, वहाँ दक्षिणेश्वर !

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर !

श्रीमंदिर के जागृत सेनापति

विचारणीय प्रश्न

१. जिस सम्राट के नाम के आगे समूचे विश्व के इतिहासकार "महान" लिखते हैं...

२. जिस सम्राट का राजचिन्ह अशोकचक्र भारत अपने झंडे में गौरव से सजाता है...

३. जिस सम्राट के चारमुखी सिंह स्तंभ को हमारा देश राष्ट्रीय प्रतीक मानकर "सत्यमेव जयते" को अंगीकार करता है...

४. जिस सम्राट के नाम पर सेना का सर्वोच्च शौर्य सम्मान "अशोक चक्र" दिया जाता है...

५. जिस सम्राट से पहले और बाद में कभी कोई ऐसा भारतीय शासक नहीं हुआ, जिसने अखंड भारत (आज का नेपाल, बांग्लादेश, पूरा भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान) जैसे विराट भूभाग पर एकछत्र शासन किया हो...

६. जिसकी शासन-व्यवस्था को विद्वान और इतिहासकार भारतीय इतिहास का स्वर्णिम काल स्वीकारते हैं...

७. जिसके राज में भारत विश्वगुरु था, "सोने की चिड़िया" कहलाता था, प्रजा संतुष्ट व सुखी थी, और समाज भेदभाव से मुक्त था...

८. जिसके काल में ग्रांड ट्रंक रोड सहित राजमार्ग बने, मार्गों के किनारे वृक्ष लगाए गए, सरायें बनीं, मनुष्यों के साथ-साथ पशुओं के लिए भी प्रथम बार चिकित्सालय खोले गए, तथा जीवों की हत्या पर रोक लगाई गई...ऐसे महान सम्राट अशोक की जयंती भारत में क्यों नहीं मनाई जाती ? न कोई उत्सव, न कोई अवकाश... विडंबना यह है कि, जिन्हें यह पर्व मनाना चाहिए, वे इतिहास जानते ही नहीं, और जो जानते हैं वे मानना नहीं चाहते !

विचार के लिए कुछ प्रश्न :

1. "जो जीता वही सिकंदर" क्यों कहा गया, जबकि सिकंदर की सेना ने चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रभाव को देखकर युद्ध से ही मना कर दिया था ? क्या यह सत्य नहीं कि सेल्युकस की पुत्री का विवाह भी चन्द्रगुप्त से मित्रता स्वरूप हुआ ?
2. महाराणा प्रताप जैसे वीर को इतिहासकार "महान" नहीं कहते, पर अकबर को "महान" बना देते हैं—क्यों ? जबकि महाराणा ने अकेले दम पर अकबर की लाखों की सेना को झुका दिया था।
3. महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा निर्मित जंतर-मंतर, हवामहल आदि उपलब्धियों को भुलाकर शाहजहाँ को "वास्तु प्रेमी" सम्राट क्यों प्रचारित किया गया ?
4. छत्रपति शिवाजी महाराज जैसे राष्ट्रनायक को उपेक्षित कर, औरंगजेब जैसे क्रूर शासक पर अधिक चर्चा क्यों की जाती है ?
5. स्वामी विवेकानंद और आचार्य चाणक्य जैसा तेजस्वी चिंतन होते हुए भी, विदेशी व्यक्तियों को हमारे इतिहास पर क्यों थोप दिया गया ?
6. तेजोमहालय (ताजमहल), लालकोट (लाल किला), देव महल (बुलन्द दरवाजा), मिहिरावली वेधशाला (कुतुब मीनार) – इनका असली स्वरूप और इतिहास कैसे बदला गया ?
7. राष्ट्रीय गीत "वन्दे मातरम्" की जगह जन गण मन को वरीयता क्यों दी गयी ?
8. भगवान राम और श्रीकृष्ण को ऐतिहासिक/सांस्कृतिक विमर्श से धीरे-धीरे विलुप्त क्यों कर दिया गया ?
9. श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या को ही विवादित कैसे और कब घोषित कर दिया गया ?

निष्कर्षः हमारे शत्रु केवल बाबर, गजनवी या तैमूरलंग जैसे बाहरी आक्रांता ही नहीं थे बल्कि आज के सफेदपोश छद्म-धर्मनिरपेक्ष लोग भी हमारी असली धरोहर के उतने ही बड़े विरोधी हैं।

धर्मो रक्षति रक्षितः

अलग हुए बसेरे...!

हम मिला करते थे सुबह-सवेरे,
छूट गया सब अलग हुए बसेरे।
यादों में आने से क्यों? कतराते,
हमें गलत-फहमी हुई ये बताते।

अगर ऐसा हुआ तभी समझाते,
एक बार हमें कहते मान जाते।
हमारे बीच स्नेह का एक बंधन,
दोनों ही महसूस करते स्पन्दन।

रिश्ता बिल्कुल न था स्वार्थवश,
न जाने हम क्योंकर हुए विवश।
वक़्त की हम पर पड़ी ऐसे मार,
किस्मत में हमारे इतना हैं प्यार।

संजय एम तराणेकर

यह सच की ताकत है कि झूठ बोलने वाले को भी सच ही पसंद होता है। जो हमारी भावनाओं को समझ कर भी हमें तकलीफ देता हो, वो कभी हमारा अपना नहीं हो सकता।

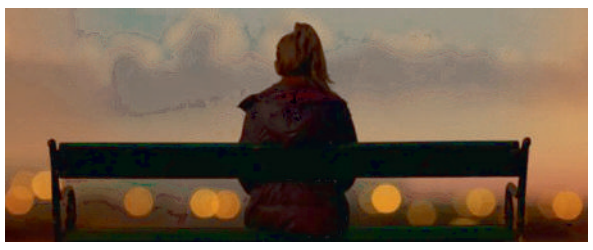

मन की सच्चाई/अच्छाई कभी व्यर्थ नहीं जाती। यह वो पूजा है जिसकी खोज ईश्वर स्वयं करते है जब हम दूसरों के लिए अच्छी भावना रखते हैं।

विनम्रता/सहनशीलता ही मानव जीवन का सबसे बड़ा सामर्थ्य है। ध्यान रहे कि सामर्थ्य का अर्थ यह नहीं है कि हम दूसरों को कितना झुका सकते है अपितु यह है कि हम स्वयं कितने संवेदनशील हैं। समझ/सामर्थ्य आते ही व्यक्ति के भीतर सम्मान का भाव भी जागृत हो जाता है। सदैव इस बात के लिए प्रयासरत रहें कि हम सम्मान पाने की लालसा रखने वाले नहीं, सम्मान देने वाले बन सकें। हमारे बल का प्रयोग किसी को गिराने के लिए नहीं, अपितु सबके/दूसरों के सम्मान की रक्षा हेतु हो। भला ऐसा सामर्थ्य किस काम का, जो हमारी नम्रता का हरण एवं हमारे अहंकार को पुष्ट करता हो। वास्तव में जिस के पास धैर्य है वो इंसान जीवन में सब कुछ हासिल कर सकता है।

गुडीमल्लम मंदिर...

भारत का वो रहस्यमयी स्थान, जहाँ हज़ारों लीटर पानी शिवलिंग पर चढ़ाने के बाद पलभर में गायब हो जाता है। कोई ड्रेन नहीं, कोई नाली नहीं... पानी जाता कहाँ है? और यही नहीं — हर 60 साल में यहाँ अचानक बाढ़ आती है, जो कुछ ही मिनटों में गायब हो जाती है। विज्ञान आज तक इस रहस्य का जवाब नहीं दे पाया। क्या ये 12,000 साल पुराना शिवलिंग है या सिर्फ़ 2,600 साल? क्या ये पत्थर पृथ्वी का है ही नहीं?

गुडीमल्लम के अनसुलझे राज़ — पानी का गायब होना, भूमिगत रास्ते, सूरज की किरणों का परफेक्ट अलाइनमेंट और वो बातें जो एएसआई (ASI) भी मान चुका है कि साइंस के बस से बाहर हैं।

प्रोस्टेट (पौरुष ग्रन्थि) की सफाई

अखरोट के आकार की ग्रन्थि है जो केवल पुरुषो में होती है

महीने में 2 बार करे, फिर 3 महीने में 2 बार

प्रोस्टेट के कार्य-
वीर्यनिर्माण में सहायता करता है
प्रोस्टेट में गड़बड़ी होने के कारण-
खड़े होकर मूत्र करना
वीर्य वेग रोकना
मूत्र अधिक समय तक रोकना
उम्र का बढ़ना
संक्रमण
वृषण में चोट
पानी की कमी
असुरक्षित संभोग

प्रोस्टेट खराब होने पर लक्षण-

पेवलिक दर्द
वृषण दर्द
मूत्र के समय दर्द
वीर्यपात के समय दर्द
अंडकोश थैली और पीठ के बीच दर्द
प्रोस्टेट कैंसर
बार बार पेशाब आना
मूत्र गति में बदलाव
बार बार वीर्य स्खलन

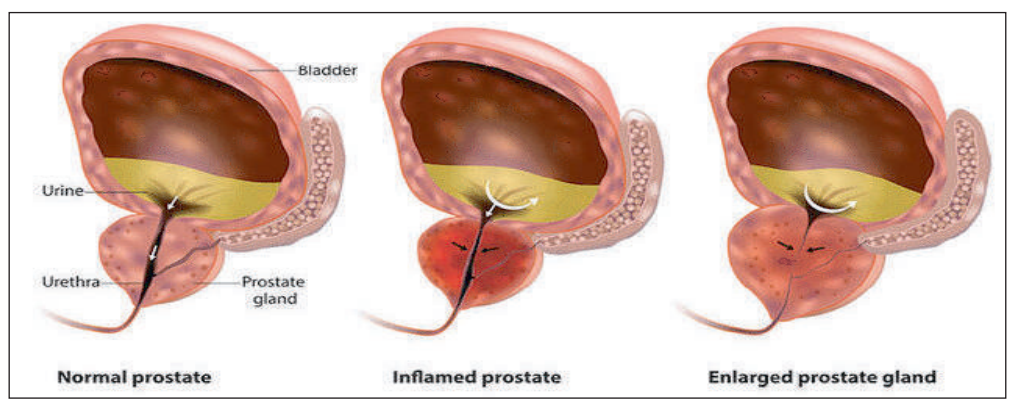

प्रोस्टेट क्लीन से पहले लीवर क्लीन कर ले तो और अच्छा है

उपाय 1:-

आवश्यक समान-

भुट्टे के बाल ताजा- 500 ग्राम ,पानी 1 लीटर

.....या

भुट्टे के बाल सूखे- 50 ग्राम, पानी 1 लीटर

भुट्टे के बाल को बिना धुले ही सुखाकर रख ले,खराब नहीं होते

प्रोस्टेट क्लीन करने का तरीका-

एक लीटर पानी मे भुट्टे के बालों को लेकर 10 मिनट तक उबाले, अब इसे निथारकर किसी दूसरे ब्रर्तन में कर ले, अब उबले हुए भुट्टे के बालों को फिर से ताजा पानी मे डालकर 10 मिनट उबाले, फिर पानी निथारकर पहले वाले ब्रर्तन में कर ले, यह प्रक्रिया 3-4 बार करनी होगी, अब भुट्टे के बालो को फेंक दे और जिस बर्तन में पानी इकठ्ठा हुआ है, उसे ठंडा होने दे, जब यह ठंडा हो जाये तो फिर से निथारकर धीरे से किसी दूसरे बर्तन में कर ले, नीचे का कचड़ा नहीं जाना चाहिए, अब इसे 1-2 लीटर की मात्रा में दिन में 3-4 बार पिये (बाकी सामग्री का काढ़ा भी ऐसेही बनाया जाता है)

आप इसे फ्रिज में भी स्टोर कर सकते है दोबारा गुनगुना करके भी पी सकते है

उपाय 2:-

आवश्यक समान-

सेव का सिरका - 2 चम्मच
शहद - 1 चम्मच
पानी - 1 गिलास गुनगुना

पानी मे दोनो को मिलाकर दिन में 2 बार रोज पिये

अन्य उपायः-

रोज 50 ग्राम अंकुरित कद्दू के बीज खायें
विटामिन C अधिक खायें
अलसी का सेवन करे।

युवाओं के लिए प्रेरक संदेश: राष्ट्र निर्माण में आपकी भूमिका

हमारे महान भारत की पहचान केवल उसकी संस्कृति, इतिहास या परंपराओं से नहीं, बल्कि उसके युवाओं की ऊर्जा, उत्साह और कार्यक्षमता से होती है। जब मन निराश होता है, तब यही शब्द हमें जगाते हैं – "नर हो न निराश करो मन को, कुछ काम करो कुछ काम करो।" यह केवल एक पंक्ति नहीं, बल्कि युवाओं के लिए एक जीवन मंत्र है। आज जरूरत है कि हर युवा अपने अंदर छिपे सामर्थ्य को पहचाने और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाए।

भारत का सपना है – विज्ञान, ज्ञान और संस्कृति के बल पर एक बार फिर विश्व गुरु बनना। इस लक्ष्य को पाने का रास्ता युवाओं के हाथों से होकर जाता है। आप ही वो शक्ति हैं जो समाज को नई दिशा दे सकते हैं। नई तकनीक, नई सोच और नया कौशल अपनाकर हम विश्व में भारत का नाम रोशन कर सकते हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि केवल बड़े सपनों की बात करें, बल्कि "Think Global, Act Local" की भावना के साथ अपने आसपास के समाज में बदलाव लाना होगा।

आज का समय AI और डिजिटल तकनीकों का है। इस दौर में नए कौशल सीखना आवश्यक है—डेटा विश्लेषण, डिज़ाइन थिंकिंग, डिजिटल मार्केटिंग, साइबर सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य सेवाएँ, नेतृत्व क्षमता और संचार जैसे कौशल युवाओं को भविष्य के लिए तैयार कर रहे हैं। कौशल ही आत्मनिर्भरता और सामाजिक योगदान की पहचान है। जो युवा अपने क्षेत्र की समस्याओं को समझते हैं, वे समाधान भी खोज सकते हैं।

इसी दिशा में Global Confederation of NGOs जैसे प्लेटफॉर्म युवाओं को प्रेरित कर रहे हैं। यह

संस्था विभिन्न सामाजिक संगठनों और स्वयंसेवकों का वैश्विक नेटवर्क बनाकर उन्हें जोड़ती है। यहाँ हर युवा अपने कौशल, समय और उत्साह से राष्ट्रहित में काम कर सकता है। चाहे पर्यावरण संरक्षण हो, शिक्षा हो, स्वास्थ्य अभियान हो या महिला सशक्तिकरण—हर क्षेत्र में युवाओं के योगदान की आवश्यकता है। यह नेटवर्क उन्हें मंच देता है, दिशा देता है और सामूहिक प्रयास से बड़ा बदलाव संभव बनाता है।

आइए, आज संकल्प लें कि हम निराशा को अपने मन में जगह नहीं देंगे। हम अपने कौशल को निखारेंगे, समाज में सक्रिय रहेंगे और राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देंगे। हर छोटा कदम, हर अच्छी पहल मिलकर भारत को विश्व गुरु बनाने की राह पर आगे बढ़ाएगी। आप ही वो युवा शक्ति हैं जो भारत को गौरवशाली भविष्य की ओर ले जा सकती है।

चलो आगे बढ़ें – कुछ काम करें, समाज के लिए, राष्ट्र के लिए, और अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए।

'आप' सरकार की तरह भाजपा भी जागरूकता अभियान चलाए, ताकि मौसमी बीमारियों पर काबू पाया जा सके- अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम में आम आदमी पार्टी के नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने दिल्ली में बढ़ते मलेरिया, डेंगू और चिकनगुनिया जैसी मौसमी बीमारियों को लेकर भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने एमसीडी द्वारा जारी साप्ताहिक रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि भाजपा सरकार को दिल्लीवालों की सेहत की कोई फिक्र नहीं है। मौसमी बीमारियों की रोकथाम के लिए ठोस कदम नहीं उठाने की वजह से मलेरिया के केस तेजी से बढ़ रहे हैं। दिल्ली में मलेरिया के केस ने पांच साल के रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। पिछले एक सप्ताह में 33 नए केस आए हैं। हमारा सुझाव है कि भाजपा सरकार भी 'आप' सरकार की तरह जागरूकता अभियान चलाए, ताकि मौसमी बीमारियों पर काबू पाया जा सके।

अंकुश नारंग ने कहा कि जब से दिल्ली में भाजपा की सरकार आई है, मलेरिया, चिकनगुनिया और डेंगू को रोकने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। जब अरविंद केजरीवाल दिल्ली के मुख्यमंत्री थे, तब 10 हफ्ते तक हर रविवार को सुबह 10 बजे 10 मिनट का एक अभियान चलता था। इस अभियान का मकसद डेंगू के प्रति जागरूकता फैलाना था। लोगों को पता चलता था कि मलेरिया, चिकनगुनिया और डेंगू का मौसम आ चुका है। इस वजह से सभी को सतर्क रहना होगा और जरूरी कदम उठाने होंगे। उस दौरान लोग अपने घरों में पानी की जांच करते थे।

उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी जून से लगातार कह रही है कि मलेरिया, चिकनगुनिया और डेंगू की साप्ताहिक रिपोर्ट आनी चाहिए। अगर कोई महामारी फैल रही हो, तो उसकी रोजाना रिपोर्ट आनी चाहिए, न कि साप्ताहिक। लेकिन एमसीडी कोई ठोस कदम नहीं उठा रही है, ताकि ये बीमारियां कम हो सकें। केवल जनता को जागरूक करके ही इन बीमारियों को नियंत्रित किया जा सकता है। जब तक जनता खुद हिस्सा नहीं लेगी, अपनी छत, कूलर, टंकियां और टायरों की जांच नहीं करेगी, तब तक मच्छरों का लार्वा खत्म नहीं होगा। दवा का छिड़काव करवाना जरूरी है, लेकिन इसके लिए जनता को शामिल करना होगा।

अंकुश नारंग ने कहा कि पिछले दो हफ्तों से मलेरिया के मामले पिछले पांच सालों में सबसे ज्यादा हैं। इस हफ्ते मामलों की संख्या 297 पहुंच गई है, जबकि पिछले हफ्ते यह संख्या 264 थी। यानी 33 नए मामले बढ़ गए। इस रिपोर्ट की सटीकता पर भी संदेह है। भाजपा हमेशा आंकड़े दबाने की कोशिश करती है। सभी जगहों से सही आंकड़े इकट्ठा नहीं किए जाते। इस बार मई-जून से ही फॉगिंग शुरू करवानी पड़ी, जबकि पहले सितंबर, अक्टूबर या नवंबर में फॉगिंग होती थी। ऐसा इसलिए, क्योंकि इस साल मलेरिया, चिकनगुनिया और डेंगू के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं।

उन्होंने अधिकारियों द्वारा ड्रोन से दवाइयों का छिड़काव करने की बात पर कहा कि यह बात हास्यास्पद है। ये रेलवे ट्रैक के आसपास दवा छिड़कने की बात करते हैं, लेकिन वहां तो झुग्गियां उजाड़ दी गई हैं। फिर वहां दवा किसके लिए छिड़की जा रही है? दिल्ली में कई जगह पानी भरा हुआ है, कई घरों में बाढ़ की वजह से मच्छर और बढ़ रहे हैं, लेकिन इसे नियंत्रित करने में सरकार नाकाम है। इसके अलावा, एमसीडी के डीबीसी और एमटीएस कर्मचारी 29 सितंबर से अनिश्चितकालीन हड़ताल पर जाने वाले हैं। भाजपा को शासन चलाना नहीं आता। दिल्ली की जनता को मलेरिया, चिकनगुनिया और डेंगू से सुरक्षित रखने के लिए उनके पास कोई योजना नहीं है।

अंकुश नारंग ने कहा कि मेरा सुझाव है कि एक ठोस योजना बनानी चाहिए। मलेरिया, चिकनगुनिया और डेंगू के खिलाफ स्पष्ट कदम उठाए जाने चाहिए। दिल्ली की जनता, विभिन्न आरडब्ल्यूए और मार्केट एसोसिएशंस को शामिल करना चाहिए, ताकि जागरूकता अभियान चलाया जा सके। सभी पार्षदों को, चाहे वे किसी भी पार्टी से हों, इस अभियान में शामिल करना चाहिए। कोई भी पार्षद नहीं चाहता कि उसके क्षेत्र में ये बीमारियां फैलें। लेकिन भाजपा के पास कोई ठोस योजना नहीं है। भाजपा की कथनी और करनी में जमीन-आसमान का अंतर है। वे ड्रोन से दवा छिड़कने की बात करते हैं, लेकिन क्या मच्छर मर रहे हैं? इस बात पर भी संदेह है कि एमसीडी द्वारा इस्तेमाल होने वाला रसायन क्या इतना प्रभावी है कि मच्छर मर सकें?

प्रेम- पच्चीसा (भाग 26)

राजेन्द्र रंजन गायकवाड़
सेवानिवृत्त जेल अधीक्षक
बिलासपुर,छत्तीसगढ़

रोहन और उनकी संस्था का प्रयास सराहनीय है जो प्रत्येक शनिवार गांव जाकर ग्रामीण विकास से जुड़ी समस्याओं को सुनते हैं और समाधान तलाशते हैं। भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में जन सामान्य की मुख्य परेशानियां गरीबी, बेरोजगारी, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, शिक्षा का अभाव, पानी और बिजली की समस्या, कृषि उत्पादकता में कमी, तथा नशे की लत (जैसे तंबाकू, शराब) आदि हैं। इनके लिए यथासंभव समाधान के उपाय रोहन और उनकी टीम बताती है, सरकारी योजनाओं, स्थानीय प्रयासों और सामुदायिक भागीदारी पर आधारित हैं।

गॉव में एक पीपल पेड़ के गहने छाँव में बैठक होती है जिस में सरपंच और उनके पाँच भी सम्मिलित होते हैं। सबसे पहले रोहन बताते हैं कि ग्रामीण बुनियादी ढांचे का विकास हेतु गांवों में सड़क, बिजली और पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए सभी संबधित विभागों से पत्राचार करना होगा। जिस से जल जीवन मिशन के तहत पेयजल सुविधा बढ़ाई जा सकती है। स्थानीय पंचायतों के साथ मिलकर सरकारी फंडिंग के लिए सरपंच आवेदन करें, जैसे प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना इससे परिवहन और बाजार पहुंच मार्ग आसान होंगे।

माया किसानों को कृषि और आजीविका में सुधार संबंधी बातें समझाती है कि कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए आधुनिक बीज, उर्वरक और सिंचाई तकनीकों का प्रचार करें। किसानों को समुचित प्रशिक्षण दें, स्वयं सहायता समूह (SHG) बनाएं, और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के तहत कौशल विकास कार्यक्रम चलाएं। इससे रोजगार बढ़ेगा और पलायन रुकेगा। महिलाओं को सशक्त बनाने पर विशेष ध्यान दें, क्योंकि ग्रामीण विकास में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है।

डॉ सुधा जी ने स्वास्थ्य और स्वच्छता को लेकर उपस्थित समूह को सचेत किया और बाटाया कि नशे की लत (तंबाकू, गुटखा, शराब) और स्वास्थ्य समस्याओं का हल आदमी अपनी आदतों में सुधार और आत्म – नियन्त्रण से कर सकते हैं। उन्होंने सभी को सलाह दि कि आयुष्मान भारत योजना के तहत स्वास्थ्य कार्ड बनवाएं, सफाई अभियान (स्वच्छ भारत मिशन) चलाएं, और गांव में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की मांग करें। मलेरिया जैसी बीमारियों के लिए मच्छरदानी लगाएं।

मालती जी, शिक्षा और कौशल विकास के लिए प्रेरित कर शिक्षा की कमी दूर करने और युवाओं में प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रवेश करने की सलाह देती है ताकि बेरोजगारी दूर हो इसके गांव में जागरूकता लाने के लिए युवाओं को प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर, सरकारी स्कूलों में सुधार हेतु जिला शिक्षा अधिकारी और जिलाधीश के पास आवेदन भेजती हैं और कौशल विकास मंत्रालय की योजनाओं (जैसे स्किल इंडिया) से जुडने के साथ साथ ऑनलाइन शिक्षा संसाधनों का उपयोग करने का मार्गदर्शन सभी को दिया जाता हैं।

अंत में रोहन समझाते हैं कि आर्थिक तंगी, बेरोजगारी आज की मुख्य समस्या है, विशेषकर युवाओं में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) के तहत काम के साथ, छोटे उद्योग (जैसे हैंडीक्राफ्ट, पशुपालन) शुरू करने के लिए ऋण सुविधा मिल सकती है। सोशल मीडिया की लत से बचाव के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाने हेतु रोहन की टीम सरकारी अधिकारियों से संपर्क कर योजनाओं का लाभ उठाने ले सतत पत्राचार करती है।

धीरे - धीरे गाँव में विकास की चमक देखकर स्थानीय विधायक रामलाल जी का दौरा होता है ,,,

(भाग 27)

शहर की सड़कों पर जल उठी चिता देखकर भी मौन है जिम्मेदार?

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

विकास के स्वप्नों में शहर हमारा आगे बढ़ रहा है, पर जिम्मेदार लोगों को इस बात का घमंड है, हम सब यहां कर रहे हैं। लेकिन जब कोई घटना या हादसा होता है तो शासन प्रशासन सब लीपापोती में लगकर अपने आप को पाक-साफ साबित करने में लग जाते हैं।

इन्दौर महानगर में सभी जगह सत्ता के तारणहार बने साहबों का कब्जा है। वहीं विपक्ष के नेता अपने आप में ही गुम हो चुके हैं। ऐसे में जनता पस्त है यह मस्त उनका दुख दर्द व तकलीफो पर विराम कैसे लगेगा। इन्दौर के शिक्षक नगर चौराहे पर मौत की दावत लेकर नो एंट्री में गलत साईट घुसा ट्रक ने कई परिवारों को इतना बड़ा दर्द दिया है जिसके कारण उनके आंखों के आंसु कभी भी खत्म नहीं होने वाले हैं। फिर भी हमारे शहर के जनप्रतिनिधिगण, नेताओं की टीम सिर्फ चेहरा दिखाकर इति श्री ना कर ने की आदी क्यों हो गई है। राजनीति वाली तो खबर नहीं है यहां मानवीय मूल्यों का गिरते स्तर की बात है। तीन लोगों की मौत और कई घायलों का सवाल है। नशें में धुर्त टक्कर मरता हुआ बेलगाम नो एंट्री में बढ़ता हुआ एक बाइक चालक को उस ट्रक के टक्कर मारी और वहां बाईक सवार उस के नीचे जा घुसा और उस ट्रक में आग लग गई। वहां व्यक्ति सड़क पर जली हुई अवस्था में जिंदा ही जल गया।

सड़क पर जल उठी उसकी चिता को देखकर जिम्मेदार मौन है ? शहर में पुलिस प्रशासन या यातायात पुलिस जवानों की संख्या कम हैं जिससे व्यवस्था नहीं हो पाती। पर उनको इतना उलझा दिया जाता है कि वहां तो टारगेट पूरा करने के लिए ही चालन बनने में लगे रहते हैं। पुलिस चैकिंग के नाम पर आंखों देखी चीजों की अनदेखी कर देते है। हेलमेट रोक-टोक के लिए पुलिस व्यस्त हैं तो ध्यान कैसे रखेंगी। सवाल तो बहुत है ज़वाब ना जाने कब आयेंगे। कल की घटना के बाद सोशल मीडिया व अन्य जगह देखी गई खबरों से और सुबह अखबार में खबरें पढ़ने के बाद मन दु:खी हैं। इस में एक सकारात्मक खबर यहां भी आई के एक कांस्टेबल ट्रैफिक पुलिस पंकज यादव और दो अन्य लोगों ने मानवीय सरोकार को बचाने हेतु समसामयिक समय में अपना सहयोग प्रदान किया। उन्हीं की वजह से नशें में सुध-बुध खो बेठे वाहन चालक ट्रक को रोका गया। उन लोगों की सराहना मुख्यमंत्री मोहन यादव जी ने भी की है । पर 3 लोगों की मौत और उन घायलों का क्या कसूर था, जो उन लोगों ने इतना भयावह मंजर देखा। 16 सितंबर 2025 की यह शाम जो काली रात नहीं काल बन दौड़ रही थी उस रोड़ पर जिससे शहरवासियों में डर व खौफ पैदा कर दिया। विकास उन्नति पर भी व्यवस्था चाक-चौबंद क्यों नहीं होती है? शहर में जब कोई नेता मंत्री या अन्य राष्ट्रीय नेता आदि आते हैं जब पुलिस प्रशासन व यातायात व्यवस्था सटिक व उत्कृष्ट होती है। पर आमजन के लिए ढील पोल जो खोल रहे हैं व्यवस्था की पोल वाली इस घटनाक्रम ने बहुत सारे सवालों को जन्म दे दिया है। खुली आंखो वालें जवाबदेही जिम्मेदार का यहां मौन दुखत है, इस घटनाक्रम में इसमें इन बेकसूर आम जनता का क्या कसूर था ?

स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग़ इन्दौर

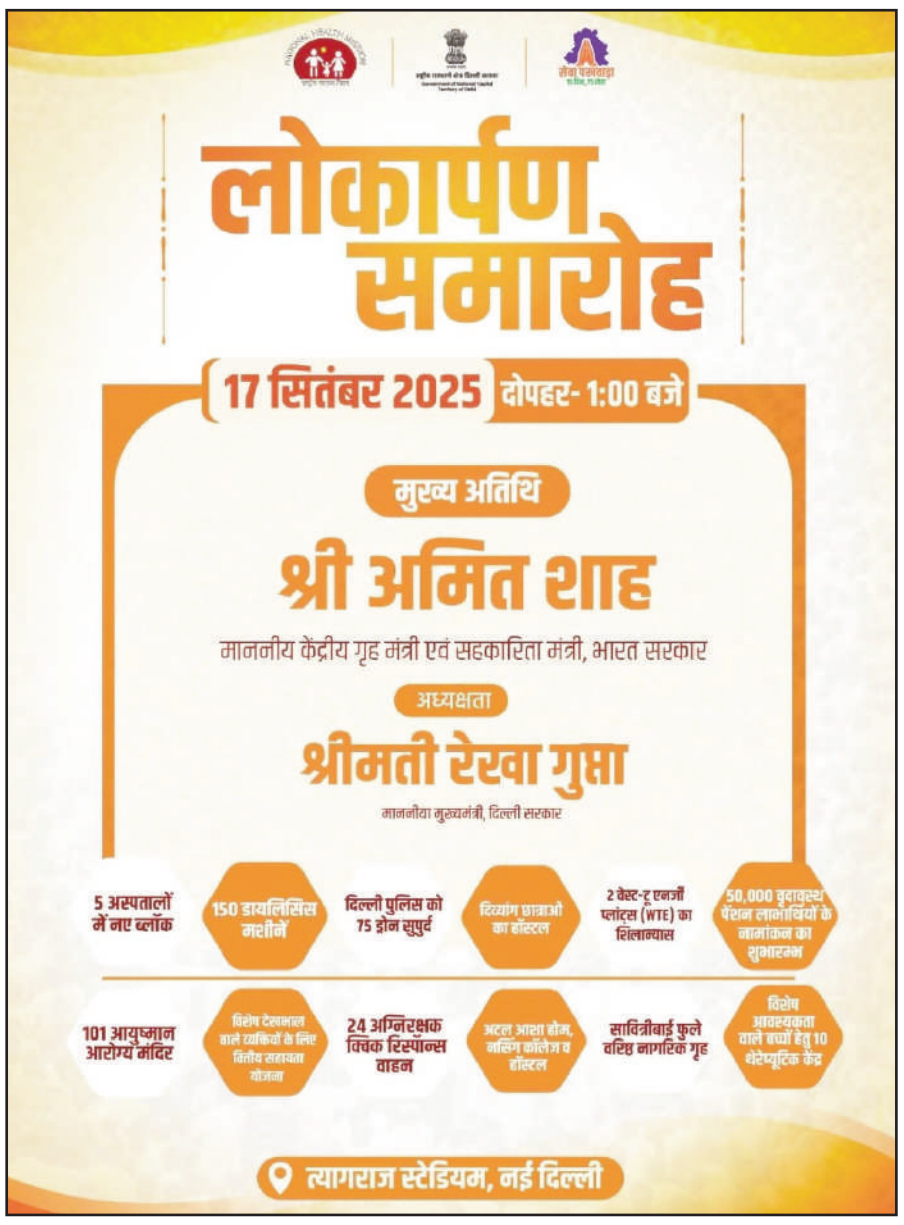

दस्तक ने प्राथमिक विद्यालय के 32 विद्यार्थियों को किया चश्मों का वितरण

मुख्य संवाददाता

दिल्ली 16 सितम्बर: डॉ. अम्बेडकर सोसायटी फार थाट्स, एक्शन्स एण्ड कंसियसनेस ने सोहन सिंह सेवा न्यास के सहयोग से नगर निगम प्राथमिक विद्यालय - ब्लॉक 16, ब्लॉक 28 एवं ब्लॉक 27 (हिन्दी) त्रिलोक पुरी, दिल्ली के 32 विद्यार्थियों को निःशुल्क चश्मों का वितरण किया।

दस्तक ने अपने केन्द्र प्रथम तल, सारिपुत्र बुद्ध विहार, ब्लॉक 36, त्रिलोक पुरी, दिल्ली पर शनिवार 13 सितम्बर, 2025 को निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया था, जिसमें नेत्र, मधुमेह एवं दांतों की जान की गई थी।

शिविर में प्राथमिक विद्यालय के 115 विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों ने भाग लिया जिनमें से 32 विद्यार्थियों की आंखें कमजोर पाई गईं उन्हें आज चश्मे उपलब्ध कराए गए।

शिविर के सफल आयोजन एवं सहयोग के लिए सोहन सिंह सेवा न्यास, विद्यालय 16 की प्राचार्या शिखा जिन्दल, अध्यापिका भन्ने बैरवा, विद्यालय 28 के प्राचार्य विजय जायड़ा, विद्यालय 27 (हिन्दी) की प्राचार्या पुष्पा तोलिया अध्यापिका कौसर जहाँ, रेनुका टम्टा व दस्तक के उपाध्यक्ष विशु कोहली, महामंत्री मनोज कुमार सोलानी, मंत्री राज कुमार, कोषाध्यक्ष योगेश कुमार प्रबंध समिति सदस्य दीपक इसरानी, कुंती देवी, रेनू संगत, एल.एस. हरित एवं सदस्य मंजू कुमारी व कुसुम सोलानी का आभार व्यक्त किया।

कॉन्ट्रैक्ट मैरिज का नया ट्विस्ट! स्टार प्लस ला रहा है 'माना के हम यार नहीं' संग रिश्तों की नई कहानी

मुख्य संवाददाता

स्टार प्लस अपने दर्शकों के लिए अपने शो माना के हम यार नहीं के साथ एक नई और ताज़ा कहानी लेकर आ रहा है। इस शो में मंजीत मक्कड़, कृष्णा का रोल निभा रहे हैं, दिव्या पाटिल शो में खुशी का रोल निभाते नजर आने वाली हैं। शो में दोनों की ज़िंदगियाँ एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं, लेकिन किस्मत उन्हें मिलवा देती है। जहाँ खुशी मज़बूत और जिम्मेदार लड़की है, वहीं कृष्णा अपनापन और सादगी से भरे हुए हैं। दोनों मिलकर एक ऐसी कहानी बनाते हैं, जिसमें ढेर सारी भावनाएँ, मोड़ और नए रिश्ते देखने को मिलेंगे। हाल ही में आए प्रोमो में हमें खुशी और कृष्णा की दुनिया की झलक देखने मिलती है। खुशी एक ऐसी लड़की है जो अपने बीमार पिता का सहारा बनने के लिए कपड़े प्रेस करके गुज़ारा करती है। अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए वो एक बड़ा और अनोखा फैसला करते हुए कॉन्ट्रैक्ट ब्राइड (कॉन्ट्रैक्ट वाली दुल्हन) बनने के लिए इंटरव्यू देती है। वहीं दूसरी तरफ, कृष्णा को ऐसे इंसान के रूप में दिखाया गया है जो आसानी से हर किरदार में ढल जाता है, चाहे डॉक्टर हो, पुलिस वाला या अब दूल्हे की भूमिका। उनकी पहली मुलाकात कोर्टरूम में होती है, जिसे एक वकील ने तय किया है, जहां दोनों एक कॉन्ट्रैक्ट मैरिज की शर्तों से बंध जाते हैं। खुशी के लिए यह कदम प्यार नहीं बल्कि जीने का सहारा है, जबकि कृष्णा का मस्तमौला अंदाज और चार्म इस रिश्ते में एक नया रंग भर देती हैं।

"शरद ऋतु, सौंदर्य और समृद्धि का मौसम"

डॉ. मुश्ताक अहमद,

शरद ऋतु वर्षा के बाद सितंबर से नवंबर तक विस्तृत होती है। यह ऋतु न तो अधिक गर्मी का बोझ ढोती है और न ही सर्दियों की कठोरता का। प्रकृति इस समय अपने सबसे मधुर और सौम्य रूप में दिखाई देती है। नीला आकाश, चारों ओर छाई हरियाली और हवा का मंद झोंका, सब मिलकर जीवन को ताजगी और नव ऊर्जा से भर देते हैं। जब वर्षा ऋतु विदा लेती है, तब शरद ऋतु की कोमल छाया धरती पर उतरती है। पेड़ों के पत्ते सुनहरे और लाल रंगों में रंग जाते हैं, मानो प्रकृति ने स्वयं को नया श्रृंगार दिया हो। खेतों में नई बुआई के बाद हरियाली की कालीन बिछ जाती है। नदियां और तालाब भी इस समय साफ और उजले दिखते हैं। शरद पूर्णिमा की रात में जब चांद अपनी पूरी कलाओं के साथ खिलता है, तब उसकी चांदनी धरती को चांदी की आभा से ढक देती है, जो लोककथाओं और कविताओं में बार-बार गाई जाती है। यह ऋतु किसानों के लिए विशेष महत्व रखती है। वर्षा के बाद की उर्वरक मिट्टी में किसान नई फसलों की बुआई करते हैं। धान, गन्ना, और सरसों जैसी फसलें इसी समय आशा और परिश्रम के साथ खेतों में जीवन लेने लगती हैं। गांव, घर खेतों की हरियाली से आच्छादित हो जाते हैं और किसान परिवार समृद्धि की आशा में उल्लसित रहते हैं। शरद ऋतु को उत्सवों की ऋतु भी कहा जाता है। इस समय देशभर में दुर्गा पूजा, दशहरा और शारदीय नवरात्रि जैसे त्यौहार बड़े धूमधाम से मनाए जाते हैं। किसान और शहरी समाज दोनों में यही वह समय है जब परिवार और समुदाय साथ आते हैं, पूजा, व्रत, मेले और सांस्कृतिक कार्यक्रमों से जीवन में उल्लास भरते हैं। भारत की विविध परंपराओं का असली दर्शन इसी ऋतु की हल्की ठंडक और उजली धूप में होता है। शरद ऋतु को स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी माना गया है। हवा में नमी कम होती है, जिससे रोगाणुओं की वृद्धि घटती है और वातावरण स्वच्छ महसूस होता है। शरीर और मन दोनों को विश्राम और ऊर्जा प्राप्त होती है। आयुर्वेद में शरद ऋतु का विशेष वर्णन है, इस समय उपवास और सात्त्विक आहार को आवश्यक बताया गया है ताकि शरीर नई चेतना पा सके। शरद ऋतु पक्षी प्रेमियों के लिए भी खास होती है। इस मौसम में अनेक प्रवासी पक्षी सुदूर देशों से भारत की ओर प्रस्थान करते हैं। नदियों, झीलों और तालाबों के किनारे पक्षियों की चहचहाहट और कलरव गूंजता है। यह दृश्य न सिर्फ प्रकृति प्रेमियों बल्कि आम जनमानस को भी हर्ष और प्रेरणा से भर देता है। भारतीय काव्य और साहित्य में शरद ऋतु की महिमा बार-बार चित्रित की गई है। कवियों ने इसकी चांदनी शांति और सौंदर्य को मानवीय जीवन की पवित्रता और प्रेम से जोड़ा है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर से लेकर हिंदी के आधुनिक कवियों तक, सबने शरद पूर्णिमा की चांदनी और शरदीय आभा को अपनी रचनाओं से अमर कर दिया है। कलाकारों और चित्रकारों के लिए भी यह ऋतु प्रेरणा का स्रोत बनी है। शरद ऋतु केवल एक मौसम नहीं, बल्कि जीवन का प्रतीक है। यह हमें संतुलन बनाए रखने, सौंदर्य का आदर करने और परिश्रम से समृद्धि अर्जित करने की शिक्षा देती है। प्रकृति के इस उत्सव में व्यक्ति को यह संदेश भी मिलता है कि हर संघर्ष और घनघोर वर्षा के बाद शांति और प्रकाश का समय आता है।

जिला महिला अस्पताल में नवजात शिशु के टीका लगाने पर महिला स्टाफ अवैध वसूली करते वीडियो वायरल

परिवहन विशेष न्यूज

आपको बता दे जिला महिला अस्पताल ठेका कर्मी महिला स्टाफ नवजात शिशु के टीका लगाने नाम पर अवैध वसूली का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है जबकि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी भ्रष्टाचार पर रोकने के लिए तमाम प्रयास कर रही है लेकिन भ्रष्टाचार रुकने का नाम नहीं ले रहा इस समय जनपद बदायूं के महिला अस्पताल भ्रष्टाचार मामले में नंबर वन पर चल रहा है प्रतिदिन एक न एक भ्रष्टाचार का मामला सामने आई जाता है कभी नवजात शिशु टीकाकरण के नाम पर ठेका कुर्मी महिला स्टाप वायरल वीडियो मे मरीज से रुपए देती साफ दिखाई दे रही है वायरल वीडियो की हमारी टीम पुष्टि करने पहुंची यह वीडियो एक साल पुराना बताकर पल्ला झाड़ लिया कभी-कभी लेबर रूम में डिलीवरी के नाम पर मरीज से अवैध वसूली का वीडियो वायरल होता है

जिला महिला अस्पताल की सीएमएस शोभा अग्रवाल वायरल वीडियो को पुराना बढ़कर अपना पल्ला झाड़ लेती है लेकिन जिले के आला अफसर क्यों चुप है अब देखना यह है इस वायरल वीडियो पर क्या कार्रवाई होती है।

अफवाहों के शिकंजे में कानपुर, चोर बता किया कई को अधमरा : मुकदमे दर्ज

सुनील बाजपेई

कानपुर। यह महानगर आजकल अफवाहों के शिकंजे में है ,जिसका संबंध चोरों की सक्रियता से है। इसी तरह की अफवाहों को लेकर लोग निर्दोषों को भी चोर बचाकर पीट रहे हैं। इस चक्कर में अब तक अनेक लोगों को अधमरा भी कर दिया गया है ,जिनमें से कई को अस्पताल में भी भर्ती कराया गया है। साथ ही अफवाह फैलाने वालों के खिलाफ मुकदमे भी दर्ज किया जा रहे हैं।

इसी क्रम में सजेती कस्बा में एक युवक को चोर समझकर स्थानीय लोगों ने पीट दिया। सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने युवक को अपने साथ ले गई है।

प्राप्त विवरण के मुताबिक फतेहपुर जिले के जहानाबाद क्षेत्र के द्वारिकापुर निवासी विकास हमीरपुर में एक अधिवक्ता के चैंबर में काम करते हैं। बताया कि वह सजेती में रवि सचान के कमरे पर किराए में रहते हैं।

घटना के समय वह टहल रहे थे कि इसी दौरान कुछ लोग चोर-चोर चिल्लाने लगे। वह कुछ समझाने का प्रयास करते कि लोगों ने पीटना शुरू कर दिया। बचने के लिए वह एक घर में घुसे तो वहां भी उसे पीटा गया। इसके बाद उन्हें पुलिस को सौंप दिया गया।

सजेती इंस्पेक्टर अवधेश कुमार ने बताया कि पूछताछ के बाद उन्हें जाने दिया गया। पुलिस के अनुसार घटना की जांच भी की जा रही है जिसकी नतीजे के आधार पर अगली कार्रवाई की जाएगी। अवगत कराते चलने की यह घटना पहले नहीं है इसके पहले बर्रा, गोविंद नगर ,महाराजपुर चकेरी समेत कई थाना क्षेत्र में भी ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं ,जहां लोगों को कर बताकर पीटा गया है।

कई "बीमारियाँ" असल में बीमारी नहीं बल्कि उम्र बढ़ने की सामान्य प्रक्रिया हैं

बीजिंग के एक अस्पताल के निदेशक ने बुज़ुर्गों के लिए पाँच सुझाव दिए:

आप बीमार नहीं हैं, आप उम्र दराज़ हो रहे हैं। बहुत सी "बीमारियाँ" जिनको आप बीमारी समझते हैं, वे वास्तव में शरीर के बूढ़ा होने के संकेत हैं।

1. याददाश्त कम होना यह अल्ज़ाइमर नहीं, बल्कि बुज़ुर्ग मस्तिष्क की एक सुरक्षा प्रक्रिया है। इससे डरिए मत, यह मस्तिष्क के बूढ़ा होने का लक्षण है, बीमारी नहीं।

अगर आपको सिर्फ चाबियाँ कहाँ रखीं याद नहीं रहतीं, लेकिन आप खुद ढूँढ लेते हैं, तो यह डिमेंशिया नहीं है।

2. धीरे चलना या पैरों में अस्थिरता यह लकवा नहीं, बल्कि मांसपेशियों की क्षीणता है। इसका इलाज दवा नहीं, बल्कि गतिशील रहना (व्यायाम) है।

3. नींद न आना (अनिद्रा) यह बीमारी नहीं, बल्कि मस्तिष्क की नई नींद की लय है। स्लीपिंग पिल्स का अंधाधुंध सेवन न करें। लंबे समय तक दवा पर निर्भर रहना गिरने और स्मृति ह्रास का खतरा बढ़ाता है।

बुज़ुर्गों के लिए सबसे अच्छी नींद की गोली है दिन में धूप लेना और नियमित दिनचर्या रखना।

4. शरीर में दर्द यह रुमेटिज़्म नहीं, बल्कि नसों के बूढ़े होने की सामान्य प्रतिक्रिया है।

5. हाथ-पैर या शरीर में हर जगह दर्द क्या यह रुमेटिज़्म या हड्डियों की बढ़वार (हाइपरप्लासिया) है? हड्डियाँ ढीली और पतली ज़रूर होती हैं, लेकिन 99% दर्द बीमारी नहीं है, बल्कि नसों की धीमी संवेदन क्षमता है जो दर्द को बढ़ा-चढ़ाकर महसूस कराती है। इसे सेंट्रल सेंसिटाइजेशन कहते हैं, बुज़ुर्गों में यह सामान्य है। दर्द निवारक दवाएँ समाधान नहीं हैं। व्यायाम और फ़िज़ियोथेरेपी ही उपाय हैं। रात को सोने से पहले पैरों का गरम पानी से स्नान + गरम सेंक + हल्की मालिश दवा से ज़्यादा असरदार होती है।

6. असामान्य स्वास्थ्य जाँच रिपोर्ट यह हमेशा बीमारी नहीं होती, बल्कि मानक सूचकांक अपडेट न होने के कारण होती है।

7. बुज़ुर्गों के लिए जाँच मानक अलग होते हैं डब्ल्यूएचओ ने बुज़ुर्गों के स्वास्थ्य जाँच मानकों को ढीला रखने की सिफारिश की है। कोलेस्ट्रॉल थोड़ा ऊँचा होना लंबे जीवन से जुड़ा पाया गया है, क्योंकि कोलेस्ट्रॉल हार्मोन और सेल झिल्ली बनाने का कच्चा माल है। बहुत कम स्तर रोग प्रतिरोधक क्षमता घटा सकता है। चीन के हाइपरटेंशन गाइडलाइन में भी स्पष्ट है कि बुज़ुर्गों के लिए BP लक्ष्य <150/90 mmHg है, न कि <140/90 जैसा युवा लोगों में। बढ़ती उम्र को बीमारी न मानें, और बदलाव को विकार न समझें।

8. बढ़ती उम्र बीमारी नहीं, बल्कि जीवन की अनिवार्य राह है।

बुज़ुर्गों और उनके बच्चों के लिए कुछ खास जरूरी बातें

1. याद रखें, हर असुविधा बीमारी नहीं होती।

2. बुज़ुर्गों को सबसे ज़्यादा डर "डराने" से लगता है।

3. स्वास्थ्य रिपोर्ट या विज्ञापनों से डरें नहीं।

4. बच्चों के लिए सबसे ज़रूरी यह है कि वे माता-पिता को सिर्फ अस्पताल न ले जाएँ, बल्कि उनके साथ टहलें, धूप में बैठें, खाना खाएँ, बातचीत करें और अपनापन दिखाएँ।

बूढ़ापा दुश्मन नहीं है, यह "जीवन" का ही हिस्सा है।

बदायूं में पुलिस की दबिश के दौरान अधेड़ की मौत: परिवार का आरोप- पुलिस की लापरवाही से जान गई, एस एस पी बोले-पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद होगी कार्रवाई

बदायूं के बिनावर थाना क्षेत्र के सेमर मई गांव में पुलिस की दबिश के दौरान एक व्यक्ति की मौत हो गई। मृतक की पहचान 45 वर्षीय शाकिर अली के रूप में हुई है। सोमवार रात को बिनावर थाना पुलिस दो गाड़ियों से गांव में दबिश देने पहुंची थी। शाकिर अली अपने घर के बाहर सो रहे थे। पुलिस ने उन्हें हड़काया तो वह भागने लगे और इसी दौरान उनकी मौत हो गई।

दो लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की: मृतक के भाई साबिर ने पुलिस पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उनका कहना है कि पुलिस किसी और के घर में दबिश देने आई थी। लेकिन उन्होंने बिना वजह शाकिर को परेशान किया। ग्रामीणों के अनुसार, पुलिस ने एक अन्य युवक के साथ भी मारपीट की। साथ ही दो लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की। एसएसपी डॉ. बृजेश सिंह ने कहा कि मामला उनके संज्ञान में है। शाकिर के शव का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

न्यूरोपैथी और नर्व डैमेज — 4 ज़रूरी विटामिन व उपाय

न्यूरोपैथी क्या है?

न्यूरोपैथी वह स्थिति है जिसमें दिमाग और रीढ़ की हड्डी से शरीर तक जाने वाली नसें (खासकर हाथ-पैर) क्षतिग्रस्त हो जाती हैं। नसों की बाहरी परत (मायलिन) टूटने से झुनझुनी, जलन, सुन्नपन, दर्द, कमजोरी और बैलेंस बिगड़ना जैसे लक्षण दिखते हैं।

मुख्य कारण

1. विटामिन की कमी (खासकर B12, B6, B9)
2. शुगर / डायबिटीज़
3. नस दबना (ग़लत पॉश्चर, हर्नियेटेड डिस्क)
4. छिपे संक्रमण (जैसे सिफिलिस)
5. कुछ दवाइयाँ (मेटफॉर्मिन, ओमेप्राज़ोल, ज़्यादा B6)
6. शराब, जंक-फूड, ज़्यादा शक्कर

मुख्य लक्षण

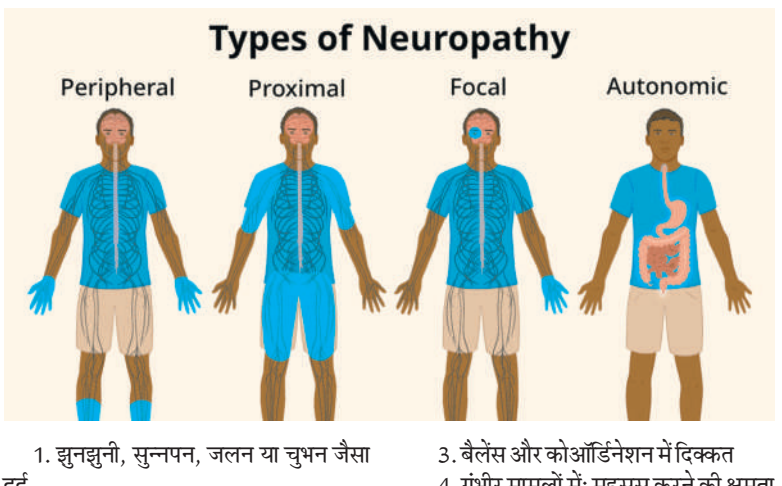

1. झुनझुनी, सुन्नपन, जलन या चुभन जैसा दर्द
2. मांसपेशियों की कमजोरी, पकड़ कमज़ोर होना
3. बैलेंस और कोऑर्डिनेशन में दिक्कत
4. गंभीर मामलों में: महसूस करने की क्षमता खत्म होना, चलने या वस्तु पकड़ने में कठिनाई, लगातार तेज़ दर्द

4 प्रमुख सप्लीमेंट/विटामिन

1. करक्यूमिन (हल्दी का सक्रिय तत्व) – रोज़ आधा चम्मच भोजन/सूप/स्मूदी में, काली मिर्च या अच्छे फैट के साथ, या 500 mg कैप्सूल दिन में 2 बार।
2. मैग्नीशियम – थ्रियोनेट, मलेट, ग्लूकोनेट या साइट्रेट रूप में लेना बेहतर।
3. बी-विटामिन (B12, B6, B9) – रोज़ाना संतुलित डोज़; ज़्यादा B6 नुकसान कर सकता है।
4. ओमेगा-3 (EPA, DHA) – ठंडे पानी की मछली या फिश ऑयल सप्लीमेंट।

किन चीज़ों से बचें

1. शराब
2. अधिक चीनी
3. तले-भुने व प्रोसेस्ड खाद्य
4. बहुत नमक वाले पैकेज्ड आइटम
5. जिन खाद्य-पदार्थों से एलर्जी या सूजन बढ़े

युवा पीढ़ी को शिक्षा, कौशलता विकास अस्त्र से सशक्त करना भारत के भविष्य का को सशक्त करना है

युवा पीढ़ी देश के नेशन बिल्डर्स हैं

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया

महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर किसी भी देश की संपन्नता, सफलता, उच्चस्तरीय अर्थव्यवस्था और हर क्षेत्र में मज़बूत पकड़ रखने की नींव के पहियों में से एक सबसे मज़बूत और महत्वपूर्ण आधारस्तंभ शिक्षा व कौशलता विकास है,मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र मानता हूं कि शिक्षा और कौशलता विकास सफलता, संपन्नता सहित सभी क्षेत्रों की एक ऐसी चाबी है जिससे सफलता के द्वार खुलते हैं क्योंकि शिक्षा व कौशलता ग्रहण करने के बाद ही वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, अविष्कारक सहित नवोन्मेष, नवाचारों के प्रणेता बनने की और देश सेवा कर अपने देश के विकास करने का अवसर मिलता है।

साथियों बात अगर हम भारत की करें तो हम सभी जानते हैं कि भारत की 68 फ़ीसदी जनसंख्या युवा है और भारत एक युवा देश है इसको ध्यान में रखते हुए नई शिक्षा नीति 2020 बनाई गई है जिसके आधार पर वर्तमान समय में शैक्षणिक नीतियां, रणनीतियां व रणनीतिक रोडमैप बनाकर क्रियान्वयन किया जा रहा है जिसका परिणाम हमें आने वाले कुछ वर्षों में विस्तृत स्तर पर दिखेगा, क्योंकि इस एनईपी - 2020 में युवाओं और प्रौढ़ शिक्षा के अनेक स्तरों पर रणनीतिक रोडमैप बनाने के द्वार खोले गए हैं,जिसका क्रियान्वयन उसीके अनुरूप करने की विशेष ज़रूरत है क्योंकि किसी भी रणनीतिक रोडमैप को उसके कार्यक्रम के अनुसार क्रियान्वयन किए जाए, तो सीमित संसाधनों से भी अनुकूल सबसे बड़ा सकारात्मक परिवर्तन हो सकता है।

साथियों बात अगर हम वर्तमान युग में युवा पीढ़ी को शिक्षा, कौशलता विकास के अस्त्र से सशक्त करने की करें तो आज के नए डिजिटल भारत में युवा पीढ़ी देश के नेशन बिल्डर हैं।शिक्षा की बेहतर गुणवत्ता के साथ युवाओं की क्षमता का विस्तार वैश्विक स्तर की उच्च शिक्षा के अनुरूप करने की ज़रूरत है जिससे हमारे भारत का भविष्य सशक्त होगा क्योंकि शिक्षा के मज़बूत अंतरराष्ट्रीय स्तर के ढांचे से निकलने के बाद हमारे युवा वैश्विक स्तरपर श्रेष्ठ वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर, अविष्कारक की भूमिका में होंगे जिस पर देश में नवाचार, नवोन्मेष, डिजिटल प्रौद्योगिकी, नवोन्मेष की क्रांति आएगी और हर स्तरपर हर क्षेत्र में हमारे युवा उस क्षेत्र के विशेषज्ञ के रूप में सेवाएं देंगे तो हमारा विज़न 2047, विज़न 5 ट्रिलियन डॉलर,विज़न आत्मनिर्भर भारत के स्वप्नों को उसकी डेट लाइन से कहीं बहुत अधिक समय पहले हम पहुंचजाएंगे। बस, जरूरत है संकल्प, जांबाज़ी और ज़ज्बे से अपने शिक्षा व कौशलता के स्तर को अपने अनुरूप बनाने में जुट जाने की।

साथियों बात अगर हम केंद्र और राज्य सरकार द्वारा होली के विभिन्न योजनाओं की करें तो करें तो शिक्षा, उन्नति और प्रोत्साहन के लिए अनेक द्वार खोले गए हैं उसके लिए बज़ट एलोकेशन भी किए गए हैं परंतु बजट केवल आंकड़ों का लेखा-जोखा नहीं है बजट को यदि ठीक से क्रियान्वित किया जाए तो सीमित संसाधनों से भी बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है !बस,जरूरत है हमें कुछ कर गुजरने के संकल्प लेने की

साथियों बात अगर हम माननीय पीएम द्वारा शिक्षा और कौशलता विकास क्षेत्रों पर केंद्रीय बजट 2025 के सकारात्मक प्रभाव पर एक वेबीनार को संबोधन करने की करें तो पीआईबी के अनुसार उन्होंने बजट 2025 में शामिल पांच पहलुओं पर विस्तार से बताया। सबसे पहले, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को व्यापक बनाने के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं यानी शिक्षा क्षेत्र की बढ़ी हुई क्षमताओं के साथ बेहतर गुणवत्ता के साथ शिक्षा का विस्तार करना। दूसरा, कौशल विकास पर जोर दिया गया है। एक डिजिटल कौशल इको-सिस्टम बनाने, उद्योग की मांग के अनुसार कौशल विकास और बेहतर उद्योग संपर्क बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। तीसरा, भारत के प्राचीन अनुभव तथा शहरी तथा योजना एवं डिजाइनिंग के ज्ञान को शिक्षा में शामिल करना महत्वपूर्ण है। चौथा, अंतर्राष्ट्रीयकरण पर बल दिया गया है। इसमें विश्व स्तर के विदेशी विश्वविद्यालयों का आगमन और गिफ्ट सिटी के संस्थानों को फिनटेक से संबंधित संस्थान सुनिश्चित करने के लिए प्रोत्साहित करना शामिल है। पांचवां, एनिमेशन विजुअल इफेक्ट्स गेमिंग कॉमिक (एवीजीवी) पर ध्यान केंद्रित करना, जहां रोजगार की अपार संभावनाएं हैं और जो एक बड़ा वैश्विक बाजार है। उन्होंने कहा, ₹इस बजट से राष्ट्रीय शिक्षा नीति को साकार करने में काफी मदद मिलेगी।उन्होंने राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में युवा पीढ़ी के महत्व पर जोर देते हुए संबोधन की शुरुआत की। उन्होंने कहा,हमारी आज की युवा पीढ़ी, देश के भविष्य की कर्णधार है, वही भविष्य के नेशन बिल्डर्स हैं। इसलिए आज की युवा पीढ़ी को एंपावरिंग करने का मतलब है, भारत के भविष्य को एंपावर करना। उन्होंने कहा, आत्मनिर्भर भारत के लिए वैश्विक प्रतिभा की मांग के दृष्टिकोण से गतिशील कौशल महत्वपूर्ण है। उन्होंने रोजगार की बदलती भूमिकाओं की मांगों के अनुसार देश के जनसांख्यिकीय लाभांश को तैयार करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इसी सोच को ध्यान में रखते हुए बजट में स्किलिंग एंड लाइवलीहुड और ई-स्किलिंग लैब के लिए डिजिटल इको-सिस्टम की घोषणा की गई थी।उन्होंने कहा कि कई राज्यों में स्थानीय भाषाओं में चिकित्सा और तकनीकी शिक्षा भी दी जा रही है। प्रधानमंत्री ने स्थानीय भारतीय भाषाओं में डिजिटल प्रारूप में सर्वोत्तम सामग्री बनाने में गति लाने का आह्वान किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ऐसी सामग्री इंटरनेट, मोबाइल फोन, टीवी और रेडियो के माध्यम से उपलब्ध होनी चाहिए। उन्होंने सांकेतिक भाषाओं में सामग्री के संबंध में काम को प्राथमिकता के साथ जारी रखने की आवश्यकता को दोहराया।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि युवा पीढ़ी देश के नेशन बिल्डर हैं युवा पीढ़ी को शिक्षा कौशलता अस्त्र से सशक्त करना भारत के भविष्य का को सशक्त करना है!! शिक्षा की बेहतर गुणवत्ता के साथ युवाओं की क्षमता का विस्तार वैश्विक स्तर की उच्च शिक्षा के अनुरूप करना वर्तमान में डिजिटल भारत की ज़रूरत है।

जेन ज़ेड और सत्ता परिवर्तन का नया समीकरण-जेन ज़ेड + सोशल मीडिया + टेक्नोलॉजी = सत्ता परिवर्तन

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया

महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर 21 वीं सदी के तीसरे दशक में दुनियाँ की राजनीति, समाज और सत्ता समीकरणों में सबसे बड़ा परिवर्तन जिस शक्ति के कारण आया है, वह है-जेन ज़ेड। यह पीढ़ी, जो 1997 से 2012 के बीच जन्मी मानी जाती है,डिजिटल युग की संतान है। इसके हाथ में स्मार्टफोन है,इसकी भाषा सोशल मीडिया है और इसकी शक्ति टेक्नोलॉजी है।यह पीढ़ी पारंपरिक विचारधाराओं और बड़े नेताओं के भाषणों की जगह अब नए औज़ारों के जरिये सत्ता को चुनौती देती है। इतिहास गवाह है कि फ्रांसीसी क्रांति रोबेस्पियर जैसे वक्ताओं की वजह से हुई और क्यूबा की क्रांति फिदेल कास्त्रो जैसे नेताओं के भाषणों से उभरी,लेकिन आज क्रांति का समीकरण पूरी तरह बदल चुका है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र या मानता हूं कि अब न विचारधारा की आवश्यकता है, न ही किसी बड़े नेता की। अब आंदोलन का केंद्र है- युवा का गुस्सा + सोशल मीडिया + टेक्नोलॉजी। 21वीं सदी में जन्मी जेन ज़ेड पीढ़ी केवल उपभोक्ता या दर्शक नहीं है,बल्कि डिजिटल युग की असली शक्ति और मानसिकता की प्रतीक बन चुकी है। यह पीढ़ी इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के साथ पली-बढ़ी है, इसलिए इसकी सोच वैश्विक और तात्कालिक है। जेन ज़ेड तर्कसंगतता, पारदर्शिता और तेजी से बदलती परिस्थितियों के अनुरूप खुद को ढालने की क्षमता रखती है। जलवायु परिवर्तन, भ्रष्टाचार, मानवाधिकार, लोकतंत्र और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों पर यह पीढ़ी सिर्फ आवाज़ उठाने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि टेक्नोलॉजी के जरिये आंदोलन खड़ा करती है और सत्ता पलट तक की क्षमता दिखाती है।चूँकि

यह पीढ़ी इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के साथ पली-बढ़ी है,इसलिए इसकी सोच वैश्विक और तात्कालिक है।इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगेजेन ज़ेड और सत्ता परिवर्तन का नया समीकरण-जेन ज़ेड + सोशल मीडिया + टेक्नोलॉजी = सत्ता परिवर्तन,भविष्य की राजनीति में जीत उसी की होगी जो इस डिजिटल समीकरण को समझे और युवाओं की ऊर्जा को सम्मान देगा।

साथियों बात अगर हम जेन ज़ेड की मानसिकता: डिजिटल युग का प्रतीक इसको समझने की करें तो,जेन ज़ेड वह पीढ़ी है जिसने किताबों से ज्यादा स्क्रीन देखी, पोस्टकार्ड से ज्यादा ईमेल और सोशल मीडिया पोस्ट लिखी, और अखबार से ज्यादा ट्विटर/एक्स पर खबरें पढ़ीं। इस पीढ़ी की सबसे बड़ी विशेषता है स्पीड — यह बदलाव को जल्दी स्वीकार करती है और उतनी ही जल्दी विद्रोह भी खड़ा कर देती है। जेन ज़ेड पारंपरिक सत्ता ढाँचे से सवाल पूछती है और पारदर्शिता की मांग करती है। जलवायु परिवर्तन से लेकर भ्रष्टाचार, लोकतंत्र से लेकर लैंगिक समानता तक, यह हर विषय पर मुखर है।

आज का युवा "ग्लोबल सिटीजन" है। एक नेपाली छात्र काठमांडू से बैठकर श्रीलंका की स्थिति पर ट्वीट करता है, तो बांग्लादेश का बेरोजगार युवक भारत या यूरोप की राजनीति पर हैशटैग चलाता है। यही ग्लोबलाइजेशन ऑफ़ पॉलिटिक्स है, जिसे जेन ज़ेड ने संभव बनाया।

साथियों बात अगर हम सत्ता पलट का आधुनिक समीकरण को समझने की करें तो, युवा + सोशल मीडिया +टेक्नोलॉजी पहले क्रांति का आधार होता था विचारधारा और संगठित पार्टी ढांचा। आज समीकरण है:(1) युवा का गुस्सा-बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, असमानता। (2) सोशल मीडिया-आंदोलन को फैलाने और वायरल बनाने का औज़ार। (3) टेक्नोलॉजी- टेलीग्राम चैनल, व्हाट्सऐप ग्रुप, यूट्यूब लाइव और डिजिटल फंडिंग।एक जमाने में विचारधारा की किताबें छपती थीं और लोग उन्हें पढ़कर विद्रोह करते थे। अब हैशटैग बनते हैं और लाखों-करोड़ों लोग तुरंत जुड़ जाते हैं। सोशल मीडिया सिर्फ सूचना का माध्यम नहीं बल्कि "डिजिटल बैरिकेड" बन चुका है।

साथियों बात अगर हम जेन ज़ेड के वैश्विक आंदोलनों को समझने की करें तो, नेपो बेबीज़, फ्री यूथ और सेव म्यांमर जेन ज़ेड के नेतृत्व में कई आंदोलन वैश्विक चर्चा का केंद्र बने: (1) नेपो बेबीज़ मूवमेंट-हॉलीवुड और बॉलीवुड दोनों जगह इस ट्रेंड ने वंशवाद और पारिवारिक प्रभुत्व पर सवाल उठाया। युवाओं ने पारदर्शिता और मेरिट की मांग उठाई। (2) फ्री यूथ मूवमेंट-थाईलैंड, हांगकांग और एशिया के अन्य हिस्सों में लोकतंत्र और मानवाधिकारों की लड़ाई में जेन ज़ेड की भूमिका प्रमुख रही। (3)सेव म्यांमर मूवमेंट - 2021 में म्यांमार में सैन्य तख़्तापलट के खिलाफ जेन ज़ेड ने न केवल सड़कों पर प्रदर्शन किया, बल्कि ट्विटर और फेसबुक पर वैश्विक अभियान चलाकर दुनियाँ का ध्यान खींचा।इसके अलावा फ्राइडेज़ फॉर फ्यूचर (ग्रेटा थूनबेर्ग) जैसे क्लाइमेट मूवमेंट्स, ब्लैक लाइव्स मैटर जैसे समानता के आंदोलन और #मी टू जैसी डिजिटल मुहिम में भी जेन ज़ेड ने अहम भूमिका निभाई।

साथियों बात अगर हम दक्षिण एशिया में सत्ता पलट और जेन ज़ेड की भूमिका को समझने की करें तो (1) नेपाल (2025)- नेपाल में हाल ही में हुए राजनीतिक उथल-पुथल में युवाओं की सोशल मीडिया मुहिम ने निर्णायक भूमिका निभाई। #चेंजनेपाल जैसे कैंपेन ने भ्रष्टाचार और सत्ता संघर्ष के खिलाफ जनता को एकजुट किया। (2) बांग्लादेश (2024)- वहां बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और चुनावी धांधली के खिलाफ युवाओं का गुस्सा सोशल मीडिया पर फूटा। "नो वोट टू करप्शन" हैशटैग ने लाखों युवाओं को जोड़ दिया और चुनावी परिणामों को प्रभावित किया। (3) श्रीलंका (2022)- आर्थिक संकट, महंगाई और राजनीतिक भ्रष्टाचार से परेशान जनता खासकर युवाओं ने "#गोटागोहोंमे" अभियान चलाया। यह इतना ताकतवर बना कि राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे को देश छोड़कर भागना पड़ा।इन घटनाओं ने साफ कर दिया कि अब सत्ता पलट के पीछे सिर्फ राजनीतिक पार्टियाँ नहीं बल्कि जनता और खासकर जेन ज़ेड का डिजिटल विद्रोह होता है।

साथियों बात अगर हम वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जेन ज़ेड को समझने की करें तो, अमेरिका में ब्लैक लाइवस मैटर आंदोलन, यूरोप में क्लाइमेट स्ट्राइक्स, अफ्रीका में एन्डसार्स आंदोलन और एशिया में फ्री यूथ व सेव म्यांमर- इन सबमें एक समानता है कि जेन ज़ेड ने इन्हें डिजिटल क्रांति में बदला।2024-25 में देखा गया कि लंदन, पेरिस और न्यूयॉर्क तक में जेन ज़ेड प्रवासी नीति और जलवायु कानूनों को लेकर सड़क पर उतरी। उनकी शक्ति अब केवल "मतदाता" होने तक सीमित नहीं, बल्कि "सत्ता पलटाने" तक है।

अतः अगर हम अप्रक पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि जेन ज़ेड अब केवल नई पीढ़ी नहीं बल्कि नई राजनीति है। यह पीढ़ी अपने गुस्से, पारदर्शिता की मांग और टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से दुनिया की सत्ता समीकरण बदल रही है। आज का सत्ता पलट पुराने ढर्रे से अलग है-अब कोई रोबेस्पियर या कास्त्रो नहीं चाहिए, अब एक वायरल वीडियो या हैशटैग ही काफी है।

वोल्वो की गाड़ियों की कीमतों में भारी कटौती, ₹6.92 लाख तक होंगी सस्ती

भारत सरकार द्वारा GST दरों में बदलाव के बाद Volvo कार इंडिया ने अपनी ICE (पेट्रोल/डीजल) कारों की कीमतों में 6.92 लाख रुपये तक की कटौती की घोषणा की है। नई कीमतें 22 सितंबर 2025 से प्रभावी होंगी। कंपनी ने अपनी कारों पर आकर्षक फेस्टिव ऑफर्स भी पेश किए हैं जिसे डबल फेस्टिव डिलाइट का नाम दिया गया है। GST में बदलाव का लाभ ग्राहकों को मिलेगा।

नई दिल्ली। इस बार के फेस्टिव सीजन आने से पहले भारत सरकार ने नई GST दरों की घोषणा की है। नए GST दरों की घोषणा के बाद कार निर्माता कंपनियां अपनी गाड़ियों की कीमत में भारी कटौती कर रही है। अब इस लिस्ट मे Volvo भी शामिल हो गई है। वोल्वो कार इंडिया ने आज अपने ग्राहकों के लिए एक बड़ी खुशखबरी की घोषणा की है। कंपनी ने अपने ICE (पेट्रोल/डीजल) पोर्टफोलियो की कारों की कीमतों में 6.92 लाख रुपये तक की भारी कटौती का एलान किया है। ये नई कीमतें 22 सितंबर, 2025 से प्रभावी होंगी।

Volvo लेकर आई फेस्टिव ऑफर

कंपनी की तरफ से अपनी गाड़ियों की कीमत में कटौती के बाद यह फैसला हाल ही में जीएसटी काउंसिल द्वारा किए गए जीएसटी युक्तिकरण के बाद आया है, जिसे ऑटोमोटिव उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण सुधार माना जा रहा है। इसी के साथ, Volvo ने अपनी कारों पर आकर्षक फेस्टिव ऑफर्स भी पेश किए हैं, जिससे ग्राहकों को दोहरा लाभ मिल रहा है। कंपनी इसे डबल फेस्टिव डिलाइट का नाम दे रही है।

ग्राहकों को मिलेगा सीधा फायदा

नई टैक्स सिस्टम ने ऊंचे टैक्स स्लैब को एक सरल व्यवस्था से बदल दिया है, जिससे Volvo की गाड़ियों को इसका सीधा फायदा अपने ग्राहकों तक पहुंचाने का मौका मिला है। इस कटौती के बाद, वोल्वो की शानदार और सुरक्षित कारों की पूरी ICE रेंज अब पहले से कहीं ज़्यादा आकर्षक कीमतों पर मिलेगी। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि वोल्वो के बैटरी इलेक्ट्रिक वाहनों (BEV) की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया गया है, लेकिन वे भी कंपनी द्वारा दिए जा रहे विशेष त्योहारी ऑफर्स में शामिल हैं।

कंपनी का क्या कहना है?

Volvo कार इंडिया के प्रबंध निदेशक, ज्योति मल्होत्रा ने कहा कि एक जिम्मेदार व्यवसाय और स्वीडिश लक्जरी कार निर्माता के रूप में, हमारा लक्ष्य लक्जरी मोबिलिटी को अधिक सुलभ बनाना और अपने ग्राहकों को सर्वोत्तम ऑफर्स प्रदान करना है। 'डबल फेस्टिव डिलाइट' के हिस्से के रूप में जीएसटी लाभ और विशेष ऑफर्स का यह संयोजन भारत में इस सेगमेंट के विकास में हमारे विश्वास को भी मजबूत करता है। हमें उम्मीद है कि यह त्योहारी सीजन हमारे लिए बहुत सफल रहेगा। Volvo इंडिया 2007 से भारत में मौजूद है और देश भर में 25 डीलरशिप के माध्यम से अपने ग्राहकों को सेवा प्रदान करती है। कंपनी सुरक्षित और टिकाऊ मोबिलिटी के अपने दृष्टिकोण के लिए प्रतिबद्ध है।

नया इलेक्ट्रिक स्कूटर ज़ेलियो ग्रेसी भारत में लॉन्च, जानिए फीचर्स और कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

ZELIO E मोबिलिटी ने अपना नया लो-स्पीड इलेक्ट्रिक स्कूटर Gracyi लॉन्च किया है जो शहरी यात्रियों के लिए डिजाइन किया गया है। यह स्कूटर 140 किलोमीटर तक की रेंज और 180 मिमी का ग्राउंड क्लीयरेंस प्रदान करता है। Gracyi तीन वेरिएंट में उपलब्ध है जिनकी कीमत 54000 रुपये से शुरू होती है। इसमें 60/72V BLDC मोटर डिजिटल मीटर एलईडी हेडलैंप और USB चार्जिंग पोर्ट जैसे फीचर्स हैं।

नई दिल्ली। भारत की सबसे तेजी से बढ़ती इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर कंपनियों में से एक, ZELIO E मोबिलिटी ने आज अपने पॉपुलर लो-स्पीड इलेक्ट्रिक स्कूटर, Gracyi का नया फेसलिफ्ट वर्जन लॉन्च कर दिया है। शहरी यात्रियों, विशेष रूप से छात्रों, पेशेवरों और गिग वर्कर्स की जरूरतों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है। यह स्कूटर बेहतर परफॉर्मेंस, शानदार आराम और कई आधुनिक फीचर्स के साथ आता है। नया Gracyi स्कूटर सिंगल चार्ज में 140 किलोमीटर तक की शानदार रेंज और 180 मिमी का जबरदस्त ग्राउंड क्लीयरेंस प्रदान करता है, जो इसे भारतीय सड़कों के लिए एक आदर्श विकल्प बनाता है। आइए विस्तार में जानते हैं कि नया ZELIO Gracyi को और किन खास फीचर्स के साथ लेकर आया गया है?

ZELIO Gracyi तीन वेरिएंट में लॉन्च

ZELIO ने नए Gracyi को ग्राहकों की अलग-अलग जरूरतों को पूरा करने के लिए तीन वेरिएंट में लॉन्च किया गया है। इन तीनों में अलग-अलग बैटरी कॉन्फिगरेशन में पेश किया है। इसके साथ ही तीनों वेरिएंट की कीमत में बैटरी और रेंज के हिसाब से अलग-अलग रखी गई है।

फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

शहर की राइड्स के लिए बनाए गए इस स्कूटर की टॉप स्पीड 25 किमी/घंटा है। इसमें एक शक्तिशाली 60/72V BLDC मोटर लगी है, जो एक बार फुल चार्ज होने में केवल 1.5 यूनिट बिजली की खपत करती है। कंपनी का दावा है कि लिथियम-आयन वेरिएंट 4 घंटे में और जेल बैटरी मॉडल 8 घंटे में फुल चार्ज हो जाते हैं। कंपनी मोटर कंट्रोलर और फ्रेम पर 2 साल की वारंटी, लिथियम-आयन बैटरी पर 3 साल की वारंटी और जेल बैटरी पर 1 साल की वारंटी दे रही है।

ZELIO Gracyi

बेहतर सुरक्षा के लिए इसके फ्रंट में डिस्क ब्रेक और रियर में ड्रम ब्रेक दिए गए हैं। इसके साथ ही हाइड्रोलिक शॉक एब्जॉर्बर भी दिया गया है। स्कूटर में डिजिटल मीटर, एलईडी हेडलैंप, कीलेस ड्राइव, एंटी-थेफ्ट अलार्म, यूएसबी चार्जिंग पोर्ट और पैसेंजर फुटरिस्ट जैसे कई उपयोगी फीचर्स भी शामिल हैं। इसे व्हाइट, ब्लैक, व्हाइट-ब्लैक, येलो-ब्लू और ब्लैक-रेड जैसे पांच कलर ऑप्शन के साथ लेकर आया गया है।

जीप की गाड़ियों की कीमतों में भारी कटौती, ₹4.84 लाख तक होंगी सस्ती

भारत सरकार द्वारा GST दरों में सुधार के बाद Jeep ने अपनी SUV लाइनअप की कीमतों में कटौती की घोषणा की है। 22 सितंबर 2025 से Jeep Compass की कीमत 2.16 लाख रुपये तक और Jeep Meridian का दाम 4.84 लाख रुपये तक कम हो सकता है। Grand Cherokee Jeep की कीमत में 4.50 लाख रुपये तक की कटोती की जा सकती है

नई दिल्ली। भारत सरकार ने हाल ही में GST की दरों में सुधार किया है। इन GST की दरों में सुधार के बाद कार निर्माता कंपनियों ने अपनी गाड़ियों की कीमत में कटौती की है। अब इस लिस्ट में Jeep भी शामिल हो गई है। कंपनी ने GST की दरों में सुधार के बाद अपनी एसयूवी लाइनअप में कीमतों में बड़ी कटौती की घोषणा की है। संशोधित टैक्स ढांचे का पूरा लाभ ग्राहकों को देकर, जीप अपने वाहनों को पहले से कहीं ज्यादा किफायती बना रही है। 22 सितंबर, 2025 से, जीप कंपास (Jeep Compass), मेरिडियन (Meridian), रैंगलर (Wrangler) और ग्रैंड चेरोकी (Grand Cherokee) की एक्स-शोरूम कीमतों में मॉडल और वेरिएंट के आधार पर कीमत में कमी होगी।

Jeep की गाड़ियों की कीमत इनती होगी कम

- GST दरों में यह बदलाव पूरे भारत में 22 सितंबर, 2025 से सभी जीप डीलरशिप पर लागू होगा। इस कदम से जीप न केवल अपने ग्राहकों के लिए एसयूवी को ज़्यादा सुलभ बना रही है, बल्कि त्योहारी सीज़न से पहले भी खुद को मजबूती से स्थापित कर रही है।
- GST दरों में बदलाव की वजह से Jeep Compass की कीमत 2.16 लाख रुपये तक सस्ती हो सकती है। इसके साथ ही Jeep Meridian का दाम 4.84 लाख रुपये तक कम हो सकता है। इसके अलावा, Grand Cherokee Jeep की कीमत में 4.50 लाख रुपये तक की कटोती की जा सकती है।
- ये फायदा, गाड़ी के मॉडल की अधिकतम कीमत पर प्रस्तावित जीएसटी दरों के आधार पर सांकेतिक हैं। वास्तविक बचत वेरिएंट के आधार पर भिन्न हो सकती है।

कंपनी ने क्या कहा?

स्टेलांटिस इंडिया के बिजनेस हेड और निदेशक कुमार प्रियेश ने कहा कि जीएसटी सुधार एक परिवर्तनकारी कदम है जो ग्राहकों के लिए स्पष्टता और सामर्थ्य लाता है। हमें अपने खरीदारों को इसका पूरा लाभ देकर खुशी हो रही है, जिससे जीप लाइफस्टाइल पहले से कहीं अधिक सुलभ हो गई है।

कावासाकी की इस पावरफुल बाइक पर लाखों की छूट, कई पावर मोड और क्रूज कंट्रोल जैसे फीचर्स से है लैस

कावासाकी बाइक्स पर डिस्काउंट ऑफर

कावासाकी इंडिया ने Versys लाइनअप पर कैशबैक ऑफर की घोषणा की है जिसमें Versys X-300 Versys 650 और Versys 1100 शामिल हैं। यह ऑफर सितंबर के अंत तक या डीलरशिप पर उपलब्धता तक सीमित है। Kawasaki Versys रेंज पर मॉडल के आधार पर 20 हजार से लेकर 1.1 लाख रुपये तक का कैशबैक मिल रहा है।

नई दिल्ली। कावासाकी इंडिया ने पॉपुलर मोटरसाइकिल Ninja ZX-10R और Ninja 1100SX पर डिस्काउंट के बाद अपनी Versys लाइनअप पर भी बेहतरीन कैशबैक ऑफर की घोषणा की है। इस लाइनअप में Versys X-300, Versys 650 और Versys 1100 शामिल हैं। इस ऑफर को सितंबर के आखिरी तक और डीलरशिप पर उपलब्धता पर निर्भर करता है। आइए विस्तार में जानते हैं कि इन कावासाकी की इन मोटरसाइकिलों पर कितना डिस्काउंट दिया जा रहा है।

Kawasaki Versys रेंज पर ऑफर

- कावासाकी Versys रेंज पर मॉडल के आधार पर 20 हजार रुपये से लेकर 1.1 लाख रुपये तक का ऑफर दिया जा रहा है।
- Kawasaki Versys 1100: यह कावासाकी की फ्लैगशिप एडवेंचर टूरर बाइक है, जिसकी कीमत 12.90 लाख रुपये से शुरू होती है। अब इसपर 1.10 लाख रुपये का भारी कैशबैक ऑफर दिया जा रहा है। यह टॉप-ऑफ-द-लाइन मॉडल एडजस्टेबल ट्रैक्शन कंट्रोल, कई पावर मोड और क्रूज कंट्रोल जैसे फीचर्स से लैस है। 2025 के लिए, इसे 1,099cc का इनलाइन-फोर इंजन मिला है जो 135hp और 112Nm का टॉर्क जनरेट करता है।
- Kawasaki Versys 650: यह कावासाकी की सबसे पॉपुलर बाइक में से एक है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत 7.93 लाख रुपये है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत पर 20,000 रुपये का कैशबैक दिया जा रहा है। इसमें इसमें 649cc का पैरेलल-ट्विन मोटर लगा है, जो 67hp की पावर और 61Nm का टॉर्क जनरेट करता है।
- Kawasaki Versys X-300: यह कंपनी की एंट्री-लेवल बाइक ही, जिसकी एक्स-शोरूम कीमत 3.80 लाख रुपये है। इस पर 25,000 रुपये का कैशबैक मिलता है। X-300 में 296cc का पैरेलल-ट्विन इंजन है, जो 40hp की पावर और 26Nm का टॉर्क जनरेट करता है।
- कावासाकी की अन्य बड़ी मोटरसाइकिल की तरह, 350cc से ऊपर की मोटरसाइकिलों के लिए सरकार के हालिया जीएसटी स्लैब में बदलाव के कारण - 28 प्रतिशत से 40 प्रतिशत तक - Versys 650 और Versys 1100 की कीमतों में महीने के अंत तक बढ़ोतरी होने की संभावना है। हालांकि, 350cc से कम वाली Versys X-300 को नए टैक्स ढांचे के लागू होने पर कीमत में कमी का फायदा मिल सकता है।
- कावासाकी की अन्य बड़ी मोटरसाइकिल की तरह, 350cc से ऊपर की मोटरसाइकिलों के लिए सरकार के हालिया जीएसटी स्लैब में बदलाव के कारण - 28 प्रतिशत से 40 प्रतिशत तक - Versys 650 और Versys 1100 की कीमतों में महीने के अंत तक बढ़ोतरी होने की संभावना है। हालांकि, 350cc से कम वाली Versys X-300 को नए टैक्स ढांचे के लागू होने पर कीमत में कमी का फायदा मिल सकता है।

पुलिस ने महिला से दुष्कर्म का प्रयास व लूट के आरोपी को पुलिस मुठभेड़ किया गिरफ्तार

कासगंज। सोरों कोतवाली पुलिस ने तीन दिन पूर्व महिला से दुष्कर्म का प्रयास व लूट के आरोपी को मुठभेड़ कर गिरफ्तार कर लिया है। मुठभेड़ में पैर में गोली लगने से आरोपी घायल हो गया, जिसे पुलिस ने जिला अस्पताल में भर्ती कराया है।

वहीं पुलिस ने आरोपी के कब्जे से 01 तमंचा, 03 जिन्दा व 01 खोखा कारतूस, 01 चोरी की मोटर साइकिल व लूटी हुई चाँदी की जंजीर बरामद की है।

बता दें कि थाना सोरों कोतवाली क्षेत्र के रहने वाले एक भाई ने थाने में एक लिखित तहरीर देकर बताया कि बीती 13 सितंबर की शाम उसकी 28 वर्षीय बहन खेत पर मक्का रखा रही थी। तभी वहाँ पडोसी गाँव का बाबू खाँ पुत्र आसीन खाँ निवासी चन्दनपुर घटियारी थाना सोरों आ गया और बाबू खां ने उसकी बहन के साथ छेड़छाड करते हुए दुष्कर्म का प्रयास किया। विरोध करने पर चाँदी की जंजीर व नाक की बाली लूटकर मौके से फरार हो गया। मामले को गंभीरता से लेते हुए पुलिस अधीक्षक कासगंज अंकिता शर्मा ने टीम गठित कर अभियुक्त की शीघ्र गिरफ्तारी के निर्देश दिए। गठित टीम द्वारा किये जा रहे लगातार प्रयासो के क्रम में बीती देर रात्रि सोरों कोतवाली प्रभारी जगदीश चन्द्र द्वारा मय पुलिस टीम के चैकिंग कर रहे थे। तभी सूचना मिली कि वाँछित अभियुक्त बाबू खाँ मोटरसाइकिल से ग्राम ठठेरपुर तिराहे की तरफ आ रहा है, जिसपर पुलिस ने चैकिंग और कड़ी कर दी। तभी पुलिस को एक मोटरसाइकिल आती दिखाई दी। जिसे घेराबंदी कर रोकने का इशारा किया।

अपने आप को पुलिस से घिरता देख बाबू खां ने पुलिस पर जान से मारने की नीयत से फायरिंग शुरू कर दी। जिसके जवाब में पुलिस टीम ने अपना बचाव करते हुए जवाबी फायर किया, जिससे गोली बाबू के पैर में जा लगी, और गोली लगने से बाबू घायल हो गया।

वहीं, पुलिस ने घायल वांछित बाबू को उपचार हेतु जिला अस्पताल में भर्ती कराया, जहाँ उसका उपचार जारी है। वहीं पुलिस ने आरोपी के कब्जे से 01 तमंचा, 03 जिन्दा व 01 खोखा कारतूस, एक मोटर साइकिल व चाँदी की जंजीर बरामद की है।

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

बोडोलैंड की स्थायी शांति के लिए मिलना चाहिए नोबेल प्राइज

पंकज जायसवाल

अभी हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मणिपुर के दौरे के बाद असम में अपने सम्बोधन के दौरान भावुक हो गये थे. प्रधानमंत्री इकलौते प्रधानमंत्री है जिन्होंने पूर्वोत्तर के विकास के लिए काफी मेहनत की है. उस मेहनत का एक परिणाम है पूर्वोत्तर के अशांत क्षेत्र बोडोलैंड में आई स्थायी शांति। आज अशांत होती दुनिया में बोडोलैंड शांति का एक मॉडल और उम्मीद की किरण है। आज जब पूरी दुनिया चारे पड़ोसी म्यांमार, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका और अफगानिस्तान हो या दूरस्थ सूडान, यमन, इज़राइल–फिलिस्तीन सत्ता और राजनीतिक व्यवस्थाओं से असंतोष के चलते युवाओं और छात्रों में उग्रवाद फैल रहा है, जब दुनिया बुद्ध, गांधी और नेल्सन मंडेला के मार्ग से विमुख होकर हिंसा और युद्ध की आग में झुलस रही है, ऐसे समय में भारत के पूर्वोत्तर का बोडोलैंड दुनिया में शांति स्थापना का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

बोडोलैंड का इतिहास लंबे समय तक उग्रवाद, जातीय संघर्ष और अविश्वास से भरा रहा। 1980 और 1990 के दशक में शुरू हुए आंदोलन ने धीरे-धीरे हिंसक रुप ले लिया। कई सशस्त्र संगठन बने, हजारों निर्दोष मारे गए, लाखों लोग विस्थापित हुए और विकास ठप हो गया। 2012 के जातीय दंगे इसकी त्रासदी की चरम सीमा थे। दशकों तक हिंसा और रक्तपात की छाया में जीने के बाद यह क्षेत्र आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा और प्रमोद बोरो के साझा प्रयासों से शांति और विकास का प्रतीक बन चुका है। यह बदलाव किसी एक कारक का परिणाम नहीं बल्कि दूर दृष्टि, राजनीतिक इच्छाशक्ति, केंद्रीय, राज्य और स्थानीय नेतृत्व के सामूहिक प्रयासों का नतीजा है। प्रधानमंत्री मोदी का पूर्वोत्तर के प्रति प्रेम और आशीर्वाद, अमित शाह का दृढ़ क्रियान्वयन, हिमंता बिस्वा सरमा का सक्रिय सहयोग और प्रमोद बोरो का अहिंसा में विश्वास और समर्पण मिलकर 2020 के बोडो एकॉर्ड के माध्यम से इस स्थायी शांति की आधारशिला बने। 27 जनवरी 2020 को भारत सरकार, असम सरकार, नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड (NDFB), ऑल बोडो स्टूडेंट्स यूनियन और यूनाइटेड बोडो पीपुल्स ऑर्गनाइजेशन के बीच शांति समझौते पर किया गया ह्स्ताक्षर बोडोलैंड में शांति युग का प्रस्तावना बना।

इस पृष्ठभूमि में फादर ऑफ बोडोज़ कहे जाने वाले उपेंद्र ब्रह्मा ने जीवनपर्यंत शांति स्थापना के लिए संघर्ष किया। उनकी मृत्यु के बाद उनके सपनों को साकार करने के लिए ऑल बोडो स्टूडेंट्स यूनियन के अध्यक्ष के रुप में प्रमोद बोरो एक नई उम्मीद बनकर सामने आए। उनका विश्वास था कि गांधी की अहिंसा और संवाद ही विवाद का स्थायी समाधान है। सहजीवन और सह-अस्तित्व उनका मूलमंत्र था। छात्र राजनीति से निकलकर वे यूनाइटेड पीपल्स पार्टी लिबरल (UPPL) के अध्यक्ष और फिर बोडोलैंड टेरिटोरियल रीजन (BTR) के मुख्य कार्यकारी सदस्य बने। बोरो ने अपने पाँच वर्षों के शासनकाल से यह सिद्ध कर दिया कि बंदूक और बारुद नहीं, बल्कि संवाद और समावेश ही स्थायी समाधान है।

जनवरी 2020 में केंद्र, असम सरकार और बोडो संगठनों के बीच हुआ ऐतिहासिक शांति समझौता निर्णायक मोड़ साबित हुआ जिसमें अबसु समेत कई संगठनों को शांति के एक मेज पर लाया गया। इसमें विशेष प्रशासनिक दर्जा, वित्तीय पैकेज और पुनर्वास योजनाएँ शामिल थीं। 2025 तक अधिकांश प्रावधान लागू हो चुके है।

इस पूरी प्रक्रिया में प्रमोद बोरो ने ऑल बोडो स्टूडेंट्स यूनियन के अध्यक्ष की हैसियत से शांति के ज़मीनी सूत्रधार की भूमिका निभाई। उन्होंने उग्रवादी गुटों से संवाद कर उन्हें मुख्यधारा में लाया, स्थानीय प्रशासन और बीटीआर के बीच तालमेल बैठाया और समाज में विश्वास बहाली सुनिश्चित की। बकौल गृह मंत्री अमित शाह का भी कहना है कि ऑल बोडो स्टूडेंट्स यूनियन जिसे अबसु कहते है, के बिना बोडो समझौता संभव नहीं होता। अबसु ने बोडोलैंड में शांति और विकास स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

गृह मंत्री अमित शाह इस पूरी प्रक्रिया की धुरी रहे। उन्होंने सिर्फ समझौते को कागज़ तक सीमित नहीं रखा बल्कि इसकी सफलता की व्यक्तिगत निगरानी की। विशेष आर्थिक पैकेज, पुनर्वास और सुरक्षा उपायों को तत्काल मंजूरी दी और लगातार स्थानीय संगठनों से संवाद बनाए रखा। मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने केंद्र और स्थानीय संगठनों के बीच पुल का काम किया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि यदि राज्य सरकार गंभीरता और संवेदनशीलता से काम करे तो केंद्र की नीतियाँ धरातल पर उतर सकती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बोडोलैंड को केवल सुरक्षा या कानून–व्यवस्था का मुद्दा न मानकर विकास और सशक्तिकरण का अवसर माना। बोरो के शब्दों में, "जब मैंने प्रधानमंत्री से कहा कि पूर्वोत्तर को बस आपका प्यार चाहिए, तबसे उनके पूर्वोत्तर दौरे लगातार बढ़े और विकास योजनाएँ तेज़ हुईं।" मोदी सरकार ने सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य और आधारभूत ढाँचे की योजनाओं से स्पष्ट संदेश दिया कि शांति तभी स्थायी होगी जब लोग विकास का अनुभव करेंगे।

बोडो एकॉर्ड 2020 के बाद बीटीआर सरकार और उसके चीफ प्रमोद बोरो के नेतृत्व ने युवाओं को हिंसा से विमुख कर शिक्षा और रोजगार की ओर मोड़ा, इंटरनेशनल नॉलेज फेस्टिवल कराये, गांव गांव फुटबाल की टीम बनवायी उनके टूर्नामेंट कराये, तीन तीन डूरंड कप का आयोजन करवाये, स्किल ट्रेनिंग के साथ साथ जॉब फेयर करवाए ताकि युवाओं का फोकस हिंसा से पूरी तरह हट जाए और वो रचनात्मकता की तरफ मुड़े. पुराने सशस्त्र आंदोलन करने वाले लोगों का पुनर्वास सुनिश्चित किया ताकि वे पुन: हिंसा की तरफ ना मुड़ें. सामाजिक मेल-मिलाप कार्यक्रमों की शुरुआत की और विकास योजनाओं को प्राथमिकता दी। बोडोलैंड में सदियों से रह रहे 36 कम्युनिटी की लोकतान्त्रिक भागीदारी मजबूत कर उनके मांग पत्रों को कलमबद्ध कर बोडोलैंड कम्युनिटी विज़न डॉक्यूमेंट तैयार किया जिसे बनाने में उन कम्युनिटी की ही भागीदारी रही ने क्षेत्र में समावेशन और भागीदारी की नींव रखी, इससे लोगों में लोकतंत्र की भावना और मजबूत हुई. दशकों बाद लोगों ने पूरे क्षेत्र में लगातार पांच साल तक शांति का अनुभव किया, इस दौरान बोडोलैंड में एक भी हिंसा,उपद्रव, बंद या हड़ताल नहीं हुआ. 2020 के बाद का यह काल दशकों बाद एक बड़ा अचीवमेन्ट था.

2020 के बाद हुए पहले चुनाव में जनता ने शांति की कोशिशों के इनाम के रुप में यूपीपीएल को सत्ता सौंपी। यूपीपीएल आज एनडीए की साझेदार है, उसके सांसद केंद्र को समर्थन दे रहे है और उसके नेता असम सरकार में मंत्री है। 2025 में फिर चुनाव हो रहें है, 2005 से 2020 तक बोडोलैंड की सत्ता में रही बोडोलैंड पीपल फ्रंट पार्टी अपने नेता ह्ग्रामा के नेतृत्व में तो यूपीपीएल प्रमोद बोरो के नेतृत्व में और बीजेपी हिमंता बिस्वा सरमा के नेतृत्व में चुनाव लड़ रही है. इस चुनाव में यूपीपीएल NDA में पार्टनर होने के बाद भी बीजेपी और यूपीपीएल स्वतंत्र रुप से चुनाव लड़ रहें है तीसरी पार्टी बीपीएफ है. चुनावी माहौल में जनता का नृत्य–संगीत से भरा उत्साह बताता है कि लोकतंत्र की जड़ें गहरी हो चुकी है।

मच्छर ख़ून चूसते हैं- लेकिन क्या हमें बस उनसे छुटकारा पाना चाहिए

विजय गर्ग

मच्छर मलेरिया, डेंगू, ज़ीका और पीले बुखार सहित मनुष्यों को कई प्रकार की बीमारियों को प्रसारित करने के लिए जिम्मेदार हैं, जो हर साल सैकड़ों हजारों लोगों को मारते हैं। यह देखना आसान है कि हम उनसे पूरी तरह से छुटकारा क्यों चाहते हैं। हालांकि, यह मुद्दा जितना लगता है उससे कहीं अधिक जटिल है। यहां पारिस्थितिक भूमिकाओं मच्छरों के खेलने का एक टूटना है और अगर हम उन्हें खत्म करने के लिए थे तो क्या हो सकता हैः मच्छर किस उद्देश्य से सेवा करते हैं? जबकि रोग वैक्टर के रूप में उनकी भूमिका निर्विवाद है, मच्छर भी पारिस्थितिकी तंत्र में एक भूमिका निभाते हैं।

परागणकर्ताः बहुत से लोगों को यह एहसास नहीं होता है कि मच्छर परागणकर्ता हैं। उनका प्राथमिक खाद्य स्रोत रक्त नहीं है, बल्कि अमृत और अन्य पौधों के रस को फूल देता है। जैसा कि वे खिलाते हैं, वे पराग को फूल से फूल में स्थानांतरित करते हैं, विभिन्न पौधों को पुनः पेश करने में मदद करते हैं। कुंद पत्ती आर्किड की तरह कुछ विशिष्ट पौधे भी मुख्य रूप से मच्छरों द्वारा परागण किए जाते हैं।

खाद्य स्रोतः मच्छर, अपने लार्वा और वयस्क दोनों चरणों में, विभिन्न प्रकार के अन्य जानवरों के लिए एक महत्वपूर्ण खाद्य स्रोत हैं। मच्छर लार्वा मछली, कछुए, उभयचर और अन्य जलीय कीड़ों द्वारा खाया जाता है। वयस्क मच्छर पक्षियों (हमिंगबर्ड सहित), चमगादड़, मेंढक, छिपकली, ड्रैगनफ्लियों और मकड़ियों के शिकार होते हैं। कुछ पारिस्थितिक तंत्रों में, विशेष रूप से आर्कटिक टुंड्रा में, वे बायोमास का एक विशाल हिस्सा बनाते हैं और प्रवासी पक्षियों के लिए एक महत्वपूर्ण खाद्य स्रोत हैं।

पोषक साइकिल चलानाः मच्छर लार्वा स्थिर पानी में रहते हैं और सड़ते हुए कार्बनिक पदार्थों का सेवन करते हैं, जिससे जटिल यौगिकों को तोड़ने और जलीय वातावरण में पोषक तत्वों को रीसायकल करने में मदद मिलती है। अगर हम उनसे छुटकारा पा लें तो क्या होगा? वैज्ञानिकों ने इस सवाल पर बहस की है, और आम सहमति यह है कि मच्छरों के बड़े पैमाने पर विलुप्त होने से पारिस्थितिक पतन नहीं होगा। हालांकि, यह परिणाम के बिना नहीं होगा।

खाद्य वेब के लिए व्यवधानः जबकि कोई भी जानवर विशेष रूप से मच्छरों पर खिलाने के लिए नहीं जाना जाता है, उनके अचानक गायब होने से खाद्य श्रृंखला में एक अस्थायी अंतर पैदा होगा। शिकारियों जो एक प्रमुख खाद्य स्रोत के रूप में उन पर भरोसा करते हैं, उन्हें अपने आहार को अनुकूलित करना होगा, और मच्छरों की तरह कुछ विशेष शिकारियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। इसका एक लहर प्रभाव हो सकता है, जिससे मच्छरों पर फ़ीड करने वाले जानवरों की आबादी में कमी हो सकती है।

परागणकों का नुकसानः जबकि अन्य परागणकर्ता मच्छरों द्वारा छोड़े गए शून्य को भरेंगे, कुछ पौधे जो परागण के लिए उन पर भरोसा करते हैं वे संघर्ष कर सकते हैं या विलुप्त हो सकते हैं।

एक ₹गन्दा₹ विलुप्त होनेः मच्छरों की 3,500 से अधिक प्रजातियां हैं, और उनमें से केवल एक अंश (लगभग 200 प्रजातियां) मनुष्यों को काटती हैं। एक वैश्विक उन्मूलन प्रयास अविश्वसनीय रूप से कठिन होगा और संभवतः कई प्रजातियों को मिटा देगा जो मनुष्यों के लिए कोई खतरा नहीं है और महत्वपूर्ण पारिस्थितिक भूमिकाएं हैं। एक अधिक लक्षित दृष्टिकोण ₹उन सभी को मार डालो₹ दृष्टिकोण आम तौर पर पारिस्थितिक रूप से जोखिम भरा और व्यावहारिक रूप से असंभव दोनों माना जाता है। कई वैज्ञानिकों के अनुसार, बेहतर रणनीति यह है कि मच्छरों की विशिष्ट प्रजातियों को नियंत्रित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाए जो मनुष्यों को बीमारियों का संचार करते हैं। शोधकर्ता इन खतरनाक प्रजातियों से निपटने के लिए अभिनव और अधिक लक्षित तरीकों पर काम कर रहे हैं, जैसेः

जीन संपादनः मच्छरों को संशोधित करना ताकि वे बीमारियों को प्रसारित करने में असमर्थ हों या बाँझ हों।

बाँझ कीट तकनीकः आबादी को कम करने के लिए बाँझ पुरुष मच्छरों को जारी करना।

जैविक नियंत्रणः मछली जैसे प्राकृतिक शिकारियों का उपयोग करना जो मच्छर लार्वा या वोल्बाचिया जैसे बैक्टीरिया खाते हैं जो मच्छरों को निष्फल कर सकते हैं। अंत में, जबकि मच्छरों के बिना एक दुनिया का विचार मानव स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से अपील कर रहा है, एक पूर्ण उन्मूलन पर्यावरण के लिए अप्रत्याशित और संभावित नकारात्मक परिणाम हो सकता है। रोग ले जाने वाली प्रजातियों पर केंद्रित एक अधिक बारीक और लक्षित दृष्टिकोण आगे का सबसे विवेकपूर्ण तरीका लगता है।

रैंक से परे देखो : विजय गर्ग

कॉलेज की रैंक से परे, छात्रों को चिकित्सा परामर्श प्रक्रिया के दौरान कई छिपे हुए कारकों पर विचार करना चाहिए। ये कारक उनकी चिकित्सा शिक्षा और भविष्य के कैरियर को काफी प्रभावित कर सकते हैं।1.।नैदानिक एक्सपोजर और रोगी लोड एक महत्वपूर्ण, अक्सर अनदेखी कारक नैदानिक जोखिम की गुणवत्ता और मात्रा है। यह केवल कॉलेज से जुड़े अस्पताल के बारे में नहीं है, बल्कि रोगी लोड और इसके द्वारा संभाले जाने वाले मामलों की विविधता है। महानगरीय क्षेत्र के एक कॉलेज में उत्कृष्ट सुविधाएं हो सकती हैं लेकिन कई निजी अस्पतालों के कारण कम रोगी भार हो सकता है। इसके विपरीत, ग्रामीण या अर्ध-शहरी सेटिंग में एक कॉलेज में एक उच्च रोगी का कारोबार हो सकता है, जो छात्रों को व्यापक बीमारियों के साथ अधिक हाथों का अनुभव प्रदान करता है। नैदानिक रोटेशन में छात्रों को दी गई स्वायत्तता के बारे में पता लगाना महत्वपूर्ण है। कुछ कॉलेज छात्रों को जल्दी से रोगी की देखभाल में अधिक शामिल होने की अनुमति देते हैं।2.। संकाय और मेंटरशिप संकाय की विशेषज्ञता और पहुंच कॉलेज के नाम से अधिक महत्वपूर्ण है। एक उच्च रैंकिंग वाले कॉलेज में कर्मचारियों पर प्रसिद्ध शोधकर्ता हो सकते हैं, लेकिन यदि वे मेंटरशिप या मार्गदर्शन के लिए छात्रों के लिए सुलभ नहीं हैं, तो उनकी उपस्थिति सीमित मूल्य की है। छात्रों को छात्र-से-संकाय अनुपात और उपयोग की जाने वाली शिक्षण विधियों पर शोध करना चाहिए। क्या संकाय सदस्य एक-एक बातचीत को प्रोत्साहित करते हैं? क्या वे संदेह को स्पष्ट करने और कैरियर के रास्तों पर चर्चा करने के लिए स्वीकार्य हैं? एक अच्छा संरक्षक अमूल्य मार्गदर्शन, अनुसंधान के साथ मदद, और अवसरों के लिए खुले दरवाजे प्रदान कर सकता है।3। अवसंरचना और सुविधाएं जबकि सभी मेडिकल कॉलेजों में बुनियादी ढांचा है, सुविधाओं की गुणवत्ता और रखरखाव अलग-अलग है। छात्रों को विचार करना चाहिएः

छात्रावास की सुविधाः शैक्षणिक ब्लॉक से रहने की स्थिति, मेस की गुणवत्ता और दूरी। पुस्तकालय और अनुसंधान सुविधाएंः अध्ययन के लिए डिजिटल संसाधनों, पत्रिकाओं और अनुकूल वातावरण की उपलब्धता। प्रयोगशालाएंः शरीर रचना विज्ञान प्रयोगशालाओं, जैव रसायन प्रयोगशालाओं और अन्य व्यावहारिक सुविधाओं में उपकरणों की गुणवत्ता। मनोरंजन सुविधाएंः एक स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन महत्वपूर्ण है, और खेल के मैदान, जिम और अन्य मनोरंजक सुविधाओं की उपलब्धता एक छात्र की भलाई को काफी प्रभावित कर सकती है।4।इंटर्नशिप और स्नातकोत्तर अवसर अनिवार्य घूर्णन इंटर्नशिप चिकित्सा शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस अवधि के दौरान पेश किया गया वजीफा और रोगी का प्रदर्शन कॉलेजों के बीच काफी भिन्न होता है। छात्रों को एक ही संस्थान के भीतर स्नातकोत्तर (पीजी) सीट उपलब्धता पर भी विचार करना चाहिए। कई कॉलेजों में अपने स्वयं के स्नातकों के लिए आरक्षित सीटों का एक निश्चित प्रतिशत होता है, जो प्रतिस्पर्धी पीजी प्रवेश परीक्षा के दौरान एक महत्वपूर्ण लाभ हो सकता है। कॉलेज की प्रतिष्ठा और कनेक्शन अन्य संस्थानों में ऐच्छिक और अनुसंधान के अवसरों के साथ भी मदद कर सकते हैं।5.।कैम्पस पर्यावरण और संस्कृति परिसर का वातावरण और छात्र संस्कृति अमूर्त अभी तक महत्वपूर्ण कारक हैं। माहौल को समझने के लिए वर्तमान छात्रों से बात करना फायदेमंद है। क्या पर्यावरण प्रतिस्पर्धी या सहयोगी है? क्या कॉलेज में रैगिंग या एक मजबूत एंटी-रैगिंग नीति का इतिहास है? छात्र सहायता प्रणाली क्या है? एक कॉलेज की संस्कृति एक छात्र के मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तिगत विकास और समग्र अनुभव को बहुत प्रभावित कर सकती है। एक सहायक और सकारात्मक वातावरण मेडिकल स्कूल के तनावपूर्ण वर्षों को अधिक प्रबंधनीय बना सकता है।

डिजिटल युग में मौलिक लेखन की चुनौतियां और अवसर

विजय गर्ग

डिजिटल युग में मौलिक लेखन एक जटिल विषय है, जिसमें चुनौतियों और अवसरों दोनों का सामना करना पड़ता है। आइए इस पर विस्तार से चर्चा करें।

डिजिटल युग में मौलिक लेखन की चुनौतियाँ

डिजिटल युग ने लेखन की दुनिया को बहुत बदल दिया है, जिससे मौलिकता बनाए रखना एक चुनौती बन गया है। कुछ प्रमुख चुनौतियाँ इस प्रकार हैंः

* जानकारी की अधिकडिजिटल युग में मौलिक लेखन की चुनौतियां और अवसरता और नकल का खतराः इंटरनेट पर जानकारी का विशाल भंडार उपलब्ध है। इससे लेखक अक्सर दूसरों के विचारों से प्रभावित हो जाते हैं, और जाने-अनजाने में उनके लेखन में मौलिकता की कमी आ सकती है। गूगल जैसे टूल के कारण साहित्यिक चोरी का खतरा बढ़ गया है, जहाँ लोग आसानी से किसी और के काम की नकल कर सकते हैं।

* कृत्रिम बुद्धिमत्ता ( ) का बढ़ता प्रभावः चैटजीपीटी जैसे AI टूल्स बहुत तेजी से और अच्छी तरह लिख सकते हैं। हालाँकि, वे डेटा के आधार पर लिखते हैं जो पहले से ही मौजूद है, जिससे उनके लेखन में मौलिकता का अभाव होता है। यह एक बड़ी चुनौती है क्योंकि AI-जनित सामग्री मौलिक मानव लेखन से मुकाबला कर रही है।

* ध्यान केंद्रित करने की कमी ( ):डिजिटल माध्यमों पर बहुत सारी सामग्री उपलब्ध है, जिससे पाठकों का ध्यान एक जगह बनाए रखना मुश्किल हो जाता है। लेखक को कम समय में ही पाठकों को प्रभावित करना होता है, जिससे विस्तृत और गहरी सोच वाले लेखन की जगह छोटी और त्वरित सामग्री को प्राथमिकता दी जाती है।

* प्रकाशन का दबावः ब्लॉग, सोशल मीडिया और ऑनलाइन पत्रिकाओं के माध्यम से तुरंत सामग्री प्रकाशित करने का दबाव रहता है। इस तेजी के कारण लेखक के पास गहन शोध और विचार-मंथन करने का पर्याप्त समय नहीं होता, जिससे उनके लेखन की गुणवत्ता और मौलिकता प्रभावित हो सकती है।

डिजिटल युग में मौलिक लेखन के अवसर

चुनौतियों के बावजूद, डिजिटल युग ने मौलिक लेखन के लिए कई नए और रोमांचक अवसर भी पैदा किए हैंः

* अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सुलभताः डिजिटल प्लेटफॉर्म ने लेखन को लोकतांत्रिक बना दिया है। अब किसी भी लेखक को अपनी रचनाएँ प्रकाशित करने के लिए बड़े प्रकाशन गृहों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। ब्लॉग, वेबसाइट, सोशल मीडिया और सेल्फ-पब्लिशिंग प्लेटफॉर्म ने हर किसी को अपनी आवाज़ दुनिया तक पहुँचाने का मौका दिया है।

* व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचः इंटरनेट के माध्यम से एक लेखक का काम कुछ ही पलों में दुनियाभर के पाठकों तक पहुँच सकता है। इससे न केवल उनकी पहुँच बढ़ती है, बल्कि उन्हें अपने काम पर तुरंत प्रतिक्रिया भी मिलती है, जिससे वे अपने लेखन में सुधार कर सकते हैं।

* नए स्वरूपों का विकासः डिजिटल माध्यमों ने सिर्फ लिखित सामग्री तक ही सीमित नहीं रखा है। लेखक अब अपनी कहानियों और विचारों को ऑडियो, वीडियो, पॉडकास्ट, और इंटरैक्टिव कहानियों जैसे नए स्वरूपों में भी प्रस्तुत कर सकते हैं। यह लेखन को और भी रचनात्मक और आकर्षक बनाता है।

* पाठक और लेखक के बीच सीधा संवादः ब्लॉग और सोशल मीडिया पर टिप्पणियों के माध्यम से लेखक सीधे अपने पाठकों से जुड़ सकते हैं। यह संवाद लेखन की प्रक्रिया को अधिक गतिशील बनाता है और लेखक को यह समझने में मदद करता है कि उनके पाठक क्या चाहते हैं।

निष्कर्ष

डिजिटल युग ने बेशक मौलिक लेखन के लिए नई चुनौतियाँ खड़ी की हैं, जैसे कि जानकारी की अधिकता और एआई का प्रभाव, लेकिन इसने लेखकों के लिए असीमित अवसर भी पैदा किए हैं। अब लेखक अपनी आवाज़ को अधिक स्वतंत्रता और व्यापकता के साथ दुनिया तक पहुँचा सकते हैं। इस नए परिवेश में, मौलिकता बनाए रखने के लिए लेखकों को अधिक सतर्क और जागरूक रहने की आवश्यकता है। उन्हें अपनी रचनात्मकता और गहन विचार-मंथन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, ताकि वे डिजिटल युग में भी अपने लेखन को प्रासंगिक और प्रभावी बना सकें।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

12 चरणों से परे

(शराबी बेनामी मॉडल दशकों के लिए नशे की लत के लिए नशे की दवाओं के लिए काम किया है)

शराबी बेनामी (एए) द्वारा अग्रणी 12-चरण कार्यक्रम दशकों से नशे की वसूली का एक आधारशिला रहा है, और इसके मॉडल को नशीले पदार्थों से लेकर जुए तक कई प्रकार के व्यसनों के लिए अनुकूलित किया गया है। कार्यक्रम के मुख्य सिद्धांत- शक्तिहीनता को स्वीकार करना, ₹उच्च शक्ति₹ की मांग करना और संशोधन करना- कई लोगों को संयम हासिल करने और बनाए रखने में मदद की है। हालांकि, 12-स्टेप मॉडल रिकवरी का एकमात्र रास्ता नहीं है। विभिन्न कारणों से, यह सभी के लिए सही फिट नहीं हो सकता है। यहां 12-चरण कार्यक्रम के कुछ प्रमुख विकल्प और आलोचनाएं दी गई हैं। 12-चरण मॉडल की आलोचना और सीमाएं

आध्यात्मिक / धार्मिक तत्वः जबकि कार्यक्रम की भाषा एक ₹उच्च शक्ति के रूप में आप इसे समझते हैं,₹ के समावेशी होने के लिए होती है, इसकी आध्यात्मिक समझ नास्तिकों, अज्ञेय या उन लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा हो सकती है जो केवल आध्यात्मिक या धार्मिक ढांचे के साथ पहचान नहीं करते हैं।

₹शक्तिहीनता₹ अवधारणाः लत पर ₹शक्तिहीन₹ होने पर जोर कुछ के लिए विवाद का बिंदु हो सकता है। आलोचकों का तर्क है कि यह व्यक्तियों को निराश कर सकता है और लाचारी की भावना पैदा कर सकता है, जो उनकी वसूली के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेने की उनकी क्षमता में बाधा डाल सकता है।

व्यावसायिक निरीक्षण की कमीः 12-चरण कार्यक्रम सहकर्मी के नेतृत्व में हैं, लाइसेंस प्राप्त चिकित्सा या मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों द्वारा नहीं चलाए जाते हैं। जबकि प्रायोजक अमूल्य सहायता प्रदान करते हैं, वे प्रशिक्षित चिकित्सक नहीं हैं और अंतर्निहित मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों या सह-होने वाले विकारों को संबोधित नहीं कर सकते हैं।

वन-साइज-फिट्स-ऑल एप्रोचः 12-स्टेप मॉडल एक संरचित, समान कार्यक्रम है। यह किसी व्यक्ति की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं हो सकता है, जैसे कि आघात, कुछ मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों या अद्वितीय जीवन परिस्थितियों के साथ।

अतिनिर्भरता के लिए संभावितः जबकि समर्थन नेटवर्क एक प्रमुख लाभ है, कुछ व्यक्ति बैठकों और कार्यक्रम पर अत्यधिक निर्भर हो सकते हैं, जिससे स्वायत्तता का निर्माण करना और स्वतंत्र रूप से जीवन को नेविगेट करना मुश्किल हो सकता है। विकल्प और साक्ष्य-आधारित उपचार मॉडल लत वसूली के लिए साक्ष्य-आधारित विकल्पों और पूरक दृष्टिकोणों की बढ़ती संख्या मौजूद है। ये अक्सर सशक्तिकरण, वैज्ञानिक अनुसंधान और पेशेवर मार्गदर्शन पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

संज्ञानात्मक व्यवहार थेरेपी (सीबीटी): यह मनोचिकित्सा का व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला और अत्यधिक प्रभावी रूप है। यह व्यक्तियों को नकारात्मक विचार पैटर्न और व्यवहारों को पहचानने और बदलने में मदद करता है जो पदार्थ के उपयोग में योगदान करते हैं। सीबीटी ट्रिगर और लालसा का प्रबंधन करने के लिए नकल कौशल सिखाता है।

प्रेरक साक्षात्कार (एमआई): यह एक सहयोगी, लक्ष्य-उन्मुख परामर्श शैली है जिसे किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत प्रेरणा और परिवर्तन के लिए प्रतिबद्धता को मजबूत करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह लोगों को वसूली के बारे में उनके माहौल का पता लगाने और हल करने में मदद करता है।

आकस्मिकता प्रबंधन (सीएम): यह एक व्यवहार चिकित्सा है जो संयम को प्रोत्साहित करने के लिए सकारात्मक सुदृढीकरण का उपयोग करती है। व्यक्तियों को वसूली लक्ष्यों को पूरा करने के लिए मूर्त पुरस्कार (जैसे वाउचर या पुरस्कार) प्राप्त होते हैं, जैसे कि नकारात्मक दवा परीक्षण या चिकित्सा सत्रों में भाग लेना।

दवा-सहायता उपचार (एमएटी): कुछ व्यसनों के लिए, जैसे कि ओपिओइड या अल्कोहल का उपयोग विकार, दवा वसूली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकती है। एमएटी लत के शारीरिक लक्षणों का इलाज करने, cravings को कम करने और रिलेप्स को रोकने के लिए दवाओं के साथ व्यवहार चिकित्सा को जोड़ती है।

धर्मनिरपेक्ष समर्थन समूहः जो लोग एक गैर-आध्यात्मिक दृष्टिकोण पसंद करते हैं, उनके लिए 12-चरण मॉडल के कई धर्मनिरपेक्ष विकल्प हैं, जिनमें शामिल हैंः

स्मार्ट रिकवरीः (स्व-प्रबंधन और रिकवरी प्रशिक्षण) यह कार्यक्रम वैज्ञानिक अनुसंधान पर आधारित है और व्यक्तियों को अपने विचारों, भावनाओं और व्यवहारों को प्रबंधित करने में मदद करने के लिए संज्ञानात्मक-व्यवहार चिकित्सा से उपकरणों का उपयोग करता है।

लाइफरिंग सेक्युलर रिकवरीः यह संगठन व्यक्तिगत सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित करता है, इस विश्वास के साथ कि ₹शांत स्वयं₹ ₹व्यसनी स्वयं₹ को दूर कर सकता है।

शरण वसूलीः यह एक बौद्ध-प्रेरित कार्यक्रम है जो वसूली में व्यक्तियों की मदद करने के लिए माइंडफुलनेस और ध्यान का उपयोग करता है।

समग्र और एकीकृत दृष्टिकोणः कई उपचार केंद्रों में वसूली का समर्थन करने के लिए समग्र उपचारों की एक श्रृंखला शामिल है, जैसेः

माइंडफुलनेस एंड मेडिटेशन
योग और व्यायाम
पोषण परामर्श
कला और संगीत चिकित्सा

नेत्र आंदोलन असंवेदीकरण और पुनर्प्रसंस्करण :जैसे आघात-सूचित उपचार यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि पुनर्प्राप्ति के लिए सबसे प्रभावी मार्ग अक्सर एक व्यक्तिगत होता है। कई लोगों के लिए, पेशेवर चिकित्सा, दवा और सहकर्मी समर्थन (चाहे 12-चरण या एक विकल्प) का एक संयोजन दीर्घकालिक संयम के लिए सबसे अच्छा मौका प्रदान करता है।

विजय गर्ग

भिवाड़ी पुलिस की प्रभावी कार्यवाही

पुलिस थाना भिवाड़ी द्वारा सोसायटियो मे बन्द फ्लेटो मे रैकी कर चोरी की वारदात कर नगदी व जेवरात चोरी करने वाले 03 शातिर बदमाश मोहम्मद बिलाल शेख व मोहम्मद सुकुर शेख सहित सुनार मोहर अली को किया गिरफ्तार

आरोपीयों के कब्जे से जेवरात (सोने-चांदी) आभूषण अनुमानित कीमत करीब 5 लाख रूपये के बरामद भी किये गए ।आरोपियो से पूछताछ के दौरान सामने आया कि उक्त आरोपि झुग्गी झौपडियो में निवास करते है जो दिन के समय कचरा चुनने का कार्य करते है तथा इनकी औरते सोसायटियो मे झाडू पोंचा लगाने का कार्य करती है। आरोपियान द्वारा दिन के समय सोसाटियो मे रैकी कर सूने मकान को निशाना बनाने से पूर्व सूने मकान मालिको के बारे मे बाहर जाने की सूचना स्वंय की औरते जो सासयटियो मे झांडू पाँचा लगाने का कार्य करती है। से पूर्ण जानकारी जाकर वारदात को अंजाम देकर सूने बन्द फ्लैटो से नगदी व सोने चांदी के आभूषण चोरी कर, सस्ते दामो मे अपने परिचित सुनार को बेचान कर अपने शौक मौज पूरा करते हैं।

रिपोर्ट अंकित गुप्ता

निर्माण और शिल्पकला के देवता भगवान विश्वकर्मा

रमेश सर्राफ धमोरा

भगवान विश्वकर्मा को निर्माण एवं सृजन का देवता माना जाता है। हिंदू धर्म में इन्हें सृष्टि के दिव्य शिल्पकार, देवताओं के वास्तु विशेषज्ञ और पहले इंजीनियर के रूप में पूजा जाता है। विश्वकर्मा रचनात्मकता, तकनीकी कौशल और नवाचार के प्रतीक हैं। उनके सम्मान में भाद्रपद मास की सूर्यकन्या संक्रांति पर विश्वकर्मा जयंती मनाई जाती है। यह वह दिन है जब सूर्य सिंह राशि से कन्या राशि में प्रवेश करता है। इस दिन मजदूर, कारीगर, इंजीनियर, आर्किटेक्ट और उद्योगपति अपने औजारों और मशीनों की पूजा करते हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार चार युगों में विश्वकर्मा जी ने कई नगर और भवनों का निर्माण किया था।

विश्वकर्मा पूजा एक ऐसा त्योहार है जहां शिल्पकार, कारीगर, श्रमिक भगवान विश्वकर्मा का त्योंहार मनाते हैं। कहा जाता है कि भगवान ब्रह्मा के पुत्र विश्वकर्मा ने पूरे ब्रह्मांड का निर्माण किया था। विश्वकर्मा को देवताओं के महलों का वास्तुकार भी कहा जाता है। विश्वकर्मा दो शब्दों विश्व (संसार या ब्रह्मांड) और कर्म (निर्माता) से मिलकर बना है। इसलिए विश्वकर्मा शब्द का अर्थ है दुनिया का निर्माण करने वाला।

विश्वकर्मा शिल्पशास्त्र के आविष्कारक और सर्वश्रेठ ज्ञाता माने जाते हैं। जिन्होने विश्व के प्राचीनतम तकनीकी ग्रंथों की रचना की थी। इन ग्रंथों में न केवल भवन वास्तु विद्या, रथ आदि वाहनों के निर्माण बल्कि विभिन्न रत्नों के प्रभाव व उपयोग आदि का भी विवरण है। माना जाता है कि उन्होनें ही देवताओं के विमानों की रचना की थी। भगवान विश्वकर्मा की उत्पत्ति ऋग्वेद में हुई है। जिसमें उन्हें ब्रह्मांड के निर्माता के रूप में वर्णित किया गया है। भगवान विष्णु और शिवलिंग की नाभि से उत्पन्न भगवान ब्रह्मा की अवधारणाएं विश्वकर्मण सूक्त पर आधारित हैं।

विश्वकर्मा प्रकाश को वास्तुतंत्र का अपूर्व ग्रंथ माना जाता है। इसमें अनुपम वास्तुविद्या को गणितीय सूत्रों के आधार पर प्रमाणित किया गया है। ऐसा माना जाता है कि सभी पौराणिक संरचनाए भगवान विश्वकर्मा द्वारा निर्मित हैं। भगवान विश्वाकर्मा के जन्म को देवताओं और राक्षसों के बीच हुए समुद्र मंथन से माना जाता है। पौराणिक युग के अस्त्र और शस्त्र भगवान विश्वकर्मा द्वारा ही निर्मित हैं।

विश्वकर्मा जयंती का औद्योगिक जगत और भारतीय कलाकारों, मजदूरो, इंजीनियर्स आदि के लिए खास महत्व है। विश्वकर्मा जयन्ती भारत के जम्मू कश्मीर, पंजाब, हिमाचल, हरयाणा, दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल, असम, ओडिशा, त्रिपुरा, बिहार और झारखंड जैसे राज्यों में मनायी जाती है। नेपाल में भी विश्वकर्मा पूजा को बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। विश्वकर्मा के पूजन और उनके बताये वास्तुशास्त्र के नियमों का अनुपालन कर बनवाये गये मकान और दुकान शुभ फल देने वाले माने जाते हैं। इनमें कोई वास्तुदोष नहीं माना जाता।

औद्योगिक श्रमिकों द्वारा इस दिन बेहतर भविष्य, सुरक्षित कामकाजी परिस्थितियों और अपने-अपने क्षेत्र में सफलता के लिए प्रार्थना की जाती हैं। विश्वकर्मा जयन्ती के दिन देश के कई हिस्सों में काम बंद रखा जाता है और खूब पंतगबाजी की जाती है। विभिन्न प्रदेशों की सरकार विश्वकर्मा जयन्ती पर अपने कर्मचारियों को सावेतनिक अवकाश प्रदान करती है। यह त्योहार मुख्य रूप से दुकानों, कारखानों और उद्योगों द्वारा मनाया जाता है। इस अवसर पर, कारखानों और औद्योगिक क्षेत्रों के श्रमिक अपने औजारों की पूजा करते हैं।

विश्वकर्मा वैदिक देवता के रूप में सर्वमान्य हैं। इनको गृहस्थ आश्रम के लिए आवश्यक सुविधाओं का निर्माता और प्रवर्तक भी कहा गया है। अपने विशिष्ट ज्ञान-विज्ञान के कारण देवशिल्पी विश्वकर्मा मानव समुदाय ही नहीं वरन देवगणों द्वारा भी पूजित हैं। देवता, नर, असुर, यक्ष और गंधर्व सभी में उनके प्रति सम्मान का भाव है। भगवान विश्वकर्मा के पूजन- अर्चना किये बिना कोई भी तकनीकी कार्य शुभ नहीं माना जाता। इसी कारण विभिन्न कार्यो में प्रयुक्त होनेवाले औजारों, कल-कारखानों और विभिन्न उद्योगों में लगी मशीनों का पूजन विश्वकर्मा जयंती पर किया जाता है।

विश्वकर्मा को सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी का वंशज माना गया है। ब्रह्माजी के पुत्र धर्म तथा धर्म के पुत्र वास्तु देव थे। जिन्हें शिल्पशास्त्र का आदि पुरुष माना जाता है। इन्हीं वास्तु देव की अंगिरसी नामक पत्नी से विश्वकर्मा का जन्म हुआ। अपने पिता के पद चिन्हों पर चलते हुए विश्वकर्मा भी वास्तुकला के महान आचार्य बने। मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और देवज्ञ इनके पुत्र हैं। इन पांचों पुत्रों को वास्तुशिल्प की अलग-अलग विधाओं में विशेषज्ञ मानाजाता है।

पौराणिक साक्ष्यों के मुताबिक स्वर्ग लोक की इन्द्रपुरी, यमपुरी, वरुणपुरी, कुबेरपुरी, असुर राजरावण की स्वर्णनगरी लंका, भगवान श्रीकृष्णकी समुद्र नगरी द्वारिका और पांडवों की राजधानी हस्तिनापुर के निर्माण का श्रेय भी विश्वकर्मा को ही जाता है। पौराणिक कथाओं में इन उत्कृष्ट नगरियों के निर्माण के रोचक विवरण मिलते हैं। उड़ीसा का विश्व प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर तो विश्वकर्मा के शिल्प कौशल का अप्रतिम उदाहरण माना जाता है। विष्णु पुराण में उल्लेख है कि जगन्नाथ मंदिर की अनुपम शिल्प रचना से खुश होकर भगवान विष्णु ने उन्हे शिल्पावतार के रूप में सम्मानित किया था।

महाभारत में पांडव जहां रहते थे उस स्थान को इंद्रप्रस्थ के नाम से जाना जाता था। इसका निर्माण भी विश्ववकर्मा ने किया था। कौरव वंश के हस्तिनापुर और भगवान कृष्ण के द्वारका का निर्माण भी विश्वणकर्मा ने ही किया था। सतयुग का स्वर्ग लोक, त्रेतायुग की लंका, द्वापर की द्वारिका और कलयुग के हस्तिनापुर आदि के रचयिता विश्वकर्मा जी की पूजा अत्यन्त शुभकारी है। सृष्टि के प्रथम सूत्रधार, शिल्पकार और विश्व के पहले तकनीकी ग्रन्थ के रचयिता भगवान विश्वकर्मा ने देवताओं की रक्षा के लिये अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण किया था।

विष्णु को चक्र, शिव के त्रिशूल, इंद्र को वज्र, हनुमान को गदा और कुबेर को पुष्पक विमान विश्वकर्मा ने ही प्रदान किये थे। सीता स्वयंवर में जिस धनुष को श्रीराम ने तोड़ा था वह भी विश्वकर्मा के हाथों बना था। जिस रथ पर निर्भर रहकर श्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुन संसार को भस्म करने की शक्ति रखते थे उसके निर्माता विश्वकर्मा ही थे। पार्वती के विवाह के लिए जो मण्डप और वेदी बनाई गई थी वह भी विश्वकर्मा ने ही तैयार की थी।

माना जाता है कि विश्वकर्मा ने ही लंका का निर्माण किया था। इसके पीछे कहानी है कि शिव ने माता पार्वती के लिए एक महल का निर्माण करने के लिए भगवान विश्वकर्मा को कहा तो विश्वकर्मा ने सोने का महल बना दिया। इस महल के पूजन के दौरान भगवानशिव ने राजा रावण को आंमत्रित किया। रावण महल को देखकर मंत्रमुग्ध हो गया और जब भगवानशिव ने उससे दक्षिणा में कुछ देने को कहा तथा उसने महल ही मांगलिया। भगवान शिव ने उसे महल देकर वापस पर्वतों पर चले गए। विश्वकर्मा ने देवताओं के लिए उड़ने वाले रथों का निर्माण किया था। विश्वकर्मा ने देवताओं के राजा इंद्र का हथियार वज्र का निर्माण किया था। वज्र को ऋषि दधीचि और अज्ञेयस्त्र की हड्डियों से बनाया गया है। भगवान विष्ण का सुदर्शन चक्र उनकी शक्तिशाली रचनाओं में से एक था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 17 सितंबर 2023 को प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना प्रारम्भ की थी। जिसमें अपने हाथों और औजारों से काम करने वाले कारीगरों और शिल्पकारों को संपूर्ण सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना में 18 व्यवसायों में लगे कारीगर और शिल्पकार शामिल हैं, जैसे बढ़ई, नाव निर्माता, कवचकार, लोहार, हथौड़ा और औजार बनाने वाला, ताला बनाने वाला, सुनार, कुम्हार, मूर्तिकार, पत्थर तोड़ने वाला, चर्मकार, जूते बनाने वाला, राजमिस्त्री, टोकरी,चटाई, झाडू बनाने वाला, बुनकर, गुड़यि और खिलौने बनाने वाला (पारंपरिक), नाई, माला बनाने वाला (मालाकार), धोबी, दर्जी और मछली पकड़ने के जाल बनाने वाले लोग शामिल हैं।

पीएम विश्वकर्मा योजना में पीएम विश्वकर्मा प्रमाणपत्र और पहचान पत्र के माध्यम से मान्यता, कौशल सत्यापन के माध्यम से कौशल उन्नयन, बुनियादी कौशल, उन्नत कौशल प्रशिक्षण, उद्यमशीलता ज्ञान, 15,000 रुपये तक के टूलकिट प्रोत्साहन, तीन लाख रुपये तक की ऋण सहायता दी जाती है।

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

रसोई से संपादक तक : 'आयरन लेडी' संतोष वशिष्ठ की अमर गाथा

(सरलता और संघर्ष की आयरन लेडी, जहाँ माँ का स्नेह, समाज की चेतना और स्त्री-संकल्प की प्रतिमूर्ति साथ-साथ चलती रही।) संतोष वशिष्ठ जी का जीवन संघर्ष और सरलता की अनोखी मिसाल है। उन्होंने रसोई से अपनी यात्रा शुरू की और दैनिक चेतना की संपादक बनकर समाज को दिशा दी। मृदुभाषी, सौम्य और आत्मीय, फिर भी सिद्धांतों पर अडिग—यही उनकी असली पहचान थी। वशिष्ठ सदन को उन्होंने राजनीति और समाज का केंद्र बनाया और चेतना परिवार को माँ की तरह सँभाला। वे सचमुच हरियाणा की 'आयरन लेडी' थीं, जिनकी स्मृतियाँ और शिक्षाएँ हमें सदैव प्रेरित करती रहेंगी।

– डॉ. प्रियंका सौरभ

कभी-कभी जीवन हमें ऐसे व्यक्तित्वों से मिलाता है, जो साधारण दिखाई देते हैं, परंतु भीतर से असाधारण ऊर्जा और सामर्थ्य से भरे होते हैं। वे लोग किसी मंच या रोशनी के सहारे नहीं चमकते, बल्कि अपने कर्मों की गरिमा से स्वयं दीप्त हो उठते हैं। हरियाणा की धरती पर जन्मी संतोष वशिष्ठ जी ऐसा ही एक नाम थीं। लोग उन्हें स्नेह और श्रद्धा से आयरन लेडी कहते थे। लेकिन यह उपाधि उनके कठोर स्वभाव की नहीं, बल्कि उनके अदम्य साहस और अटल सिद्धांतों की पहचान थी।

संतोष जी का जीवन जितना सरल दिखता है, उतना ही गहन और प्रेरणादायी है। वे उन दुर्लभ स्त्रियों में से थीं जिन्होंने गृहस्थी की जिम्मेदारियों और सामाजिक कर्तव्यों को एक साथ निभाया। उनकी वाणी मधुर, व्यवहार विनम्र और स्वभाव सौम्य था, लेकिन जब सिद्धांतों की बात आती तो वे चट्टान की तरह अडिग हो जातीं। उनके व्यक्तित्व का यही द्वंद्व उन्हें असाधारण बनाता था।

उनका जीवन इस सत्य की गवाही देता है कि महानता का आधार भव्य मंच या ऊँचे पद नहीं होते, बल्कि आत्मबल और निष्ठा होती है। उन्होंने अपने परिवार, समाज और पत्रकारिता—तीनों क्षेत्रों को समान महत्व दिया और हर जगह अपनी छाप छोड़ी।

रसोई से संपादक तक की यात्रा

संतोष जी की जीवन यात्रा साधारण नारी की तरह ही रसोई से प्रारंभ हुई। वे भोजन बनातीं, घर सँभालतीं, परिवार की जिम्मेदारियाँ निभातीं। लेकिन नियति ने उन्हें केवल गृहस्थी तक सीमित रहने नहीं दिया। परिस्थितियों ने, समय ने और उनके भीतर के संकल्प ने उन्हें उस राह पर खड़ा कर दिया जहाँ उन्हें समाज के लिए लिखना और बोलना पड़ा।

दैनिक चेतना के माध्यम से उन्होंने पत्रकारिता की दुनिया में कदम रखा। इस अख़बार की नींव उनके पति, स्व. देवव्रत वशिष्ठ ने रखी थी। परंतु इसकी निरंतरता और मजबूती के पीछे संतोष जी का योगदान किसी स्तंभ से कम नहीं था। वे रसोई के काम से उठकर संपादकीय मेज़ पर बैठतीं और समाज की धड़कनों को शब्दों में ढाल देतीं। यही वह सफर था जिसे लोग सम्मानपूर्वक "रसोई से संपादक तक" कहते हैं।

उनके लिए पत्रकारिता केवल एक पेशा नहीं, बल्कि समाज की आत्मा को अभिव्यक्त करने का माध्यम थी। उन्होंने कभी सनसनीख़ेज़ ख़बरों की लालसा नहीं की, बल्कि हमेशा सच, नैतिकता और समाजहित को प्राथमिकता दी। यही कारण था कि दैनिक चेतना को पाठकों ने परिवार की तरह अपनाया और उस पर विश्वास किया।

वशिष्ठ सदन : विचारों का संगम

संतोष जी का घर, वशिष्ठ सदन, वर्षों तक हरियाणा की राजनीति और समाज का केंद्र बना रहा। यह घर नेताओं, विचारकों और समाजसेवियों के लिए किसी खुले मंच जैसा था। यहाँ हर विचारधारा के लोग आते, बैठते, चर्चा करते और दिशा पाते। इस पूरे वातावरण को संतुलन में रखने वाली शक्ति थीं—संतोष जी। वे सभी का आदर करतीं, सबकी सुनतीं, परंतु स्वयं निष्पक्ष और सिद्धांतनिष्ठ बनी रहतीं। उनके सहज स्वभाव और मृदु व्यवहार के कारण हर आगंतुक उनसे आत्मीयता का अनुभव करता। उन्होंने यह साबित कर दिया कि घर केवल चार दीवारों का नाम नहीं, बल्कि समाज का आईना भी बन सकता है।

चेतना परिवार की माँ

संतोष जी केवल अपने बच्चों की माँ नहीं थीं। दैनिक चेतना के हर सहयोगी, हर पत्रकार, हर कर्मचारी को वे अपने परिवार का हिस्सा मानतीं। उन्हें प्रोत्साहित करना, उनकी कठिनाइयों में साथ खड़ा होना और उनके लिए बेहतर अवसर उपलब्ध कराना—ये सब उनके स्वभाव का हिस्सा था।

वे पत्रकारिता को एक सेवा मानती थीं, और इसी दृष्टि से हर कार्यकर्ता को प्रेरित करती थीं। यही कारण था कि चेतना परिवार उन्हें माँ की तरह मानता रहा।

आयरन लेडी की छवि

'आयरन लेडी' कहना आसान है, परंतु इसका अर्थ समझना कठिन। संतोष वशिष्ठ ने यह उपाधि अपने कठोर हृदय से नहीं, बल्कि अपने अडिग इरादों से अर्जित की। वे भीतर से कोमल थीं, रिश्तों को सँभालना जानती थीं, लेकिन जब समय आया तो किसी दबाव के आगे झुकीं नहीं।

पत्रकारिता की दुनिया में आर्थिक संकट, सामाजिक विरोध और राजनीतिक दबाव सामान्य बात है। परंतु संतोष जी ने हर परिस्थिति का सामना साहस के साथ किया। वे जानती थीं कि सच बोलना कभी आसान नहीं होता, लेकिन वे सच से पीछे नहीं हटीं। यही साहस उन्हें औरों से अलग करता है।

सरलता की शक्ति

उनकी सबसे बड़ी ताक़त थी—उनकी सरलता। जीवन में चाहे कितने भी उतार-चढ़ाव आएँ, वे मुस्कान के साथ हर परिस्थिति को स्वीकार करतीं। वे मानती थीं कि सरलता ही सबसे बड़ा हथियार है। उनके जीवन का यही गुण लोगों को सबसे अधिक प्रभावित करता था।

वे कहा करती थीं—"रिश्तों की असली शिक्षा किताबों से नहीं, घर के आँगन से मिलती है। पहले अपने खून के रिश्तों को सँभालो, तभी समाज को भाईचारे की सीख देने का हक़ बनता है।"

यह वाक्य उनके जीवन का सार है। उन्होंने इसे केवल कहा ही नहीं, बल्कि जिया भी।

एक विरासत

आज जब संतोष वशिष्ठ हमारे बीच नहीं हैं, तो उनकी स्मृतियाँ और शिक्षाएँ हमारे पास धरोहर की तरह हैं। वे हमें यह सिखाकर गईं कि स्त्री यदि ठान ले तो घर की दीवारों से बाहर निकलकर पूरे समाज को दिशा दे सकती है। उन्होंने यह भी सिद्ध किया कि पत्रकारिता केवल कागज़ पर छपने वाली ख़बरों का नाम नहीं, बल्कि समाज के विचार और भविष्य की धड़कन है।

उनकी विरासत केवल अख़बार तक सीमित नहीं है। उनकी विरासत है—सत्यनिष्ठा, साहस, सरलता और सेवा। यह ऐसी धरोहर है जिसे कोई समय नहीं मिटा सकता।

अमर स्मृतियाँ

संतोष वशिष्ठ का जीवन हमें यह समझाता है कि महानता पद या संपत्ति से नहीं, बल्कि त्याग और निष्ठा से आती है। उन्होंने अपने जीवन से यह संदेश दिया कि संघर्ष और सेवा ही सच्ची शक्ति है।

वे केवल एक स्त्री, पत्नी या माँ नहीं थीं। वे एक आंदोलन थीं, एक विचार थीं, एक चेतना थीं। उनका जाना एक युग का अंत है, पर उनकी स्मृतियाँ अमर हैं।

सचमुच, संतोष वशिष्ठ जैसी महिलाएँ कभी जाती नहीं। वे समाज की चेतना में सदा जीवित रहती हैं, प्रेरणा देती रहती हैं और हमें बार-बार याद दिलाती हैं कि—

"आयरन लेडी वही होती है,
जो मुस्कान के साथ संघर्ष झेलकर भी समाज को रोशनी देती है।"

आयरन लेडी संतोष वशिष्ठ

रसोई की धीमी आंच में
एक जीवन उबलता रहा,
मधुरता और संकल्प की खुशबू में,
संतोष मुस्कुराती रही।

घर की दीवारें थीं सीमाएँ,
पर उनके हृदय की खिड़कियाँ खुली,
सत्य और समाज की ठंडी हवा से भरी।
शब्द उनके हाथ में पत्थर,
पर फूलों का कोमल स्पर्श भी वहीं खिलता।

सांझ की सुनहरी छाया में
वे बैठतीं, सोचतीं, लिखतीं—
हर शब्द में समाज की धड़कन,
हर पन्ने में जीवन की हलचल।

वशिष्ठ सदन, विचारों का उद्यान,
जहाँ हर मन पाता शांति,
हर विचार पाता दिशा।
और वह—माँ, दीपक,
मार्गदर्शक,
सबके लिए स्थिर प्रकाश की तरह।

पत्रकारिता उनके लिए केवल पेशा नहीं थी,
यह सेवा थी, यह सत्य की शपथ थी।
सत्य, नैतिकता, सेवा लिए—
हर पन्ने में गूँजती उनकी साँस।

सरलता उनका सबसे बड़ा अस्त्र थी,
मुस्कान में समेटा हर संघर्ष।
कहती थीं—
रिश्तों की शिक्षा घर की मिट्टी में है।
समाज को समझाने से पहले,
अपने खून के रिश्ते सँभालो।

आज उनका शरीर हमारे बीच नहीं,
पर स्मृति की हर परछाई में वे जीवित हैं।
सत्य, साहस, सरलता और सेवा—
इन धरोहरों की छाया में,
हर आयरन लेडी मुस्कराती है,
संघर्ष झेलकर भी रोशनी देती है।

– डॉ. सत्यवान सौरभ

इंजीनियरिंग शिक्षा: अब कम होगी कंप्यूटर साइंस की सीटें

पिछले दशक में इंजीनियरिंग की कंप्यूटर साइंस, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस, डेटा साइंस, मशीन लर्निंग जैसी टेक्नोलॉजी उन्मुख शाखाएं छात्रों और कॉलेजों, दोनों की पहली पसंद बन गयी थीं। कारण स्पष्ट हैं — उच्च सैलरी, नौकरी के ग्लोबल अवसर, इन्फार्मेशन टेक्नोलॉजी उद्योग की होड़ और डिजिटल इंडिया की महत्वाकांक्षाएं। इस सफलता की चमक ने यह सोच दी कि जितना हो सके सीएसई में सीटें बढ़ाओ। तेलंगाना हाई कोर्ट के ताज़ा फैसले ने एक महत्वपूर्ण सवाल उठाया है-कितनी बढ़ी हुई सीएसई सीटें अभी मांग के अनुरूप हैं? क्या यह वृद्धि स्थिर है या सिर्फ़ इरादा-मात्र है? अगर यह मांग कम हो गयी तो क्या भविष्य में बेरोज़गारी की लौ में झुलसेंगे छात्र?

राजेश जैन

हाल ही में तेलंगाना हाई कोर्ट ने राज्य सरकार के उस फैसले को सही ठहराया जिसमें कहा गया कि कंप्यूटर साइंस (सीएसई) की सीटें अब और नहीं बढ़ाई जा सकतीं। जिन कॉलेजों ने मनमानी करते हुए हजारों सीटें जोड़ ली थीं, उनकी संख्या घटाई जाएगी। कोर्ट का तर्क साफ था—मांग और आपूर्ति का संतुलन बिगड़ना खतरनाक है। तेलंगाना के इस आदेश ने न सिर्फ वहां के प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेजों को झटका दिया, बल्कि पड़ोसी राज्यों के लिए भी चेतावनी की घंटी बजा दी। खासकर कर्नाटक ने तो तुरंत संकेत दे दिए हैं कि वे भी इसी दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।

क्यों बढ़ी कंप्यूटर साइंस की सीटें?

पिछले कुछ वर्षों में आईटी सेक्टर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा साइंस और मशीन लर्निंग की तेज़ी से बढ़ती मांग ने छात्रों और कॉलेजों दोनों को आकर्षित किया। यहां प्लेसमेंट पैकेज और नौकरी के मौके ज़्यादा दिख रहे थे। इसलिए सीएसई छात्रों की पहली पसंद बन गई। कॉलेजों ने इसे सुनहरा मौका समझा और एआईसीटी (ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन) से अप्रूवल लेकर बड़ी संख्या में सीटें बढ़ानी शुरू कर दीं। कुछ कॉलेजों ने तो हद ही कर दी। जहां पहले 200–300 सीटें थीं, वहां अचानक 1500–2000 सीएसई सीटें कर दी गईं।

एआईसीटी का रोल और विवाद

एआईसीटी का नियम है कि कोई भी कॉलेज बिना उसकी मंजूरी के सीट नहीं बढ़ा सकता। लेकिन हाल के वर्षों में संस्था ने काफ़ी लचीला रवैया अपनाया।

यदि किसी कॉलेज के पास बिल्डिंग और इंफ्रास्ट्रक्चर है, तो उसे सीटें बढ़ाने की इजाज़त मिल जाती थी। कॉलेज इस नियम का फायदा उठाकर बड़ी संख्या में सीटें सीएसई में ट्रांसफर करने लगे। समस्या यह है कि एआईसीटी की मंजूरी तकनीकी आधार पर थी, जबकि मार्केट की वास्तविक मांग और भविष्य की संभावनाओं का आकलन नहीं हुआ। यही वजह है कि अब राज्य सरकारें और अदालतें हस्तक्षेप कर रही हैं।

भविष्य की चुनौती: मांग बनाम आपूर्ति

सीएसई और एआई की डिमांड अभी ऊंचाई पर है, लेकिन कोई भी मार्केट अनंत नहीं होता। यदि सीटें लगातार बढ़ती रहीं तो कुछ वर्षों बाद बेरोज़गारी का खतरा बढ़ेगा। टेक सेक्टर में छंटनी पहले से देखने को मिल रही है। दूसरी ओर, मैकेनिकल, सिविल, इलेक्ट्रिकल जैसी पारंपरिक शाखाओं में दाख़िला लेने वाले छात्रों की संख्या घट रही है। सरकारों को डर है कि यदि यही ट्रेंड जारी रहा तो भारत के पास पुल बनाने वाले इंजीनियर, स्टील इंडस्ट्री के विशेषज्ञ या इंफ्रास्ट्रक्चर इंजीनियर नहीं बचेंगे।

तेलंगाना से कर्नाटक तक और आगे...

तेलंगाना के फैसले के बाद अब कर्नाटक के उच्च शिक्षा मंत्री ने कहा है कि वे भी सीएसई सीट फ्रीज़ करने का नियम लाने पर विचार कर रहे हैं। इससे बड़े यानी टीयर-1 शहरों में प्राइवेट कॉलेजों का अनियंत्रित विस्तार रुकेगा और भविष्य की बेरोज़गारी कम होगी। यदि कर्नाटक ऐसा करता है, तो महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों पर भी दबाव बनेगा। और एक बार यह सिलसिला शुरू हुआ तो यह पूरे भारत की इंजीनियरिंग शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करेगा।

भारत में सड़क हादसों की महामारी: किसकी जिम्मेदारी?

सड़क पर चलते समय सतर्क रहना और नियमों का पालन करना जीवन बचाने के लिए बेहद जरूरी है। सड़क सुरक्षा का उद्देश्य दुर्घटनाओं को रोकना और सभी यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। यही कारण है कि सड़क पर सुरक्षा के लिए कानून के तहत यातायात नियम निर्धारित किए गए हैं, जिनमें क्रमशः हेलमेट और सीटबेल्ट पहनना, नशे में वाहन न चलाना, निर्धारित गति सीमा (स्पीड लिमिट का पालन) का पालन करना, वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग न करना, पैदल चलने वालों का समुचित ध्यान रखना, ट्रैफिक सिग्नल का पालन करना, वाहन की सही स्थिति जैसे कि ब्रेक, लाइट, टायर आदि की नियमित जांच करना और सुरक्षित रूप से सड़क पार करना भी शामिल है। आज सड़क सुरक्षा इसलिए जरूरी है क्यों कि सड़क दुर्घटनाओं से हर साल लाखों लोग घायल होते हैं या अपनी जान गंवा बैठते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि यह दूसरों की भी सुरक्षा का मामला है, केवल हमारी नहीं। यह भी एक तथ्य है कि सुरक्षित यात्रा से मानसिक शांति और समय की बचत होती है। वास्तव में सड़क सुरक्षा के लिए यह जरूरी है कि हम अपने बच्चों और युवाओं को स्कूल से ही सड़क नियमों की शिक्षा प्रदान करें तथा उनमें हेलमेट और सीट बेल्ट पहनने की आदत का निर्माण करें। सोशल मीडिया व स्थानीय अभियानों के जरिए जागरूकता फैलाने की आवश्यकता आज महत्ती हो गई है। पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही में मध्य प्रदेश के इंदौर में एयरपोर्ट रोड स्थित शिक्षक नगर में एक तेज रफ्तार ट्रक ने 10 से 15 लोगों को कुचल दिया। इस सड़क हादसे में दो लोगों की मौत हो गई और कई घायल हो गए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार ट्रक चालक संभवतः नशे में था और उसने तेज रफ्तार से दोपहिया वाहन चालकों को टक्कर मारी। हादसे के दौरान ट्रक के नीचे फंसी बाइक में आग लग गई और देखते ही देखते ट्रक भी जल उठा। बाइक में फंसे सवार की मौके पर ही जलकर मौत हो गई। ट्रक ने पहले बाइक चालक को टक्कर मारी और उसे काफी दूर तक घसीटता गया। इसके बाद ट्रक ने एक ई-रिक्शा को भी टक्कर मारी। ई-रिक्शा चालक और उसके अंदर सवार कई लोग बुरी तरह घायल हो गए। इसी प्रकार से दिल्ली के धौला कुआं इलाके में बीएमडब्ल्यू की टक्कर से वित्त मंत्रालय के डिप्टी सेक्रेटरी की मौत हो गई। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज ज्यादातर सड़क हादसे लापरवाही के कारण होते हैं। हम अक्सर ट्रैफिक नियमों का पालन नहीं करते और वाहन चलाते वक्त जागरूक नहीं रहते। अक्सर यह देखा जाता है कि जल्दबाजी, तेज़ रफ़्तार, वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग करना व नशा व नींद सड़क हादसे का कारण बनता है। इस संदर्भ में माननीय सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर अब देश भर में व्यावसायिक वाहनों के चालकों के लिए आठ घंटे ही वाहन चलाने को अनिवार्य किए जाने की प्रक्रिया को देश में बढ़ते सड़क हादसों को कम करने की चिंता से जोड़ना एक शुभ संकेत कहा जा सकता है। आज विभिन्न चालक लंबी दूरी की ड्राइविंग करते हैं और इसके कारण उन्हें थकान अनुभव होती है। वे पर्याप्त नींद नहीं ले पाते हैं और हादसे के शिकार हो जाते हैं। इसलिए यह बहुत ही जरूरी है कि कोई भी वाहन चालक पर्याप्त नींद के बाद ही कोई वाहन आदि चलाए। परिवहन कंपनियों को भी यह चाहिए कि वे चालक के काम के घंटों की ओर पर्याप्त ध्यान दें तथा वाहन चालकों पर काम के घंटों को लेकर किसी प्रकार का दवाब नहीं बनाएं। आज कहने को तो भारी वाहनों (हेवी व्हीकल्स) पर लंबी दूरी के लिए दो चालक रखने का नियमों में प्रावधान किया गया है, लेकिन खर्चों में कटौती के लोभ में कई बार ट्रक व दूसरे भारी वाहनों में यह इंतजाम किया ही नहीं जाता, यह बहुत ही दुखद है। चालक के काम के घंटों का पता लगाने के लिए आज जीपीएस जैसी तकनीक व्यावसायिक वाहनों में अनिवार्य करने से यह पता लगाना आसान हो सकता है कि चालक विशेष कितने घंटे तक वाहन चला रहा है। वास्तव में इस संबंध में समूचे सिस्टम से जुड़े ट्रांसपोर्टर्स, सरकारी परिवहन निगमों व वाहन मालिकों को इस दिशा में सामूहिक प्रयास करने होंगे। यातायात नियमों की अनदेखी ठीक नहीं कही जा सकती है और इसके लिए नियम और कानून सख्त होने चाहिए, ताकि सड़क हादसों में कमी लाई जा सके। सड़क हादसों के आंकड़े बहुत ही भयानक हैं। इस क्रम में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की ओर से जारी एक रपट के मुताबिक, देश में प्रतिदिन 474 लोग सड़क हादसे में अपनी जान गंवा देते हैं। वर्ष 2023 में 1.72 लाख लोगों की सड़क हादसे में जान गई है, जो वर्ष 2022 में 1.68 लाख मौतों के मुकाबले कहीं ज्यादा है। आंकड़ों से पता चलता है कि सड़क हादसों की सबसे बड़ी वजह तेज रफ्तार है। वर्ष 2023 में सड़क हादसों में हुई कुल मौतों में से 68 फीसद से ज्यादा तेज गति से वाहन चलाने के कारण हुई हैं। इससे साफ है कि सड़क पर तेज रफ्तार का जुनून कितना भयावह साबित हो रहा है। कितनी बड़ी बात है कि हर घंटे औसतन 55 सड़क दुर्घटनाएँ होती हैं, जिनमें 20 लोगों की मौत होती है। दुर्घटनाओं में शामिल दोपहिया वाहन चालकों का हिस्सा 44.8% था, जबकि पैदल यात्रियों का हिस्सा लगभग 20% था। राज्यवार सड़क हादसों की स्थिति की यदि हम यहां पर बात करें तो तमिलनाडु में, 2024 के पहले नौ महीनों में 251 घातक दुर्घटनाएँ हुईं, जिनमें से 62 पीड़ित 30 वर्ष से कम आयु के थे। यह आंकड़ा 2025 में बढ़कर 57 हो गया, जिससे युवा दुर्घटनाओं में वृद्धि दर्शाता है। एक अंग्रेजी दैनिक के अनुसार दिल्ली में, 2023 में 1,72,890 मौतों में से 44.8% दोपहिया वाहन चालकों की थीं, जो तेज़ रफ़्तार और लापरवाही से जुड़ी दुर्घटनाओं का संकेत देती हैं। हालिया घटनाओं की यदि हम यहां पर बात करें तो कोयंबटूर में, तेज़ रफ़्तार और स्टंटबाज़ी के कारण युवाओं की मौतें बढ़ी हैं। पुलिस ने 'नान युइर कवलन' नामक एक पहल शुरू की है और साप्ताहिक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। पलवल (हरियाणा) में, एक पुलिस कांस्टेबल ने तेज़ रफ़्तार में कार चलाते हुए दो बच्चों को कुचल दिया, जिससे उनकी मौत हो गई। अंत में यही कहूंगा कि हमारे देश में सड़क दुर्घटनाओं में तेज़ रफ़्तार एक प्रमुख कारण है, जो युवा दुर्घटनाओं में वृद्धि का प्रमुख कारण बन रहा है। हालांकि, इस दिशा में सरकार और पुलिस विभागों द्वारा जागरूकता अभियानों और सख्त कानूनों के माध्यम से इस समस्या से निपटने की कोशिश की जा रही है, लेकिन आज कानूनों को सख्ती से लागू करने के साथ-साथ जरूरत है उन लोगों की मानसिकता को बदलने की, जो सड़क पर तेज रफ्तार को अपनी शान समझते हैं। वास्तव में, शासन-प्रशासन को भी यह सुनिश्चित करना होगा कि यातायात नियमों का किसी भी हाल में उल्लंघन न हो। सच तो यह है कि आज के समय में सड़क हादसों पर अंकुश लगाने के लिए बहुस्तरीय प्रयास आवश्यक हैं। इसमें सरकार, प्रशासन, नागरिक, तकनीक और शिक्षा सभी की भूमिका बहुत ही अहम और महत्वपूर्ण है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर

मां करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष धर्मेन्द्र सिंह गोतम ने प्राचीनतम जैन मंदिर नसिया इन्दौर में दर्शन किए

इन्दौर

मां करणी सेना के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष धर्मेन्द्र सिंह गोतम जी का भव्य स्वागत किया गया। छोटी ग्वालटोली, सरवटे, व नसिया क्षेत्र के विभिन्न समाजिक संगठनो व समाजजन ने नये अध्यक्ष गोतम जी का सम्मान व स्वागत किया। इस अवसर पर कृष्णपाल सिंह राठौर, रोहित ठाकुर, गोविन्द सिंह पंवार (बाला) सोनू शर्मा, अजय सिंह पंवार , शानू शर्मा, लखन ठाकुर , यश जी , दीपक ठाकुर , राहुल ठाकुर, जीतू शर्मा, विक्रम सिंह पंवार, निखिल सिंह चौहान उपास्थित थे। वहीं जबरी बाग़ नसिया दिगम्बर जैन समाज के राजेश कुमार जैन (राजू भैया) जैन युवा मित्र मंडल के कपिल जैन , नसिया समाज के मिडिया प्रभारी समाजिक कार्यकर्ता व स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान आदि वरिष्ठजनों ने मां करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र सिंह गोतम जी को प्राचीनतम दिगंबर जैन मंदिर नसिया जी के दर्शन भी कराया और उन्हें सेठ हुकुमचंद जी द्वारा बनाए गए 115 साल पुराने इस मंदिर जी के अतिशय के बारे में भी बताया । इस अवसर पर मां करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष धर्मेन्द्र सिंह गोतम जी ने कहा कि नसिया जी के इस मंदिर में आकर भगवान पार्श्वनाथ जी के दर्शन कर अलौकिक शान्ति व मन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ। सही में यहां बहुत अच्छा लगा है यहां आकर , सर सेठ हुकुमचंद जी के इस प्राचीनतम मंदिर में मन प्रफुल्लित हो गया। यहां जानकारी समाजिक कार्यकर्ता व स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान ने प्रेस विज्ञप्ति में दी है।

ओडिशा में हिमाचल प्रदेश जैसे हालात: कलिंग घाटी में भारी भूस्खलन

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : पूरे देश में कुदरत कहर बरपा रही है। ओडिशा में भी हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड जैसे हालात हैं। कंधमाल ज़िले के कलिंग घाट में आज बड़े पैमाने पर भूस्खलन हुआ है। इस प्राकृतिक आपदा के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग पर सैकड़ों वाहन फंस गए हैं। भूस्खलन के कारण तीन राज्यों (ओडिशा, छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश) में यातायात ठप हो गया है।

गौरतलब है कि कंधमाल, बौध, सुबरनपुर, बलांगीर, बरगढ़, मलकानगिरी, कोरापुट, रायगढ़ और नवरंगपुर के लोग विजयवाड़ा-रांची राजमार्ग संख्या 167 का उपयोग करते हैं। इस सड़क के अवरुद्ध होने से छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश के लोग प्रभावित हुए हैं।

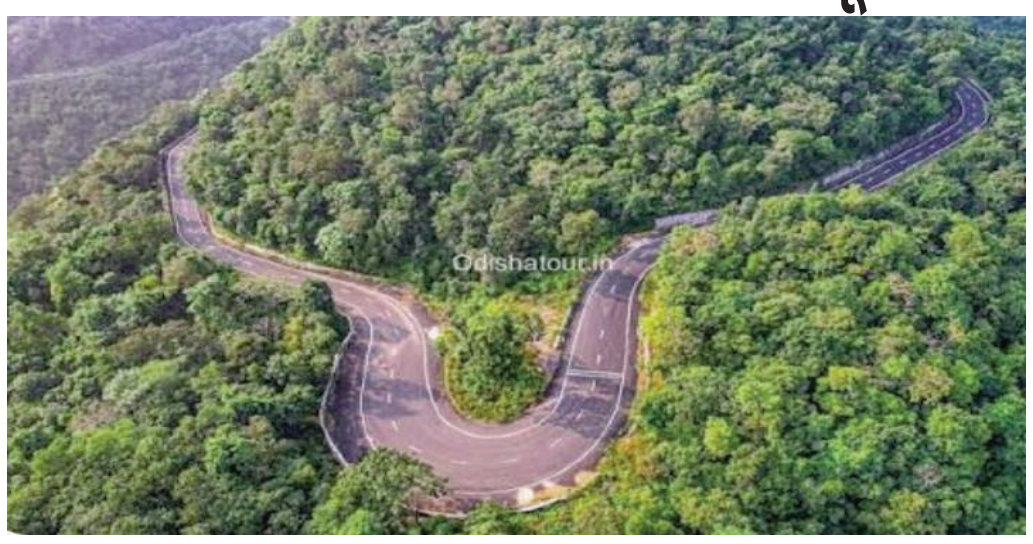

लगातार हो रही बारिश के कारण आज दोपहर लगभग 3 बजे कलिंग घाटी में धनारकोट के पास भूस्खलन हुआ। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण का एक ठेकेदार यहाँ एक महीने से सड़क चौड़ीकरण का काम कर रहा था। इस जगह पर सड़क पर लगभग 20 से 30 मीटर का भूस्खलन देखा गया है। पहाड़ी से गिरे बड़े-बड़े पत्थरों और मिट्टी के ब्लॉकों से सड़क अवरुद्ध हो गई है। परिणामस्वरूप, सड़क के दोनों ओर सैकड़ों बसें, ट्रक और कारें फंसी हुई हैं। यात्री दहशत में हैं। शहर में यातायात बाधित हो गया है। यह कहना मुश्किल है कि सड़क कब खुलेगी। सड़क की हालत इतनी ख़राब है कि यहाँ कचरा इकट्ठा करना भी खतरनाक है और संकरी सड़क मिट्टी और पत्थरों से भरी है। गनीमत रही कि कोई नुकसान नहीं हुआ और सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस और दमकल विभाग मौके पर पहुँच गया।

गौरतलब है कि इस साल उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में भारी बारिश के बाद कई बार भूस्खलन हुआ है। इससे कई लोगों की आजीविका प्रभावित हो रही है।

स्वर्ग द्वार पर चमत्कार! एक जीवित प्राणी लाश में प्रवेश कर गया, और बुढ़िया आग की लपटों से पहले ही जीवित हो गई

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

पुरी/भुबनेश्वर : स्वर्ग द्वार पर आश्चर्य। आज एक ऐसी घटना घटी जिसने सबको चौंका दिया। परिवार एक वृद्ध महिला को दाह संस्कार के लिए स्वर्ग द्वार पर लाया था। अंतिम संस्कार की आवश्यक तैयारियाँ चल रही थीं। इस बीच, रिश्तेदार भी रो रहे थे। अचानक एक चमत्कार हुआ। वृद्ध महिला जीवित पाई गई। सभी आश्चर्यचकित थे। संगवारद्वार के स्वयंसेवकों की मदद से उन्हें तुरंत 108 एम्बुलेंस से जिला मुख्यालय अस्पताल भेजा गया।

जानकारी के अनुसार, गंजाम के पोलसारा इलाके से पी. लक्ष्मी (86) के परिजन उन्हें आज शाम करीब 4 बजे अंतिम संस्कार के लिए एम्बुलेंस से संगवारद्वार लाए थे। संगवारद्वार के कर्मचारियों ने नियमानुसार परिवार से मेडिकल रिपोर्ट मांगी थी। लेकिन परिजन रिपोर्ट नहीं लाए थे। जिसके कारण दाह संस्कार में देरी हुई। उन्हें कागजात लाने के लिए कहा गया। इसमें कुछ देरी हुई। संगवारद्वार के कर्मचारी पी. लक्ष्मी के पास गए। लेकिन उन्होंने पाया कि उनकी सांसें सामान्य थीं। यह जानने के बाद कि वह जीवित हैं, उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाने का निर्णय लिया गया। संगवारद्वार के कर्मचारियों ने 108 एम्बुलेंस को फोन किया। एम्बुलेंस के आने के बाद, परिवार के सदस्यों और संगवारद्वार के कर्मचारियों ने मिलकर पी. लक्ष्मी को जिला मुख्यालय अस्पताल में भर्ती कराया। उनका इलाज चल रहा है। श्मशान घाट में उनकी माँ की जान लौट आई है। परिवार वाले इसे चमत्कार बताते हुए खुश हैं। यह घटना अब चर्चा का विषय बन गई है।

शमशान घाट के एक स्वयंसेवक ब्रजकिशोर साहू ने बताया, हरोज़ाना 80 से 90 लोग दाह संस्कार के लिए आते हैं। हमारे पास तीन दस्तावेज़ होते हैं: मृतक और उसके परिजनों का आधार कार्ड और मृत्यु प्रमाण पत्र। जब पी. लक्ष्मी आईं, तो हमने ज़रूरी दस्तावेज़ मांगे। लेकिन उनके पास मृत्यु प्रमाण पत्र नहीं था। फिर स्थानीय सरपंच से संपर्क किया गया। उनसे मृत्यु प्रमाण पत्र मांगा गया। जब एक कर्मचारी उनके पास गया तो देखा कि उनकी साँसें चल रही हैं। हम उन्हें तुरंत एम्बुलेंस से ज़िला मुख्यालय अस्पताल ले गए। उनके परिवार के सदस्य भी यहीं हैं, ब्रजकिशोर ने बताया।

सरकार ने अमृतसर में धान की खरीद की शुरुआत की, किसानों के लिए निर्बाध और कुशल प्रक्रिया सुनिश्चित करने हेतु व्यापक प्रबंध किए गए – मेयर जतिंदर सिंह मोती भाटिया

अमृतसर, 16 सितंबर (साहिल बेरी)

आज अमृतसर के मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने भगतांवाला अनाज मंडी में सरकार के धान खरीद सीज़न की आधिकारिक शुरुआत की घोषणा की। मेयर ने पुष्टि की कि सभी किसानों के लिए निर्बाध और कुशल प्रक्रिया सुनिश्चित करने हेतु व्यापक प्रबंध किए गए हैं।

मेयर भाटिया ने कहा, "आम आदमी सरकार हमारे किसानों का समर्थन करने के लिए पूरी तरह वचनबद्ध है। हमने कड़ी मेहनत की है ताकि भगतांवाला मंडी पूरी तरह तैयार हो। किसानों को एक परेशानी-रहित खरीद अनुभव दिलाने के लिए सभी आवश्यक प्रबंध किए गए हैं।"

मेयर द्वारा उजागर किए गए प्रमुख प्रबंधों में शामिल हैं—खरीद एजेंसियों द्वारा गंडों और शेलरों को जोड़ने के लिए उपयुक्त इंतज़ाम, जिससे फसल की डिलीवरी और प्रोसेसिंग सुचारू हो सके। मंडी कमेटी ने किसानों की सुविधा और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए साफ पीने का पानी और पर्याप्त रोशनी जैसी ज़रूरी सुविधाओं की व्यवस्था की है।

इसके अलावा किसानों को उनकी फसल का भुगतान न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) ₹2,889 प्रति क्विंटल की दर से किया जाएगा, जिसकी प्रोसेसिंग और क्रेडिटिंग 24 घंटे के भीतर पूरी की जाएगी।

मेयर भाटिया ने कहा, "हमें विश्वास है कि हमारे किसानों को किसी प्रकार की समस्या नहीं होगी। हमारा लक्ष्य है कि उन्हें पूरा सहयोग मिले और उनके बकाया भुगतान शीघ्र प्राप्त हों। यह हमारी सरकार की कृषि समुदाय के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है।"

खरीद अभियान आने वाले हफ्तों तक जारी रहने की उम्मीद है, अधिकारी किसी भी समस्या के समाधान के लिए पूरी प्रक्रिया की नज़दीकी निगरानी करेंगे।

कार्यक्रम कार्यान्वयन और सांख्यिकी विभाग द्वारा अमृतसर में डी.ई.एस., पंजाब के सहयोग से राज्य आय और संबंधित क्षेत्रों पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है

अमृतसर 16 सितंबर (साहिल बेरी)

पंजाब सरकार द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में ग्यारह राज्य/केंद्र शासित प्रदेश — हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, ओडिशा, केरल, नागालैंड, पश्चिम बंगाल, चंडीगढ़, गुजरात, तेलंगाना और पंजाब भाग ले रहे हैं।

यह कार्यशाला कुल राज्य घरेलू उत्पाद और संबंधित क्षेत्रों के मापन पर केंद्रित होगी और विभिन्न राज्यों के अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी निदेशालय की क्षमता निर्माण तथा आर्थिक और नीतिगत निर्माण में इसकी भूमिका की समझ को बढ़ाएगी।

हिंदी दिवस पर एक बौद्धिक निबंध

(व्यंग्य : संजय पराते)

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में अपनाने का निर्णय लिया था। इस दिन की याद में हम पूरे देश में हिंदी दिवस मनाते हैं। हर साल की तरह इस साल भी 14 सितंबर को पूरे देश में हिंदी दिवस उसी तरह की धूमधाम से मनाया गया, जैसे हिंदू दिवाली और होली का त्यौहार मनाते हैं। दिवाली में पटाखे फोड़े जाते हैं और होली में चेहरे बिगाड़े जाते हैं। हिंदी दिवस पर हम भारतीयों ने ये दोनों काम बखूबी किए, और हिंदी में किया। इतने जतन से किया कि अंग्रेजी, चीनी, फ्रेंच जैसी विदेशी भाषा तो क्या, तमिल, कन्नड़, मलयालम, बंगला जैसी भारतीय भाषाओं को भी अपने होने पर शर्म लगने लगी। इससे हिंदी की महत्ता स्थापित हुई।

वैसे इतनी झंझट पालने की भी जरूरत नहीं पड़ती, यदि हमारी संविधान सभा थोड़ा अक्ल से काम लेती और 1949 में ही हिंदी को राजभाषा के बजाए राष्ट्रभाषा घोषित कर देती। यदि ऐसा हो जाता, तो राष्ट्रमाता के साथ ही हमको राष्ट्रभाषा की लड़ाई न लड़नी पड़ती। हम तो चाहते हैं कि राष्ट्रपिता के स्थान पर सरकार यदि बापू की जगह सांड को बैठा दें, तो राष्ट्रमाता के लिए हमको लड़ाई लड़नी ही नहीं पड़ेगी। भला बताईए, राष्ट्रपिता के बाजू में राष्ट्रमाता नहीं, तो और कौन बैठेगी? तब हम पूरी ताकत से, तन-मन-धन से, हिंदी की लड़ाई लड़ सकेंगे, निज भाषा के सम्मान के लिए न्यौछावर होने का सुख भोग सकेंगे। आजादी के बाद कांग्रेस-गांधी-नेहरू ने जिसे न होने देने की जो साजिश रची थी, अमृतकाल में उस साजिश को नाकाम करके हिंदी को सभी भाषाओं का सिरमौर बनाने का दिन देखना शायद हमारे ही किस्मत में नसीब है। इस काम के बाद हम अमृतकाल के जयकारे लगाते हुए 2047 के स्वर्णकाल की ओर तेजी से कुलांचे भर सकते हैं। न सही 2025 और 26, साल 2047 को तो हम हिंदू राष्ट्र दिवस मनाने का सपना पूरा कर सकते हैं।

वैसे भी हमारा नारा है : हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान। इससे हिंदी का हिंदुओं से संबंध स्थापित होता है। जिस देश में हिंदू बहुमत में हो, उस देश में हिंदी नहीं, तो क्या उर्दू या तमिल राष्ट्रभाषा बनेगी? हमारा देश 500 साल तक मुस्लिम आक्रांताओं के हमलों का शिकार रहा है। मुस्लिमों ने हिंदुओं पर हमला किया और उर्दू ने हिंदी पर। महाषड़यंत्र तो यह था कि न हिंदू बचे, न हिन्दी जीवित रहे। लेकिन यह सनातन की ताकत थी कि हिन्दू बचे और अपार बहुमत में है। हमें इसका गर्व है। हम यह कहने की स्थिति में है कि गर्व से कहो, हम हिंदू हैं। लेकिन ऐसा ही गर्व हम हिंदी के लिए नहीं कर सकते। हिंदी मुस्लिम आक्रांताओं की मार से कराह रही है। 10 शब्दों का एक हिंदी वाक्य बोलो, तो उर्दू के चार शब्द ठूंसे चले आते हैं। पिछले ही दिनों हमारे हिंदू हृदय सम्राट योगीजी ने विधानसभा में उर्दू के खिलाफ हिंदी में बयान दिया था। मियां तो मियां, भाई लोगों ने भी गिन-गिनकर बता दिया कि उनके बयान में उर्दू के कितने शब्द थे। दूसरे दिन योगीजी पानी-पानी थे, उनको कहीं जल का सहारा भी नहीं मिला। यह हमारे सम्राट की छीछालेदारी नहीं, हिंदी की दुर्दशा का प्रमाण है -- सकल दुर्दशा का। हमारे सम्राट यदि बादशाह होते, तो ऐसी छीछालेदारी नहीं होती।

इसलिए यदि 2047 में हिंदू राष्ट्र दिवस मनाना है, तो हिंदी को मुस्लिम आक्रांताओं की उर्दू जुबान से मुक्त करना होगा, जो हिंदी में भरमार ठूंसे पड़े हैं और रोज 500 साल की गुलामी की याद दिलाते हैं। वैसे तो हिंदी में अंग्रेजी के भी शब्द हैं, लेकिन हमारा कभी अंग्रेजों से बैर रहा नहीं, सो अंग्रेजी से भी नहीं है। अब बताईए, रेल जैसे दो अक्षरों के छोटे और सहज जुबानी शब्द को छोड़कर कोई उसे लौह पथगामिनी क्यों कहेगा? क्या हमारी मति मारी गई थी, जो अंग्रेजों से टकराते? आज भी हम क्या खाकर अंग्रेजी से टकराएंगे? इन अंग्रेजों का बहुत-बहुत धन्यवाद कि उन्होंने हमें मुस्लिम आक्रांताओं से मुक्त करवाया। हम तो चाहते थे कि उनके इस उपकार के बदले पूरी जिंदगी, सकल धरा के रहते, उनकी सेवा करें। लेकिन केवल चाहने से क्या होता है? राम ने कभी चाहा था कि सीता माता का हरण हो जाएं? लेकिन हुआ, वह भी रावण के हाथों। हमने कभी चाहा था कि अंग्रेज यहां से चले जाएं, लेकिन उनको जाना पड़ा तो केवल कांग्रेस और कम्युनिस्टों के कारण।

अब इस कसक से भी पीछा छुड़ाने का समय आ गया है। अमृतकाल में हम देश की बागडोर फिर से उन्हें सौंप सकते हैं। एकदम झटके से न सही, धीरे-धीरे ही सही। व्यापार के बहाने ही सही, व्यापार समझौते के बहाने ही सही। नाराज ट्रंप धीरे-धीरे ही सही, फिर खुश हो रहे हैं, दोस्ती के बयान दे रहे हैं। मोदीजी की चली तो वे यहां आयेंगे, जल्दी से जल्दी आयेंगे, अपनी खड़ाऊँ मोदीजी को पहनाकर अमेरिका से ही हिंदुस्तान पर राज करेंगे। हिंदुस्तान पर राज करने का सपना कईयों ने देखा था, ऐसा इतिहास बताता है। लेकिन मौका कुछ को ही मिला। मुगलों को 500 सालों तक राज करने का मौका तो मिला, लेकिन रह गए यहीं के होकर। जहां से आए थे, वहां जाने का नाम तक नहीं लिया। यहां का सामान, माल और दौलत वहां ले जाना ही भूल गए। फिर अंग्रेज आए 200 सालों के लिए। व्यापारी बनकर आए थे, मुनाफा कमाने के लिए यहां राज भी किया। लेकिन उनके खून में व्यापार था, सो यहां का सस्ता माल वहां भरते रहे, वहां का माल यहां लाकर महंगा बेचते रहे। वहां से आए थे, तन-मन-धन से वहीं के रहे। कमीनापन नहीं छोड़ा, सो कांग्रेस और कम्युनिस्टों ने भी उन्हें नहीं छोड़ा। 200 सालों में ही बोरिया-बिस्तर समेटकर जाना पड़ा।

अमृतकाल में हम अब फिर उन्हें बुलाएंगे। कहेंगे कि तुम्हारे खून में व्यापार है और मोदीजी के खून में डंके की चोट पर व्यापार है। दोनों मिलकर खून का इतना व्यापार कर सकते हैं कि व्यापार करते-करते ही दोनों खूनी व्यापारी बन जाएं। भारत खूनाखून हो सकता है। भारत जितना खूनाखून होगा, कॉरपोरेट व्यापार उतना ही चमकेगा।

तब नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने कहा था : तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हे आजादी दूंगा। आज मोदीजी की पुकार है : तुम मुझे व्यापार दो, मैं तुम्हे खूनाखून भारत दूंगा। भारत जितना खूनाखून होगा, हिंदी भी उतनी ही मजबूत बनेगी। आज हिंदी व्यापार की भाषा नहीं है, इसलिए हिंदी कमजोर है। हिंदी को व्यापार की भाषा बनाओ, देखो हिन्दी कितनी जल्दी और कैसी तरक्की करती है। आसमान में कुलांचे भरते हुए न मिले, तो कहना!

इसकी शुरुआत हो चुकी है। हिंदी न सही, हिंदी दिवस को तो हमने व्यापार बना ही लिया है। इस दिन के लिए बड़े-बड़े सरकारी फंड आबंटित हो रहे हैं, उन्हें ठिकाने लगाने के लिए बड़े-बड़े समारोह हो रहे हैं। दूसरी भाषाओं को गरियाया जा रहा है। कोई आक्रांताओं की भाषा है, कोई अनार्यद्रविडों की। हिंदी में हिंदू होने का गर्वभाव भरा जा रहा है। हिंदू होने के गर्वभाव से भरे हिंदू हिंदी की जय पताका लिए हिंदी में सांस्कृतिक जागरण कर रहे हैं। चारों ओर राष्ट्रवाद का माहौल है। प्रधानमंत्री 50 करोड़ की गर्लफ्रेंड को खोज रहे हैं, तो किसी से और कुछ नहीं हुआ, तो अपनी मां-बहन का ही छिद्रान्वेषण कर इस सांस्कृतिक यज्ञ में स्वाहा कर रहा है। अहा, क्या माहौल है!! तुलसी और कबीर के साथ रहीम और रसखान, राही मासूम रज़ा, शानी और शकील बदायूंनी से लेकर अब्दुल बिस्मिल्लाह, इकबाल और टैगोर तक -- सभी सड़कों पर खड़े होकर इस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के नजारे को भौंचक होकर देख रहे हैं। आज उन्हें हिंदुत्व की ताकत समझ में आ रही होगी कि गंगा-जमुनी तहजीब पर वह कितनी भारी है।

हिंदी की असली ताकत हिंदुत्व ही है। हिंदुत्व है, तो हिंदी है। यह बात मायने नहीं रखती कि आजादी के बाद से आज तक जितने पैसे हमने हिन्दी दिवस के नाम पर उड़ाए हैं, उससे तो हर एक भारतीय को साक्षर किया जा सकता था, निरक्षरता का अभिशाप भारत माता के माथे से मिटाया जा सकता था। स्कूल जाने की उम्र वाले हर बच्चे को पहली कक्षा में बैठाया जा सकता था। यह अकादमिक और हिसाबी गणित है, व्यावहारिक नहीं। निरक्षरता मिटाने से, सबको पढ़ने-लिखने का मौका देने से, क्या हिंदुत्व का भला हो सकता है? जितनी निरक्षरता रहेगी, शिक्षा से वंचित लोग रहेंगे, हिंदुत्व का उतना ही भला होगा। तभी हिंदुत्व की कांवड़ ढोने वाले लोगों का जमावड़ा मिलेगा। शिक्षा और साक्षरता लोगों को सनातन से दूर करते हैं। यह हिंदुत्व के लिए घातक है।

हम सभी लोगों को प्रण लेना चाहिए कि हमें शिक्षा मिले या न मिले, बेरोजगारी दूर हो या न हो, महंगाई कम हो या न हो, हिंदुत्व का झंडा उठाए रखेंगे। हिंदुत्व ही नहीं बचेगा, तो हिंदू होने का क्या मतलब और क्या मतलब हिंदी-हिंदी करने का। यह तो सियार जैसे 'हुआँ-हुआँ' करना हुआ। इसलिए हिंदी दिवस पर हमें प्रण करना चाहिए कि हिंदी को शुद्ध हिंदुओं की भाषा बनायेंगे, गैर-विधर्मियों पर इसे बोलने को प्रतिबंध लगाएंगे, सहधर्मियों को यदि हिंदी नहीं आती, तो उसे ठोककर सिखाएंगे, केवल थोपने से काम नहीं चलेगा। ठीक वैसे ही, जैसे हर मस्जिद के नीचे मंदिर खोजने का अभियान चल रहा है, मौलवी बनाने वाली उर्दू को खोज-खोजकर हिंदी से बाहर करेंगे और उसे पाकिस्तान का रास्ता दिखाएंगे। पाकिस्तान से आए सभी हिंदुओं को अपने यहां बसाएंगे और उनकी उर्दू जुबान को काट-तराशकर हिंदी करेंगे। अपने इस छोटे-से जीवन में हिंदुत्व के लिए इतना भी नहीं कर पाए, तो हमारी देशभक्ति को लानत है।

हिंदी की इतनी हिंदी करने के बाद भी इस निबंध में कम-से-कम 125 लफ्ज़ उर्दू के हैं, उसके लिए मैं अपने आपको लानत भेजता हूं। अंग्रेजी के कुछ वर्ड्स भी आए होंगे, लेकिन वह चलेगा। आजकल ट्रंप-मोदी भाई-भाई का जमाना जो है। वैसे भी अंग्रेज और अमेरिकी शासकों को हमने अपना दुश्मन कभी नहीं माना था, भले ही वे हमसे दुश्मनों सरीखा बर्ताव करते रहे हो।

(व्यंग्यकार अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।

मुख्य न्यायाधीश एवं मुख्यमंत्री के हाथों खूंटी, चांडिल, चाईबासा में बार भवनों का शिलान्यास संपन्न

झारखंड अधिवक्ताओं को पेंशन देने वाला देश का प्रथम राज्य : हेमंत सोरेन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची, उच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान सह अन्य न्यायालयों के न्यायाधीश गण एवं मुख्यमंत्री झारखंड हेमंत सोरेन की गरिमामयी उपस्थिति मे मंगलवार खूंटी में आयोजित एक कार्यक्रम में खूंटी, चाईबासा एवं चांडिल के प्रस्तावित विधिज्ञ परिषद भवन (Bar Council Building) का शिलान्यास संपन्न हुआ। चाईबासा एवं चांडिल में बनने वाले बार भवन का ऑनलाइन शिलान्यास किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि

इस न्याय प्रक्रिया को चलाने के कई पायदान हैं, कई लोग कार्य करते हैं आज उसी कड़ी में खूंटी, चाईबासा एवं चांडिल में बार भवन का शिलान्यास संपन्न हुआ है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की योजना है कि झारखंड के सभी जिलों में एक सुंदर, स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित बार भवन का निर्माण कराया जाय । आने वाले तीन वर्ष के अंदर सभी जिलों में बार भवन बनकर तैयार लक्ष्य के साथ कार्य योजना को मूर्त रूप देने की दिशा में तेजी से कार्य किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सिर्फ न्यायालय नहीं बल्कि एक ऐसा मंदिर है जहां कि बिना किसी भेदभाव के सभी लोगों को न्याय प्रदान किया जाता है। यह स्वतंत्र रूप से अपने कार्यों को अंजाम देते हुए हमारी संवैधानिक व्यवस्था को और मजबूत बनाती है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि न्यायिक व्यवस्था में बेंच एवं बार अभिन्न अंग के रूप में कार्य करते हैं लोगों को मौलिक अधिकारों की रक्षा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार न्यायिक आधारभूत संरचना के सुदृढ़ीकरण हेतु निरंतर कार्य कर रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड देश में पहला राज्य है जहां अधिवक्ताओं को पेंशन देने का कार्य हमारी सरकार कर रही है तथा अधिवक्ताओं के स्वास्थ्य बीमा और स्टाइपेंड की व्यवस्था भी कर रही है। उन्होंने कहा कि जिला न्यायालयों में व्यक्तिगत रूप से कई बार आने जाने का मौका मुझे भी मिला है। हमारी सरकार की सोच है कि न्यायालय परिसर की समस्याओं का समाधान तुरंत होना चाहिए। सरकार इसके लिए कटिबद्ध है।आने वाले समय में स्वतंत्र रूप से न्याय व्यवस्था अपने कार्यों में आगे बढ़े इस निमित्त राज्य सरकार पूर्ण सहयोग करने को सदैव तत्पर है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आज भगवान बिरसा मुंडा जी की पवित्र धरती से खूंटी, चाइबासा एवं चांडिल में बार भवन के निर्माण हेतु किया जा रहा शिलान्यास कार्य न्यायिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने में मील का पत्थर साबित होगा।

इस अवसर पर सांसद कालीचरण मुंडा, विधायक राम सूर्या मुंडा, विधायक सुदीप गुड़िया, महाधिवक्ता राजीव रंजन, न्यायिक एवं प्रशासनिक पदाधिकारीगण, गणमान्य अतिथिगण सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

कारवाई करने गये चतरा सीओ के दोनों गार्ड पर बालू माफिया ने हमला बोल दिया

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, हंटरगंज प्रखंड में बालू माफियाओं का मनोबल इस कदर बढ़ गया है कि अंचल अधिकारी (सीओ) के आदेश पर कार्रवाई करने गए गार्ड तक पर जानलेवा हमला करने से नहीं चूके। मंगलवार को नावाडीह पंचायत के खूंटी केवाल गांव के पास इमलियाटांड़ बाजार में अवैध बालू लदा ट्रैक्टर पकड़ने गई टीम पर ट्रैक्टर मालिक ने हमला बोल दिया । घटना में अंचलाधिकारी के दोनों चौकीदार गंभीर रूप से घायल हो गए।एक के दोनों पैर मे ट्रेक्टर का गुजर चुका है ।

हंटरगंज अंचल अधिकारी को सूचना मिली कि नरेश यादव का ट्रैक्टर अवैध बालू लादकर इमलियाटांड़ बाजार होते हुए जा रहा है। इसकी पुष्टि के लिए सीओ अपने गार्डों के साथ मौके पर पहुंचे। जैसे ही ट्रैक्टर दिखाई दिया, सीओ ने अपने गार्डों को रोकने का आदेश दिया।

चौकीदार अखिलेश गंझू और जोगेंद्र कुमार ने ट्रैक्टर को रोका और उसे जप्त कर थाना लाने की प्रक्रिया शुरू की। सूत्रों के अनुसार, चालक को हटाकर खुद गाड़ी मालिक अनुज यादव ने ट्रैक्टर चला लिया। दोनों चौकीदारों को वह ट्रैक्टर पर बैठाकर थाना लाने लगा।

इसी दौरान निमियाटांड़ बाजार के पास उसने जानबूझकर ट्रॉली का हाइड्रोलिक उठाकर बालू गिराना शुरू कर दिया। उसी क्रम में ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर पलट गयी। दुर्घटना में चौकीदार योगेंद्र कुमार ट्रैक्टर ट्रॉली के नीचे दब गया और उसके दोनों पैर बुरी तरह टूट गए, जबकि अखिलेश गंजू भी गंभीर रूप से घायल हो गया।

झारखंड के वासेपूर में शाहबाज के घर एनआईए एवं एटीएस का रेड

मामला टेरर फंडिंग , भारी मात्रा में धनराशि होने की अंदेशा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, धनबाद के वासेपुर में मंगलवार को एनआईए की बड़ी कार्रवाई हुई. सूचना के अनुसार वासेपुर के शाहबाज अंसारी के घर में एनआईए और एटीएस की टीम ने छापेमारी की है. धनबाद बैंक मोड की पुलिस भी इसमें सहयोग कर रही है. बताया जाता है कि टीम आज सुबह शाहबाज अंसारी के घर पहुंची और जांच शुरू कर दी. लोकल पुलिस को बाहर तैनात किया गया है, जबकि एनआईए की टीम और एटीएस घर के भीतर जांच में जुटी हुई है.

सूत्र बताते हैं कि शाहबाज अंसारी के घर से भारी मात्रा में नगदी राशि मिली है. हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है. प्रत्यक्षदर्शी बताते हैं कि अधिकारी कैश काउंटिंग मशीन लेकर घर के अंदर गए है. लखनऊ की पुलिस टीम भी जांच में शामिल है. संभावना जताई जा रही है कि मामला टेरर फंडिंग से जुड़ा हो सकता है. अधिकारी इस मामले में कुछ भी बताने से इनकार कर रहे है.झारखंड में यह चर्चा का विषय है ।

भिवाड़ी-धारूहेड़ा सीमा पर तनाव चरम पर: मिट्टी का रैंप हटाने को लेकर भिड़े दोनों राज्यों के लोग, पुलिस ने संभाला मोर्चा

राजस्थान-हरियाणा सीमा पर स्थित भिवाड़ी-धारूहेड़ा बॉर्डर पर विवाद ने एक बार फिर उग्र रूप धारण कर लिया। नगीना गार्डन के सामने नेशनल हाईवे-919 पर जाने वाले महत्वपूर्ण रास्ते को लेकर सोमवार शाम 5 बजे के करीब दोनों पक्षों के लोग आमने-सामने हो गए। हरियाणा प्रशासन द्वारा रविवार दोपहर बाद बनाए गए मिट्टी के रैंप को भिवाड़ी के लोगों ने जेसीबी से हटा दिया, जिसके जवाब में हरियाणा पक्ष ने डंपर और जेसीबी बुलाकर रास्ता दोबारा अवरुद्ध कर दिया। स्थिति इतनी तनावपूर्ण हो गई कि भिवाड़ी और हरियाणा पुलिस को मौके पर पहुंचना पड़ा। दरअसल, यह विवाद लंबे समय से चल रहा है, जहां नेशनल हाईवे-919 पर भिवाड़ी से धारूहेड़ा की ओर जाने वाला शॉर्टकट रास्ता केंद्र में है। रविवार को हरियाणा की ओर से मिट्टी डालकर रैंप बना दिया गया था, जिससे भिवाड़ी के वाहन चालकों को करीब 5 किलोमीटर का अतिरिक्त फेरा लगाकर भिवाड़ी मोड़ होते हुए हाईवे पर पहुंचना पड़ रहा है। इससे स्थानीय व्यापारियों और निवासियों में असंतोष बढ़ गया। सोमवार शाम करीब 5 बजे भिवाड़ी के लोग जेसीबी मशीन लेकर नगीना गार्डन के पास पहुंचे और हरियाणा पक्ष द्वारा लगाए गए मिट्टी के ढेर को साफ कर रास्ता खोल दिया। इस पर हरियाणा के लोग भी भारी संख्या में इकट्ठा हो गए। दोनों पक्षों के लोग नारेबाजी करने लगे और मामला हाथापाई तक पहुंच गया। तनाव बढ़ते देख स्थानीय निवासी अजीत पटेल मिट्टी के रैंप पर बैठ गए और दोबारा डाली जा रही मिट्टी को गिरने से रोकने की कोशिश की। लेकिन हरियाणा पक्ष नहीं माना। उन्होंने एक मलबे से भरा डंपर बुलाया और सड़क के बीच में डाल दिया। इसके बाद एक और जेसीबी बुलाई गई, जिससे करीब 6 फीट ऊंचा मिट्टी का (रैंप) बना दिया गया। नतीजा यह हुआ कि नगीना गार्डन के सामने हाईवे पर जाने वाला रास्ता पूरी तरह बंद हो गया। मौके पर भिवाड़ी पुलिस और हरियाणा पुलिस ने तुरंत पहुंचकर दोनों पक्षों को शांत किया। हालांकि, राजस्थान प्रशासन की ओर से कोई वरिष्ठ अधिकारी मौके पर नजर नहीं आया, जिससे स्थानीय लोगों में नाराजगी है। लोग हरियाणा और राजस्थान के नेताओं को भी फोन पर सूचित करते दिखे। धारूहेड़ा प्रशासन द्वारा लगातार रैंप बनाने की कोशिशों से स्थिति तनावपूर्ण बनी हुई है, लेकिन स्थायी समाधान की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा रहा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023